

'अपना राब कहिया लीक होखत?' ओ गिलासामे पुछलकनि।

'से किएक?'

'रेकलमे हमरा बड्ड भेलक से भूल लागि जाइत अछि।

'तब कऽ ओ भेलक छऽ लख्खो त ओ कइलथिन।

'से ते मधुमो गुमतीए लग पाबि जाइत अछि। हमरा पाइ कतौ रहैत अछि।
अहाँ कतौ देत भी पाइ? कए ता गिलासी त अपना रांगमे जुनल अनेए। खुन
स्पाइल रहेए अछि त ओषमे पाइ रखने रहेए। कीनि कीनि कऽ थिनिवा
बदल कि बिरहुट खइल रहैत अछि। हमरा बड्ड मत होइत रहैत अछि बाबू
ओ।' 'बेलक ई बात सुनि कऽ वह इन्फेक्ट भेलनि हुनका। गुड। ओ किछु
कहावात कहि।

'बाबू जी, अपना राब राब दिन एहिना गरीब रहब?' बेल अनाकीकहि
पुछलकनि। हुनकर आवाज दुलारी।

'नैनो। सब दिन कमाइ एहिना गरीब रहो?' ओ बुझओलथिन।

'कहिया छनिहुन?' ओ पुछलकनि।

'हमसे लोकसे भए दिना गरीब नही रहब। हमरो तबखत से फितरा ओ
बुझओलथिन।

'अपना तबखत से कहिया फिरत?' ओ पुछलकनि।

'फिरमे सल्लास दिनु देखाइक नै। ओ कभी खोइत कोइर थिर।

'कोन चुन मोय ते अहाँ?' ओ पुछलकनि।

'हमर काम जइसे चलैत।' ओ शान्त स्वरे कहलथिन।

'को कतने सफल?' ओ पूर पुछलकनि।

'कहने सफल त पूराक दिन जीति जाइत सक ते सुख दिना परत सक।' ओ
कहलथिन।

'कहिया?' समान्य गुमलकनि।

'जल्दीए। कहलथिन।

'तयो कहिया?' समान्य ओ फिचक उतरती सलोप भटि भेलक।

'जहिया तौ खुन भीक जसो भटि लिखि कऽ पैघ भइ जयबहा।' 'हम

'जसो तऽ कऽ कऽ जयबा ओ बुझओलथिन। समहि राग राम भरिक लोक
राबमे मेल मऽ जइतक कहने।

उचितवक्ता

गंगेश गुंजन

उचितवक्ता

[मंथिली कथा-संग्रह]

डा० गंगेश मुंजुन

●
क्रान्तिपीठ प्रकाशन

एच० आर० डी० एच० प्लेट-37
लोहिया नगर, पटना-800020.



पारम्परिक आवश्यकताक अनुसार
हमहूँ एतऽ लेखकक नियममे संक्षिप्त
राने परिचय छापऽ चाहैत छलहुँ,

परन्तु लेखक मना कऽ हेतनि । लेखकेक शब्द मे :

"कथा सन्तके" स्वयं बाबाऽ दियौक'आ' पाठक कर्म स
अपने मन्त्र करऽ दियौक । एहि लेल मध्यस्थता की ?
बोकासनि जकराँ महि सुसाइन छैक से ? कथा सभ
अपने बाजबो आ' उपस्थित करओ अरत रहल ।"

—प्रकाशक

- ☐ अवसर : २६ मार्च १९६१ ई०
☒ सर्वाधिकार सुरक्षित : श्रीमती ज्ञान्ति सज्जना
☐ प्रकाशिका : श्रीमती पुनू बाला सिंह
☐ आवरण चित्रण : श्री भुवनेश प्रसाद डोंडियाल
☐ श्रवणारवा : लेखक
☐ मुद्रण : वचासट / का माल
☐ प्रकाशन : सविन्द वचहसरि टाका बाग
☐ प्रकाशन : ज्ञान्तिपीठ प्रकाशन,
 एल०आर०जी०एच०स्ट्रीट ३७
 लोहिया नगर, पटना-२०.
☐ मुद्रक : ए० मार० प्रिंटर्स, डी-१०२
 न्यू सीलमपुर, दिल्ली-२३

UCHITVAKTA : A SHORT STORY COLLECTION IN
 MAITHILI, BY DR. GANESH GUNJAN.

उचितवक्ता

हैं पोथी अपन आद्वैय भैया आ' भोजी, श्री रामेश्वर सा तथा
 श्रीमती अपर्णा देवी के सावर समर्पित !

उचितवक्ता

अथ । पुष्प संख्या

सम्बन्धक सरोकार [संलग्न विधि से]

। कथा

पुष्प पुष्प : १

सङ्गीत : ७

सपना कायम : १५

एकदहम चिन्ता : २०

समुच्चय आ गोवर : ३४

अवसरक लोक : ४४

पुरी सुदर्शक भाव्य : ५५

बाप वेदा : ६१

स्ववारी : ६८

एक टा राष्ट्र सतुनेवनी : ७०

श्याम अंकन एहत क्रियेक उचित : ८३

अपन समाज : ८६

शब्दक सरोकार

॥ एक ॥ मूचना-संसारक विषयव्यापी बिरकोट में आइ जेविय धरतीक एकहु टा कोन बसित नहि अछि। सम्पूर्ण मानव-समाजक ई पराभव छैक जे ओकरा, ओही सब किछु गुनऽ, जगऽ तथा सोचऽ-कहुऽ-करऽ पड़ि रहल छैक जे ओकर प्रयोजनक नहि छैक आहि तँ ओकर सरोकार नहि छैक ।

हमरा इहो बुझावत अछि जे जेतेक रास 'बिचार आ' वर्तन एखन धरि सृजित आ' प्रचलित होइत रहल अछि तथा जे संस्था, संकर वाद संरक्षण आ व्यवस्था पञ्चलिक रूप धरैत अछि से अपना जगती कऽ मात्र एक टा खास नाव जकाँ भऽ जाइत अछि। सबजाना नाव नहि, एक जमिया नाव। ताहि नाव केँ सब, अपनहि दिशा मे अपने बहिष्क जेरे पतवारि सँ, अपनहि दृष्टिकोणें खास कऽ सेवैत अछि। सेवैत आइत अछि। जेना सब वाद-बिचार, ओकरा दृष्टिकोण से प्रायः अत्रासंगिक सर्वज्ञ छैक। जखन कि एहन सब टा बिचार-लेखका हमरा एकरा एक भागु मत्ताहूँ जकाँ बुझावत अछि।

मोना, कालक अनावि अनन्त प्रवाह मे, एक संन नाव जेवैत अनेक बिचारक नाविक एहि तरहक समाने उद्देश्यक छवि मे आभास भऽ सकैत अछि, परन्तु ते प्रायः भ्रम भिन्न। कारण जे ओ सम, अपना-अपना लक्ष्य मे पुचकु-पुचकु छवि। जन मे तँ प्रथम सठक स्वाभाविक लक्ष्य अछि जे एतेक चुप तँ आइ धरि एतेक तरहक बिचारधारा, एतेक-एतेक वर्ज्यक उद्भावना तथा प्रचारक संगहि सङ्ग समय-समय पर समाज द्वारा ओकरा स्वीकार अस्वीकार करवाक जखन-मुखल कऽ ई कथा जमान्दोसन किएक होइत रहैत छैक ?

तँ मूचना-संसारक एहि महा'बिरकोट मे हमरा एहि लोक-साध्य अनुभव होइत अछि जे सम्प्रति साधारण मानव समुदाय स्वयं केँ माथ हेरावल-भुविआपल तथा नाना प्रकारे अपना केँ ठकावल अनुभव कऽ रहल अछि। कए ठाम तँ सम्प्रान्त बर्गीय सत्ता तँ परिवर्तित एहि समाजक महिम्न मे की अप्रासंगिक भऽ गेल अछि। बुन प्रचलित कुल शासन-पद्धति साम्राज्य-वाद, पूँजीवाद, साम्यवाद, लोकतंत्रीय समाजवाद आ नव प्रगतिवाद आदि-आदि

(४)

राज मे ओकर अस्तित्व मात्र गमती वर्धातु आँकड़ाक रूप मे रहि गेल छैक तथा जाव जपन एहि पराभव केँ सही-सही अनुभव कऽ सकबाक भाषा आ' लोक-विवेक साधारण जन केँ प्राप्त भऽ गेल छैक तँ ओकर अंतर मे एक टा निर्णायक उपक्रमक प्रक्रिया जानू भऽ चुकल छैक। ओ स्तब्ध रहि, चुप अछि एखन। समय १२ से, स्वाभाविक परिणाम जकाँ सभक सोझाँ जयजे करतैक निर्णायक उपक्रम, ते हमर-लेखकक जगम विश्वास तथा बूझ जाबा। बिचार-बुद्धि, सत्ता-संघर्ष, सुष्ठु राजनीतिक स्वार्थ-संग्राम आ सत्त्वन्वय भाषल संपूर्ण मानवीय मूल्य पर 'अनुचित विरति के', अपन गत तीत-वैरित निष्ठान-वर्षकेँ देखैत, हम स्वीकार करैत छी जे हमर जेवन स्वप्नः मुकाब अछि।

॥ २ ॥ लेखक अपन समाज साथ, समय-समय एवं समकालीन बिचाराभिध्वस्त-माध्यमक निर्मीक प्रयोजन, तँ 'उचितवक्ता' होइत अछि एही तर्क सँ कुछ सेहो स्वयं उचितवक्ता होइत अछि जखन कि आजुक समाज मे घोर अभाव। एहि पोषीक नाम तँ, 'उचितवक्ता'—कथा-संग्रह धरैत छी।

बादहुँ टा उचित वक्ता छवि एहि संग्रह मे। पड़ल कथा-संग्रह अन्हार इजोत ६४ ई० मे छपल रहल। दोसर संग्रह मैमिली अकादमी पटनाक प्रकाशन-प्रवृत्ति-एनगणधीन अछि, जाव तँ ६ वर्ष सँ प्रायः। तेसर संग्रह ई (जखनि प्रकाशित दोसरे संग्रह भिन्न) १९६९ ई० मे। कएक विचारिक एवं व्यावहारिक कारणे, लेखकीय-संवेचना तथा दृष्टि विकासक ध्यान रखैत, एहि संग्रह मे वैचलिक ईश्वरी तँ गठायो ईश्वरी धरि अपन किछु कथा अपने लोकनिक समझ निवेचित करैत छी। एतऽ कोनहुँ प्रकारेँ हमर ई भाष्यता नहि अछि जे ई सब, सभटा हमर प्रतिनिधि कथा-रसदा भिन्न। नहि। हमरा बुझावत अछि जे एक-एक शब्द जे हमर कलम सँ निकललस, हम सभक उत्तरदायी छी तँ ओ सब हमर प्रतिनिधित्व करैत ओहो सत्य, कथा, कविता किवा अन्य विशाक रचना पकरा कदाचित् समय नहियो मानव। तय हमरे। जेना स्वस्थ मुखर सधमक संगहि संग कोनो, एक टा बिकलांग भविकरित सन्तानक जतक सेहो होबऽ पड़ैत छैक कहियो। ओहो कच्चा ओही पिताक। तँ बेह ओकरो जनाधरेह।

॥ ३ ॥ तय कथा सत्य, सत्य तथा लेखकीय आदर्शक पृष्ठभूमि मे कथन गेल लेखकक आत्म संघर्षक कथा-सृष्टि भिन्न, ते कहना मे हमरा कोनो तारतम्य नहि अछि। ई सब टा, एहिना जखन कथा नहि धऽ सैक, प्रवृत्त मानस मे स्वयं प्रहण करबाक एक टा प्रक्रियाक अंतर्गत सृजित भेल अछि। छुत्ते पटना अपका कथानक कोनो छेउ रचना नहि जनैत छैक। ओतना समय,

(आ)

बोध, इतिहास-विवेक, समाजिक सम्पूर्ण परिस्थिति आ' नकरा विषय मे
लेखकक दृष्टि-शैलीक सज्जतात्मक प्रयोग सँ निमित्त होइत छैक । दृष्टि आ'
दृष्टि-शक्तिमा रचनाकार मुख्य धुनी धिकैत आ' प्रयोग-कोशल बोकैत साधना ।
साही अर्थ मे हुमर मत कहैत छैछि जे, जे अतिव महत् कृति होइत से अपन
अतीत आ' वर्तमानक समग्र आदेवे महत् व्यंज्य वेही रहैत अछि ।

एहि कथा पुन मे क्या स्थान नकर करल भेटैत बल्य तँ हुमर कायंकला
अन्यथा कालिक प्रतिक्रिया सावर विरोधार्थ ।

॥आरि॥ जगत सब उपलब्धि केँ हब, घर-परिवारिक आ' धार्मिक खाड़ीक लेखक-
कविक आनीबंद कइ चुनैत छी तमा निरवर्तक स्नेह शुभकामना । तँ हुमका
सोचनिक संवर्द्धि कुलमा आ' आदरपूर्वक स्मरण रहैत छवि-नैय-श्रीती,
सरस्वती जी-मुनू, छोटका मैना-छोटकी भीखी, हुमर करियाँ, हुमर मित्र,
प्रभाव गुमार भीखरी, योगनाथ सा, रामजी आत्मिक सादेव माकंन्वेध
प्रवासी गुलता जी गुपमा, अखौत-आभी, देवेन्द्र, तरेन्द्र, रत्नविजय, एला,
सुखिना जेकर ओहल सा, मुकुल यादवेन्द्र, चन्द्रेज, आ' मनु विमल, मैनेस,
हुमर बाल सखा भीर भाव सखा मार, विशालरत्न जी भीखी, स्व० ए०
अतिथल, भगवतीचरण आभास्तव, अजय, धूर्त अयोध, भी० रामकुसावत
विह, केदारनाथ कलाधर, मधुकर गंगाधर, हीरानन्द माकरी जी, मुष्मी मेखर
भीखरी जी, ए० रामदयाल पांडेय, डॉ० कुमार विमल, निशान्तकेनु, भगवती
सरण मिश्र अपन रेडियो बुक केसब बाण्डेय जी, नर्मदेश्वर उराध्याय जी...
हिनका लोकनिक आरबीन छविक अमृत सिलसिला अछि ।

तखन भवतः सर्वापरि एकज समाज ! समाज जाहि मे हुमर माँ-पिता सँ सः
कः माझीम गाँधिमर तथा मदर टेरेसा आ' मोलाना जे आगिन धरि छथि ।

ए० आर० प्रिंटर्स प्रबन्धक श्री कुमारकांत भीखरी, श्री विजयचन्द्र सा, श्री सत्येन्द्र
मिश्र, श्री उमेश सा तथा प्रिय भातिज कलाकार चि० आलखु पाण्डेय एवं
श्री भूवनेश प्र० द्विवेदीनाक स्नेह सखि सहेयोकि सँ ई पोथी उपन संभव
भऽ सकल अछि ; तँ सबकेँ हृदय सँ धन्यवाद ।

॥पी०॥ हमरा सब गोटव केँ एकर विशेष हर्ष जे ई पुस्तक चि० जैनु बाबूक जन्म-
दिनक (२६ मार्च) उपलक्ष्य मे प्रकाशित भऽ रहल अछि । □ गुनज

मेखनाथ
मई दिल्ली

युद्धे युद्ध

बारह घंटाक भीतर, ई गैर बेर । ओ होइतमे आदि क' बैसल । माथ पर
विश्वलीक पंखा पुरमी कइत छैक । सूरी उठा क' ओ एक बेर अकण्ठ पाणि सबकेँ
देखलक आ' फेर हाँस छोड़ैत कुलाक कुलाम खोलि लेलक । भीषण गर्मी । आदि नहि
कोला लोका जीवन ? इच्छा भैलक जे कतक पानिसे भरि छाक नहाय । कपारसे छाह
उठल रहैक ।

दू छल ओ सोचमर, कर्मीकाल तक बिना किछु वजनहि चूचवाय पंखा तरये
बैसल रहल । एही विचार-धुन ओकर वदनी खसि पड़लक । फेर जेता चोँकैत सज
उठल । क्यो श्रेष्ठ क' की सोचल ? बाटे-बाट सूजि जायबना शर्मा ।

बेदरा भग मे छाक न' गेलक । ओ बिना देखनहि, ओकरा एक प्यास पानि द'
खाइ गेल कहि क' गेल छोटलक । बेदरा बल गेलक । सोझाँक अचना पर, अनायास
आदि गेलक । पानिक छिटका सबसँ दगापल जवना मे अपन आकृति ओकरा बेसी
होइयाजल लगलक ।

एतल पीसल जीर्णत आइ मो वयँ सँ बेसी भ' रहल छैक । एकटा अलकर
कोटनी, होइतक भोजनक जीवन आ' खाह आ' निश्चित थंडासँ बहुत बेसी घंटा तक
बिना अनिरवत मजुरीक कर्म करैत जीवन । और-ताँस, दिन कुहर बीच सबक पर
कर्मन जीवन । आ' मुस्ताइ गेल कोनी चाहक दोकानमे पाँच मिनट-सात मिनट धरि
रहैत, बाद चुबैत आ' रैर आगो दहि जाइत अलकरआ देलक अंतहीन जीवन ।

ओकरा बुझलैक, जीवनकेँ जतक मन-बिकसिने ओ अनुभव कयने अछि, बहुत
कामे बाँक क' सकल होमाह, मुदा फेर तामसो उठि गेलैक । जवना विषयमे ओकर
अतिवाचितक प्रवृत्ति पराजय पर पहुँचि गेल छैक । बरतुत ओ जीवनकेँ बहुत काम
रुन मे गुलने छैक ।

आगामे पानि दाबि, कदा दयलु तीव्रतासँ हाथ कोछन बेदरा प्रतीक्षा कर'
लकलक मुदा ओ एह बेर चुप रहल । खाली, प्यास उठा क' पाँच-सात घंटा पानि
गोटि गेल । बेदरा भरिसक खीसा क' चल गेलैक । मासिक बँटै छैक । बिन भरि मे
कनेको वाधु अहिना घंटा भरि पंखा तरये बैसि क' जन जाइबादा अवैत छथिन । यत
प्यास भरि पानि आ' एक प्याली चाह ।

ओ सोचल किधु खाद तेन मंगलए । जेवने एहन पादक खाग बगल नहि छैक । मुदा जानि नहि कियेक केर बेमराने होर क' एक प्याली बाहु व' जाइ लेल कहलक जा' बाब बाबुराखे प्रतीक्षा कर' लागल बाहुक ।

अइ बेरमे जानि क' सब दिम ओकर माब टबक' मगैत छैक आ' सीसे देह जेना आलससँ टूट' लगैत छैक । ओ एकटा हाकी छोड़लक आ' मूँह पर चूटकी बजो-लक । श्रमलहिने आशि क' सुरंग बसल किधु नयमुक्कक गर्म स्पर्श मुनि-मुनि लामस छटलैक । ओ सब क्षणामे एकबारक पन्ना लए झगड़ा क' रहल छलाह ।

'पहिने हमरा देख' वै ।

'देख' ते, मुदा एकटा पन्ना हमरा वै । ताबत हमहुँ त' देखिबैक ।

'पम्हू, व' वै छियो ।

जानि नहि मापुनियो मपकेँ मोक कियेक हल्का क' ईत छैक ? होइतमे आबी त' हल्ले मचबैत । कबीरको काल त' मागि सँ बैसल सीध' मोक ।

'एँ री, ई त बाहुक भीषण प्रकोप छीक ?'—आलके काटल बबर ।

'कोन इलाकामे री ?'

'पम्हू—देख' वै । अथगहि तभक इलाका ।

तेकर बाब ओ मुक्क पूरा मंभीरखाल पड़' लागल । रातो रात अचानक बाहु का चाली खुल चुड़ आवा और पूरा गाँव दह गया । लपमग डेढ़ मो घर बर्बाद हुए । बेघर लोगों के सेशाव ।

एकाएक जेना रेडियोकेँ मित्रा देन जाइक । ओ ज्ञान केँ एकदमसँ हटा लेलक आ' गोच' लागल । एतनीदा जीवनमे नहि जानि कलेकी साहिक दहायत घर-अंगनाक कलष नाका देखि-मुनि चुकल अछि । बाहि ओहिया अर्बत छैक आ' हमारो मोक एहिना अनाप भ' जाइछ । ई बाहु ओकरहुँ जीवन मे जाविपेसँ लागल छैक ।

बाहुक रंघ जखन तक तक' पसलैक त' ओकर ध्यान हटल । प्यालीक इंदी पकड़ि क' बजोलेक आ' एक घोट पीबि काल मरूक देकुलकेँ देखलक । तब युवक ओकरासँ अवस्थामे कम रहैक । सगहक आकृति पर लखन अनुभवहीन चिन्ता रहैक । देखि क' ओकरा तब कलखसँ सरि गेलैक । मनहि मन जेना मानल—'धिल्लाक लख नहि संघ, घर आंगन केर बनि जाइत छैक, चाली आवगलना होइत छैक रीढ़-बसाक' सहेत जाइक । ओ बाहु पीबैत रहल आ' मनहि मन आगबल होइत रहल, जेना ओ चिन्तित युवक सब ओकर मनोभाव मुनि लेने होइक ।

भ' सकैत अछि, अइ युवकसेत कोय, हु-जड़ बैठ हो जे ताल-बाठ क' एहिने ओ नश्य छल । ओ सोच' लागल ।

20 संमग मुंज

समयक सङ्ग सबटा स्मृति, घटना नहि मिटा सकैत छैक । कतोक एहने स्मृति हाइत छैक जे कहियो नहि छुटैत छैक ।

ओकर मन अनायास व्यतीतजीवी होब' लगलैक । तखन समलैक ओकरा आवा मे खीतक ओ समस्त घटना, व्यक्ति बैसल होइक आ' ओ दुख-मुषक गप्प करैक मुदा मे आवि नैल हो ।

आब त' बर्योक देवाल नहि छैक । जानि नहि कए बपे भेलैक ?

साल पढ़ा मे कनीक देरी रहैक । गामक बातावरणमे बाधने धूमि रहल साल-जालक पंटी आ' बुरफ खर भर' लागल रहैक । बड़क घर पर घूरसँ घूझा उठ' लागल रहैक आ' मगबनीक चिमवार पर, कुलतोरीरा लन मसिली काकी दिवारी लेल चुकल रहलिन आ' भनवाकोठनीमे खुलि पवारैक छोटोमे लागल रहलिन । तखानमे हटि क' एकेरेडिया काल मे बुटा जेना साटिक घर-आंगनमे अपस्थित । हुनू दुधारेमेसँ हुरा छल । दुधारेमेसँ त' ओक-भात मेहो लेल रहैक । घरवास्तक ओन । अर्थात् हटि-घर-द्विधर सालरिवा कालक चारिमे चिलनी पाटिक पूआ, कादोक दही आ' पिनी-मिमाक नखत, तिलकोड़ाक पाकन फड़क पन्तोवा । परखल गेल रहैक मुहणीक मर्जादसँ मधिल साल बर्यक रचना, कवार पर, साहि-वाजिमे लखान ओकराएल केस लेने लोथारीक गुछारीमे बचन आ' भाटनी बर्यक जयन्त । ओ घरवैसाक दायित्वमे चिन्तित, धारिवासे अपने हाँड केँ कसैत, वेद परजक साटिकेँ पीछैत । पीतोवा बाही ? हे, हदमे निय । आ' एकटा पाकन तिलकोड़ाक लाल मुजब क'उ पाव पर ।

लोथारी सब गेल रहलिन, ओलक कलक पान आ' सिक्कटिक कारी-अंगनो फरक मुपारी त' व' । रहि गेल रहल युनू निनु ।

आमामे मयक गोबर आ' साटिमे नीपल-पोवल अंगन आ भिजने साटिक दाना पर, मंडोक खुदा पर टांगल नारसँ छारल कर्षिक कार । धुवमुडा मंभीर बल्लु-जानक व्यवस्था अर, कोठीक स्थान, बखाड़ी-इक केर व्यवस्थाक चिन्तामे भिमल । धान बेसी हेतैक ते बजारी चाही । बजारी त' दाना पर कतहु अवा लेल जेवैक । बावकेँ कहल जायनि जे नानी-नामसँ बएलमाड़ी पर बहुत रख नाम लेला पिब' । केर लव भगपूत बखाड़ी बनत, जैब आ' बड़की टा कोषाया बजारी । अइ बेर बड़ धान होइक ।

ओम्हसँ रहिकावासी ओर पाइत अलखे । आ' जामनक खरें बाज' लगलै, — 'रंनु बीआ, एतेक अन्हार भ' गेलै आ' अही एहन परि प्रेमेमे लागल छियै ? बंहु माँ बिगियलत छवि । जल्दी जलियो ।

हुनू जेना बरें सकरम्भ, लसे लेबरद-मुपादमे मोने ते खलैक कबीरको जे अन्हार भ' गेलैक । माँ जाइ अबल मारबिह ।

पुढे पृष्ठ 03

‘जन्म, भाव और काहि भोरे सभ सेबायव । की ने ?’ जन्म खुप ।

‘बेस रंजु’ । एकर बाद रंजु, रहिकावालीक सङ्ग अपना भंगना चलि जाइत रहल । जयन्त अन्धारमे ठाढ़ जवन छोट-छिन घर-आंगन देखैत रहल । फेर दिखरे एकरे सभर सागस अपना बसत दिख । जाहि नहि ओकरा बाद कतेक खिसियाबिन्हू मी ? यवनि आन दिन कोनो खास नै खिसियाइ छमिन, तइयो आइ कती बेसी अन्धार मे’ नेलेक अछि । भ’ सकैत अछि खिसियाबिन्हू, ‘अन्धार भ’ नेलेक आ’ अहाकि’ जयन्तक बाद नहि फुरल एकर धरि ? अन्धारमे कतेक साँर-बीड़ा बुलैत रहैत छैक ते’ हीन नहि कनिषो ?’

आइ जयन्त चुपचाप सुनि तैत । किछु ने बाबत । नहि त’ फेर साँह सेलाइयो नइ जाय देल जयन्तक मुखा तैयो ओकर पएर पछुक लागलैक ।

साँ आइ चुप रहिन्हू । ओ चुपचाप घेनपी परसँ मामि धारिक’ पएर हाथ तँज’ सागस । फेर छोटाकदमा सीढ़ी पर बैसी क’ खडलक आ’ ओछाओन पर रहि रहल । माँ आइ पहाड़ा सेही छ’ नहि टोकलामिन । जयन्त आधि दुनि मूति रहल आ’ धीरे राति सपनामे अपने छोट-छिन घर-अंगना देखैत रहल—

भोरे निम्न दुरितहि अलि बीहस बीहस गेल जयन्त घर सभ । पढ़ैतहि बाँइ छक भ’ रहि नेलेक । ई की भ’ नेलेक ? चाल कात पानियँ पानि । माटि-कतहु कोनो केहू ने बाँकी । खाली उज्जर-उज्जर पानि । ने एकपटिया, मे ओ माटिक घट-आंगन नइ किछु दहा क’ बस नेलेक ।

जयन्त के’ टक-मूहो मामि नेलेक । फेर किछु मिनटक बाद ओकर पएर रंगूक अंगना दिख तइ’ नयनैक—‘दा क’ बाँह दैक ते’ आइ भोज-भाव किछु नहि हेनैक । घर त’ बाँइ दहा क’ भ’ नेलेक ।

ओहने एकटा बुडिया जाहि एक राति घरमे सुतलिन रंजुके’ बेहो दहा क’ जेने सभ मारिक घर समेत । राता-राती पर काटि क’ खसि पड़ल रहैक पानिने । तेकर बाद, बीच ते कदक वर्ष बीत गेल रहैक बाडियेक पानि जकाँ । जयन्त पैघ भ’ गेल रहल । एकटा मोहमे जियाहू भेल रहैक । एकहि वर्षक बाद फेर ओहिना भयलना बाँइ आबल रहैक आ’ ओकर जूसाक घर खताक’ दहा देने रहैक । खाली ओ दुनु प्राणी बाँचि गेल छल । बाँहिमे घर-घर करैत स्त्री आ’ आमा दइका टा प्रल-आध सुनू, हमरा कसाम जाय पड़त । ओ स्त्रीके’ कहने रहल त’ चौकि गेल रहैक ।

‘कत ?’

‘कालकता । दोसर ठाम गेलहुँ कोनो विशेष लाभ नहि । सुनैत छी भोत’ बड़ जल्दी आ’ नीक मौकरी भेट जाइत छैक ।’ पत्नी मामि तैने रहलिन ।

4 □ गंगेत नृजल

पत्नीके’ एकटा सुन्दर परक मनोरथ छलनि । जाहिमे भयवलीक धिनबार दा, हा’ दूध औरक अलग चूल्हा आ’ जौन बीमेबाक स्थान । चारमे टांगल पुर्ल आवन मौक हो आ’ जाकरी देल गंगला । ओसानी में गाइल बकी ।

जयन्तक परोक्षमे एकाकीपनक भय तैने नहि रहलनि । पाद-कीड़ी जमा भ’ गेले नीक घर आइ क’ गेल, चारि बीघा जमीन कीनि क’ घर वैलि रहल आ’ करल ठाढ़मे कृषिकारक बेती । कतेक रईया होइत छैक । नीकरी त’ मलजने इन्हू । पाद-कीड़ा जमा क’ किछु बेन-गंधार बना ली आ’ गामे घर गृहस्थी कर’ लागी ।

मुदा जयन्त पत्नीक सोचलछेक अनुसार किछु नहि भेलैक । वर्षेहुँ ओ रहि गेल जयन्त । रईया सेहो जमाएल । मुदा माये-माये स्त्रीके’ किछु खास रकमक मनिजावर करवाक बगिरिबन किछु नहि क’ सकल । वर्षेहुँ वर्षमे दस दिन गेल गाम गेल । संजाम-हीन जयन्त स्त्रीके’ भोज-भरोस देलक आ’ मटकम जौलतीमे बाँसक लव पाड़ि-मुदा लवा क’ गाम तँ भूमि आयल ।

‘हे कोनो व्योत क’ क’ ईदबाक दुसी दिमा विधोक । ने त’ एना छाने-छाने घड़ी बदलने किछु फल नहि’ ।

‘नकरे इतिजाममे लागल छी किछु टाका जमा भ’ जाय त’ बूटा कोठजो ठाढ़ क’ गेल इहेक । ऊपर खपड़ो रहैत त’ ने कोनो’—पत्नी संतुष्ट भइ गेलीह, बबियक प्रतीक्षामे । हुनैमे मारि गेल छ माठक बच्चाक तकलीक दुपरा कभ मे’ जाइत—चीक धिर । आव ते जखोन नेकर लागल नीक रहलैक । पक्कामे रहल । ओकरा जकाँ वर्षा मे त’ नहि भिजत ।

जयन्त मजगारि बिना क’ जाइ गेल नैघार । भाव दिने कतेक काकी ? रईया-पीना तयवा ओहि लेनक अछि ते’ माटिक मितेवा पर पजेबाक देवाल-ठाढ़ क’ बिअर । ओकरा मदमे बसल जकाँ जमाइ छरि गेलैक । पत्नीक चिट्ठी अपलदए । भइ घर जयन्तके’ अवश्य निरोल आ’ दीर्घायु बेटा हेनैक । ओकरा जयबाक समय तकन हेनैक जयन्त ओ पक्का घर आइ काँ बूकल ।

ओ कतेको रंग-बिरंगक कल्पनासँ ह्रीतमे बैसल भर’ लागल । अरीर एहनहुँ बजने रहैक, मुदा ओ सोच’ लागल—मनुष्य प्रत्येक ओहल गुलके’ बिसरि जाइत अछि जतहिँ कनीको पैघ गुल छेति जाइत छैक । तेँ पैघसँ-पैघ गुल बिसरल भ’ जाइत छैक, कारण कुलेक अनुष्ठानमे ई संसार पैघ-पैघ मुखसँ बेहो अरल अछि ।

जाहक अंतिम धौट लेत ओ बड़ प्रलन छल आ’ रईया जोड़ि रहल छन । एतेक वर्षक अनवरत परिश्रमक बाद किछु मासमे ओ एकटा घर बना सकत जाहिमे ओ रहत, स्त्री रहलैक आ’ छोटा-मूठा । आबोर जकरा सुतलेमे कोनो बाँइ दहाक’ नहि

पूढे पूढ 5

सं जयन्तक । ओकरा भेलक, एउने पड़ाय गाम, आव जसकर नहि रहय । गावसँ एतेक दूर पन्देसमे...

पाइ देव' साइन्टर पर अथल । सडक पर भीड़ लागल रहैक । सभक आकृति पर विचारावुधत डिजासा । होइतक रेडियोकेँ मेरेमे सब टाइ रहैक आ' सुपचार सुनेत ...अरे ई त' विशेष समाचार बुलेटिन बिर्सेक आकाशवाणीमे... ओ साकाश भ' गेल आ' सुने' लागल । थोटा सभक आकृति पर तामस आ, अभिमानक बेगु स्वाट रहैक । सब कसो जेना साँसकेँ जालि क' टाइ रह्य । जयन्त कनीक आओर आगा' बडि क' पुछारी कमलकैक । बीचहिमे एकटा सज्जन बड़ निपिठ सुन गारि देलखिन । जयन्त केँ आगवा' देश पर आकस्मिक आक्रमणक ज्ञान भेलक । ओकरा कानमे प्राय. सामूहिक रूपेँ पत्रमे जाइत सारि 'इस बार सर्वाधिक कर हो स्थान को' पड़ोसी और मित्र देश को नाटक करके छुड़ा भीकता है पीठ में...' कथना: मद्रिध होइत गेलैक । जयन्त स्वयं बड़ कोथित भऽ गेल ।

मनुष्य कहिया हएत मनुष्य, नहि जानि । मामूली स्वाभेक एहि मुटु-वृत्तिक विचार कहिया भ' पाओल से नहि कहि । छोटसँ-छोट मण्यक लेस एतेक-एतेक मनुष्यक नाम ? एतेक तबाही ! जयन्तक मानसिवादी प्रवृत्ति एकाएक जेना पञ्चम दियासलाईसँ सटि गेल पेट्रोलक टिन स' गेलैक । उल्लेखनासँ ओकरा देहक तस-नसक सभटा धकनी, प्रतिकारी आक्रोशसँ भरि गेलैक ...आव त' एहन परिस्थिति मे एकटा नहि समस्त घर-आँगन बहाइ-बहाइ पर लगैत छैक...ओकर आँखि विचित्र भावसँ घमक' लगलैक । ओकर साँस यही जोरसँ चपक लगलै । □

सङी

—'तोरा मनमे कोनो गलताका छीक ?' ओ पुछलकैक ।

ओकरा ठोरपर ओकर किछु मैही ना स्वादिष्ट स्वादक मुश्मल तह वहाँ सटि गेल छलैक । ओ माथ हिला कऽ—'नहि' कहलकैक आ चिक्कन बिट्टैसलि । ओकरा अनुभव भेलैक जे भरिभराई ई ओकर मन पतिअयना लेल बिट्टैसि खानि-छैक । असलमे ओ दुवसँ भरति छैक आ चल्ता रहति छैक । ई सब टा होयथ, ओ पछिला दू घंटासँ खाली सल्ल करैत रहति अछि । ओ सम्पूर्ण बुद्धिमत्तासँ ओकरा देखऽ चाहलक । ओकरा आँखिमे एक टा पारदर्शी कालि भरि गेल रहैक ।

पछिने ओकर मातेमे ठाढ़ि भेल रहैक । ओ पुछने रहैक जे 'अहाँ एतऽ एकघर की कऽ रहल छी ?' ओ अपनाकेँ नुकसनाक चेष्टा कएने रह्य । छेर कंठकेँ साक करैत कहलकैक—'हम मध्याह्न होटलक एतऽ आबि गेलहुँ' अछि ।

—'अहाँ कोनो बाल', अपन 'पुरना घर' मन पराई रहल छी ?' ओ पुछलकैक ।

—'न' । मान एक टा प्रत्यक्ष वातावरणसँ बचवाक हेतु एतऽ आबिकऽ ठाढ़ छी । हमरा हृदयक अधिकांश भाग धड़-धड़ भरि रहल अछि ।'

— 'अहाँक आँखियो लाल लगैत अछि । ओ कहलकैक—'अहाँ देखिमीक अरम मुँह अयनामे । सत' ।'

ओ अपन मुँह देखलक । ओकर आँखि काते-काते लाल भऽ गेल रहैक । आ ओकर मुँहमे तँ बहुत गारर गिरा सब प्रञ्जरमजेल रहैक । ओ घमड़ाहटि आ उत्तेजनासँ चुन रह्य । आ ओकर पंखामे चमिकऽ बसवाक आग्रहकेँ कय बेर टारि चुकल छलैक । पछिला दू घंटासँ ओ एके बातक उत्तेजनासँ परेशान छल ।

—'तोहर चटखा सहन छीक कि कनीतरी—जाति-वृत्तिक ? ओ कोनो आगाराँ पुछलकैक ।

—'अहाँकेँ की लगैत अछि ?'

ओ नहि बूझि सकल छलैक । ओ नकार भऽ आँखि घुमा गेलकै । कुन चुप छल । आव कोठनीमे पंखा घुमि रहल छलैक । नेना पीठपर झुलि रहल छलैक । भरि मोहलकाल दुपहरिमे कोठनीमे तेना समा गेल रहैक जेना ओ घर नहि, नदी

सर्गे ०३३

'हमारा धर्मो कबेर उठनाक मतलब दुनिया आकाश भवनाश ना' भवत छै ई बात बे भो कृपारि छति । हमरा पर विश्वास करैत छनि । तबन ई विश्वास-छन तबि होतैक ओकरा प्रणि ?' ओ कबय आ आन भावमें बेरायस छल ।

[illegible][illegible]

'मं भिन्न सत्य । मृदा अर्द्धां पुन त्रिन किरक श्री ?

श्री गुरुो निवृत्ता कऽ वीति मेव । 'कोऽपि अकारा धर्मन मुक्ति वक्षः लागतः ।
निवृत्तयोऽपि नैकता म् ह अकारा हम्को मायै न मुक्ति पश्यीक ।

मृग ओ आजस" पशुः पशुः मनः ११३ मेमि । अकारा आजिमे परो वैर
नरस्यताः छलैक । एकेक साजस ई नरस्यता अकारा अत्रि रहल एनैक

उत्तरकः ओ कंठ्योमे चकण वेडः नागन । ओ ओकर पोऽयद तज्जरे उने
 मेवः भागमि । हुनूक अनुभव एहि जानकः रहैक मे दून वः भलि

— 'अगस्त महि बन् । बैसू हूँपर आरामत ।' ओ कह भोहसँ बाजनि ।
आकरा दिस ओ प्रेक्षितो महि सकलैक । खानी ओकर हलनुक हँसीक निराशा काज
में निबैत पाँचर आइनुक अविना । मोनका आकर हुन प्रहस्यो बरनैक
आ ओकर दुन बाज समेत ओकर चेहरा दुन हाथमें आनि गैलैक ।

अहं कल्पने-कल्पनामे शीघ्रत छै । ओ गंभीरसार्थे काव्यनि ।

'हमारा कुशाग्र ने परंतु भासि जे हम की करी ?' ओ श्रीसा कह बयनीय
अ गय । ओ महा विद्वंसि रहनि कुनैक । ओकरा देखने जा रहनि कुनैक । ओकर
भावनि पीरने छनि । 'हि नकरैक ।

१. जल न (हल) छन । जैठरीक बाक दिमर्म ओ अपन अभिव्यक्त बेर हउ
जल छनैक । आधि ओकर शिकार होके : एहि बेर ओ एक दैस मर्ति कउ ओकरा
नोपिछेक । एकदम आगै बढिके ओकर कनहा छलईक । ओ जालागै त्रैम मेनि

[illegible]

12] गणेश भजन

॥ नृचरण शेष । श्रीकृष्ण हृदय या रहसि एतक आश्रिते कभी
विचारक भाव नहीं पार्ने, आत्म दासक सुसाधक व अ नष्टक यह सहे सके
है । श्रीचरण अपनम चिन्तित भवेक रूप । कायवत् । अ विनाशपातमे ही
॥ प्रोक्त हैक ओ सीति रहत छव ।

‘कं संज्ञा लक्षणम्’

‘किञ्च - [३] । ५। एवं मार्गान् स्मृत्य ए’ आ स न प य त्तत्तं गृह्यं यत्तं च ।

‘अहंके’ मत्ते, वास्तविकतामें वेमी वरुणना भौतिक समेत अस्ति । वन-
धिक । मो श्वर बोद्धिगतार्थं गविश सता कड रहि रहनि छुनेक ।

—'म' नामवाक्य सौकर आधर

‘अज्ञात आसक्त स्व-रस । संवेकं घटनाम् होयः पञ्चक । घटना सञ्चल
चर्चा, विवरण वा संस्मरण कि कल्पना नहि । घटनाम् होयश्चे होयस्य चिकि अर्थवान्
यिक । वही ।’

मध्य प्रकीर्णे आ सुनन खान ।

खिडकामें, घोंदके फारमें सहित्वा कः पैसत विनइ सब। सुयक प्रकाश
का रोमि आवः लगलकः ओहि प्रकाशमें ओकर मुह उवास भः चित्त लाई रहस
छ।

तो 'कल' कहि छै ?' ओ सहसित, अगस्त्य भावनामें पुष्टमनस्क ।

२२"। जो साथ हिया बैसकीक जा लुप्त ओगिर्स ओकरा सेना उपकम
२। मो फो करो की नहि साहि सिधार्थमे बैसा रहल क्षमि

अथ नाना प्रकारेण विवक्षितं । अथ नाना प्रकारेण विवक्षितं । अथ नाना प्रकारेण विवक्षितं ।

४. नीला गंगा २५० टुकड़ों में बँट गया । तब वह सब टुकड़ों को
सोना में बदल दिया

संस्था : श्री भगवान् ज्ञान मन्त्रालय धर्म शास्त्र विभाग

सिंहार अलङ्कारः २

- माद नही जाउ । फिट्टा न जात ही हईक्या कउ बगलक -'ओ कयना
एकरो काना सगुआँ भासि सगीत छवि- दूर परस ।

के ?' भी प्रष्टि तौ यसससक मुवा सुखन्त सकृच्चित्त भाः मेल ।

आक्रा कन्हापर गटन वच्चावः वेह्मे कोमो सभार नहि छपः । जावि सभ
छजेक आकर माय आव एखन आकरा दुमार नहि करैतक ।

'सूती ?'

भी साथ हिवा बेलकीक। फेर दोसर दित बेवऽ लागलि। ओ ओकर साथ छलकैक। नदनामे ओ एकर तरहबी पाँची आङ्कके बजावऽ करेक छल छरि अपना हाथमे छमने रहलैक।

ओ आबि गेल। ओकरा ठोरपर बहुत गूहन स्वावक नहि कहि सकबा बोध्य तब सटल पलैक ओकरा बुझाई दिह रहल छलैक ज ओ उमराहल अछि। भूदा, ओकरा बेग बड स्थिरता चावऽ बाकल पडि रहल छलैक। ओकरा भाँसलक पर सभटा ओ सब छलैक जकरा बलत मानैत अछि।

ई व्यवस्था दोधरी होइलैक तँयो, एहने किछु होइलैक की ?

अनिबीन ओ एकटा फटीशर बोकानमे बाह पीबऽ पैसि गेल। नहराक भीर मउल रहलैक-सीकक देखम-देख सटलैक।

ओ फेरो अपनाके घटनाक क्षणमे ठाढ़ अनुभव करलक—घटना मे नहि। ई ओकरा जैन मूद खराब साथ छलैक। □

सपना कायम

एक टा नीनवान रहल। बहलवाकांकी रहल। कि कोनो नीनवान भल करैत अछि। ओकर परिस्थिति माने अविक नीन नहि रहैक ज खुब मापल करल ज्ञाना समक नश्य परि परिस्थिति प्रभाव न दिन राति चिन्तित रहैत रहल। अपना जिला मे ओ तपक व्यस्त रहल जे ओकरा देखि कऽ क्यो ई कहि देल जाय 'ई नीनवान आबि नहि, कोन बिचार मे भुनियावल रहैत अछि।'

टोल पड़ासक लोक ओकरा मादे एहन कोनो तथ्य तीव्रत छैक आ' बाकल करैत छैक ओकरा एड मानक पता तै छलैक। ओ बेसी-बे सी व्यस्त रहैत रहल अपने आप मे। एक तरफे जनकपनीक सीमा धरि।

ओकर स्वास्थ्य भीसन रहैक। काटी काया सँहो साधारण। रहल-बहुन अति साधारण रहल कि मध्य वर्गक जनहीन कोनहुँ युवा लोकक भऽ सकैत छैक। ओ जन्म बग पर बलत लखना मभीर आ जिम्मेदार लोक जका। मोश ओकर लबटा ब्यवहार आ' बालि-दालि एक टा सामान्य आ बुझलक मनुष्य अछि रहैक, तँयो ओकर मभीर रहवास स्वभावक कारणे लोक अपना-अपना मोनाबित ओकरा विषय मे छलकरी मउल रहल आ मउलवा के किछु नहि छल जना ओकरा द हटा दिह रहैत कउजल सनक महानुभूति मे जे—'वृत्त—वेचारे कर्ता बाबूक वेदा एना भऽ गेलैत तै जना भऽ गेलैत।' एहिना, किछु मोरम अकारणो जेष्ठ सँ ओकरा विषय मे बाजल करैत जना कि कम पढ़ल गरीब समाज मे होइत छैक। ओ पनि निश्चि कऽ बेरोजगार रहल रहल। से जैन गम के बलत छलैक।

रोजकाल मे एक टा बिचबना छलैक। ओ सब राति एक्के टा सपना देखैत रहैक। राति रहल ज्ञान पर आ, उठवा करल समय पर। एहि मे ओ काँया अनिम मे करल। टा राति दिन एकहि टा सपना सपनाय। ई बात हमरो बहुत बाव मे बाकऽ पला जाल = =,।

हम जे अहिके ओह नीनवान को मुना रहल छी, ओकरे पडोसिया रही आ मउल ओकरा नल पडोसिये एक टा पैघ मोरक स्नेह भेल्ल। ओकरा हम खुब बेगनुक निवारक दुवक मानैत रहलैक तँ ओकरा बासि चिन्ता रहल करी। यद्यपि ई बात छीक नहि हमहुँ नहि जालि परिवर्तक ज ओकर ओ एना कियक अछि

जब खान शह भोकरा विग्रह में काम था तब निम्न भोको का दैनिक खा जवरा
कारणों ओकर मन में फलन पहुँचा हुआ है ।

संयोग से, एक दिन ज्ञात में हम अपना कठोरीक सोता में दशमि करी
रही। देव सात-घना सात बजे रहने हेतक। अमहर में भी पुनक जावि रहने
सब अपन सहज नात्रि-डात्रि ॥

जबकि श्री लाल बहादुर शास्त्री ने देखा तो बुझाया कि श्री बाबू ने यह बात नहीं कही।
साबित कि यह सब कहना ही नहीं था।

हम आपका साथ हमें पसंद है प्रार्थना करें रहम है बखान में एकदम
जहाँ आदिमान व दिनांक आप से मैं मैं मैं मैं मैं

—'भीर भीर कहाँ खसलऽ ? हम जीवारा पृथु'सयै-

‘एहिना’ ‘कली’ आ ओ अपन अग्रमिश तर्काचो श्वर मे कहूंक भा जाय शकत ।

—'बहू हड़की में छः भाय ? किसेक में अपना हुनू भायै एक-एक ब्याली
बात्र पीवि ली। हमरी बतमनि सः १५०० रुकथ । हुम भाबहू बतमनिक ।

हृदयकी कोनों विनोद नहि, परच भादजी, एकर कोनी नकरति नहि
 गानन ' ओ अणभरि उमकत बरि निष्ठता श्री आपात कमयक ।

—'महि, कस्करनिक कोन बाव ?' तो मुंह में अन्नम छो देवे हाइवइ । हम
'महि' बरवैक ।

[illegible]

५१५२ सपना विष्णुहि मे ६) गर्वक ताहि नातु गें श्री श्रुस समसायल रहः ।

विना मायूजी मृगीक नाम फरल सज्जिन कोनों कपड़ा-सेठ करता। ओ सब
पु. ॥ इहल दलमातायल करायल क. ली. म. रतेन रह्य। दूवल न. लल स. किश. फल
सल मृगीजी इल। क. विनाक मृगी पर कयि नहल रह्य। न. आकर विना मृगी जर
करा सैठ रह्यिन।

16□ ग्रंथसंग्रह गुरुकुल

जन्मदिन तारीख को प्रपत्त सपना भंगूरी तहिर उमिर पचीस छल तकरा प्रपत्त को भोदि
दिन खुब बेचैन भंगुन पत्त खंडायेवे मय्य ई तथ बात को बहू हसनवादी हं गुनोचक
हमरा ।

जो बाह्य पोंटि रहल छल, मुदा बेना खूब छल भाव सँ ।

—आखिर ओ कौन सपना छ ? तो की देखल छहुक सोव सपना मे ?

—रेमोन प्रिथीक... (जो किश्तित रुकल)... रेमोन प्रिथीक ने घरक चार नैपार

[illegible]

‘केद ! हम पृथ्वीनिर्भर ।

[illegible]

• • • • •

प्रति श्री सुचक्रावर्तन रहान, फेर एकाएक अक्षरों पर
नाम । ... कहे । ... मैं जान भी यह देखने
बकी हीन कहने । जना भी नो मपरथ करत प्रति के कि ओकरा कबरपि
सहि करवाक सारी ।

मैं उस कि... छः ? अपना देख कि... खराब बात नहि
 है नगरक भवन-भवन लोक स्थानजो भी भव नहि । कितना कष्टिक ? हम लोक
 भवन...

न के २१ नं० १५५ जोशिए ने हमर स्वज रूप भइये रहल छल कि दृष्टि में।

‘काना हसे ते १ बिभष ऐक आठ ते दूरा पः जाय ।’ हय काथाधन
दे गटक.

ओ क्षणेक रहल । फेर उठल, प्रशान्त क कऽ चरल गेल ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य ।
 भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य । भगवत्पदं ध्यात्वा भक्त्या नमस्कृत्य ।

जीद दिन जी प्रेमा माव एगधे अनुभव करवऽमरा जय भावस रह्य आ
अमारा सँ उमरेत रीद जकाँ ब'नि मैल रह्य ।

फैर हूँ ओकरी चिपच में मुनिली के कनक में—कीशो शहर में अपना बाबू
 के एक टा बिट्टी बिल्लुनकी के ओ नीके भक्ति, चिन्ता नहि कर लेल । ओ एक टा
 काँटली जाल में मजूर भइ गेलस ।

एहि समाचार के सुनि कऽ मरमा लक्ष्मी पहिने मोन एहि बेर, कोइला खान मे
अजान भवा में एहिनेक ओइ बुझक स्तरम मोर लींय देह । अकर रंग तँ कोइला
कारिख पर अजीत अजी छिटकीन रहैत हेनेक...

हमारा आग्रह स्वतन्त्र चिन्ता रहस्य बँकरा विषय की कित्ती ने मिलने
रहस्य आ पुस्तक ई स्वतन्त्र तँ कौनों गंभीर मनविश्लेषके अभि पात्रो, हमारा
अन विचारों का कित्ती ने भरण रहस्य ज आओर तँ कित्ती स्वतन्त्र कित्ती
तानु कित्ती भक्ति

एतां गृहि जाय भोग्य कारक एतामी सब ओकरा कोन न गरि सँ दर्शन छै ।
हनुका ओकरि केँ केहुन जादसी लगैत छनि ओ अवक ?

भीही दिन में कहियो एक बेर भारे भीकर छोड़का भाव हाव के एक टा
प्रसन्न वृत्तिक विचार ता हमसे दिव में ता हमारे लक्ष्य न हम भीतरा लार कर्मानियक
आ पिता भा भायक विषय में पृष्ठनियक ।

भेदाक बिहटा तँ अमरमे मुवा ओहि मे अपन एने ने सिधलखिनहे को । बाबू
सात उरात पाग १२ ३४५६७८९० आड का सन्धि कर हुनि नै बिल ।
...बाकरीओ छुटि गेलन्हें ।' ओहि पङ्क्तिक अन्ति भाग १२ ३ ४५६७८९० ताँग
...।

इस गेय संगे बसबस मोहर भर । तौ कहे ॥ १ ॥ न ट मरन ' हन
पुष्टिबिक ।

—'आध्र पानि शायक दूक ताकः शायक शक्तिः' कन्नड का भाषा बलि गेल ।
हमरा श्रीकर वैप भाषक स्वयं भात पदः नागिन आदिषि भाष्यर विना दाय दूहि रहि
छथिन ।

हम पूरे भयानक से प्रतीक्षा में रही थे जो भौंका जल्दी दूर लड़ जायस

18 □ **शमेस्य सु ज्ञान**

आवध । हमें यह प्रश्न पढ़ने किंतु भयंकर प्रियता के बिना उत्तर देने की प्रेरणा नहीं मिलती । जो उत्तर अब देना रहता । किन्तु जहाँ प्रत्येक घड़ी किन्तु भयंकर ?

आ कि नमस्त ओ अर्चन वेवाह दहल । ओ मूख आस्ते-आस्ते आवि रहल
छल । "हम मन बलडिन रहेक बेना ओ भरना घर दिस बाबझिणे नै मन्हेत हो ।
मूया बेगान बेने अर्चन ओ हमरा लग मूही पला कइ ठाड़ भंड गेल । हम देखलिये आ
दुखलिये भेटलः नायक मूख "

आविष्कार से मुझे हिनीयक-ने ।' गिलास आनी रसक । मकरा बाद हम
 श्रीकरा दिन ककवारक साहस नहि कइ सकवहुं । मु'र बासरे दिन तेन फाजिनी—
 कोनी बान नहि ।'

— 'बनऽ नाड तेहर घर देखि भी ।' हम कह'पयेक भा ओकरा गज्ज भऽ
गेनह ।

भाग्य देखिधी, आहो! वित्त एतवार राखमे कोयला खानक ओहि अवस्थ
इन्तरेलाक विषय मे समाचार सब छल रहेक । आहि मे बहुत राख खान मजूरक
आपका कयल जाइन रहेक । आ हमरा सोखो पडल यथेष्ट रीति दूध पिना
आहि मिरिह आचिये हमरा दिन तकमे कजान मे नेहून अन्न भोजनक बहुर
छनेक जे हमरा लेल शुद्धम भोज रहय । हम नकरा चिनहि नहि सकल छी । मामक
माम तँ कोबन्तक खान सब मे ओइ जीवनमान मजूर के ताकि रहल छी—अन्न कोइ
किरायक कोठ्या मे आरख नहि गेल छी ।

आज ही हमन्ही सात-सात अनुभव करीत आहे ते सर्व शिरायक कोठे न
मरु शुभ्य मौख जीन हार लोक, सहोदर भाव मोक्ष ।

શ્રી હરદાસ બાઈ શ્રીશ્વર ।

एगारहम चिन्ता

प्रिय भाई साहब

आजा रबत छी जे सफरिहार भौंजेया होयव । हम एकटा खुब संमटियार
मरम (संभार) भौंजेया छु । यवना आ बहुत प्रमाण परमा आवां चोह भौंजेया छी
विशुद्ध सारवां भौंजेया होइ आ पुन प्रानि आ बेसी भावना क अर्थवत्, मे भय-
कर बेर कार्यकम स्थिर भऽ जाइत छि, फेर भौंजे ठाववर पहुँचि जाइत छि ।
मामे सचत छिपु, ई गटना आवां कार्यकम बुझाई, ज कय भास कि जे बेर भौंजे
अनाम छी । टाक छी, फेर बलापय । एह फेर कार्यकम बनायक बला बानव
बुझाई गयो ज हमर समय जान भयम, बेसी कऽ गन । एहवाँपर छीक छन जतयव
एहवाँ मानि मन । एहवाँ कहा बुझाई जेवना ज एक टा हम छौंजे, सोस वगैर पुरा
आ दौंजे हम छौं आ एहवाँ तयसार आवां पुरा कऽ जाइत) कार्यकम बना रह्य छी
आ सोस वगैर छिपि गेय छी ।

आजा एक टा मनुष्यक, तीस वयंक पुरा 'देस' भऽ जायव कहन गम्भीर अर्थ
आ सोस छी । एकर कल्पना जे, कि भौंजे एही संसारक मोक छी, कऽ सकैत छी ।
मामे भास जे 'एक नीलम-एकनीलम वयंक कहम' का बाव छिपु भौंजे, ई बाव हम
एहवाँ भौंजे छी । एहवाँ भौंजे नहि भिष्योई भौंजेक किछु ।
मामे भास जे 'एहवाँ भौंजे' भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे आइया भौंजे—'कऽ जाइत-दमिदाह' छी । मामे तारीख गनैत रहैत छी
एहवाँ भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

मुदा कोनो 'हमिदाह' भावुकतामे नहि, एकटा छोट वयंक वयसक मोकक
मानसिकतामे एहि पनाचारक भौंजे उलम भुझ ।

मनुष्यक आवां कार्य बहुस आ व्यवस्थाक फलस्वरूप आवांकार मे खुब हतासीनाक
सो वयंक वय तीस वय हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

हो मे एहवाँ भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

हम जेवना छी, एकर जवान देव भौंजे नाइयना नहि । संभव छैक एहवाँ
संचरित भऽ कऽ एहि प्रान्ते मेलेह मे प्रोह अहो । किन्तु ई मानव हमरा मेव बहुत
स्वाभाविक आ आवश्यक अछि जे हमरा सब एहि प्रान्ते अहो हमरा सब छी । आ,
हम जे कि मे मानैत छी ते ई पय ।

जेसी मैथिली समानाधिक अहोई (मन-पुरात सभ) व्यवसायिक नागरिक
एहवाँ भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

हम वटना आवां छी । भाइ साँस बजार सेक रह्यो, हावे । भाव कनेक अर्थ
आ सोस-रमसार भऽ भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

धौनो ई अर्थक एना चिन्तित आ आवां भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे
हमराभौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे भौंजे

कानून प्रवर्धक व्यवस्था सुरक्षा के अभाव में नाभी नहीं। महानगरपालिकाहरूको अभाव
महानगरपालिकाको अभाव।

ਮੇਰਾ ਕਰੀਬ ਕਰੀਬ ਠੀਕੇ ।

हैं, एक टा पत्र भीम भाइक नामे मंत्रम अछि । भेटि जाइत हुनका । डाकक
वाग कि ह्यार पता-डेखना भिखवाक । ईक टा बिट्टी नई भेटामिने । ई पत्र जखरी,
ने दोसर हाम्पिन अहांके बताक । मित्रिजन होवऽ चाहैत छी ।

॥ मि अङ्क

ਮੀਧ ਖਾਣ

आज मैं सुनाइत अछि जे पञ्चाचार पर्यन्त करव पराभव । बन्नुहुँ कोनो आन
 नाइक चित्र । धरिने छैक जे एक दुःखमै छिपि जाक जे आ मजदुरन बाद पाइल
 पाती जे पडैए माहोस 'कृष्ण-शेख' मुक्त भऽ जाइत छैक । जनक जे "गोस्वर श्रीजी"
 इहुन दिनसँ सुखम छपि पडिने भेल जे कार्यक एतेक रात आर भा एतेक घर-आइतक
 लकीर परिधिमे एतेक रात धिया-पूना मकर केश दुख-रोग आ भभावसँ दशावस-
 ल कम बेर लोक अनेरो दोसी अनि आइत अछि जे मोर्चक मार्कण्डेय डाक्टर
 दत्तोनिपति । फेर खोचबहुँ जे दु मास माय गए पछा दिमनि इहुन जेन होयनि
 जे लोक भऽ जइनीह । दवाई गही धरि सम्भव भेल मुक्त कऽ देखिनि । मोनमे छन
 जे माय पग देखी हय, लम मरज्जु लोक रहनि । कमसँ कम देहमे लंखुन शरीर
 होयनि । नीके भऽ जइनीह । अपन बेट गामम लकरी, लकरीसँ गाम करीब रहैत
 छी । अपनो मोन नीक नहि रहैए । नाहिनर मुक्ता-मिन्दक चिन्ता । मित्र नै यति
 पडैए जे हरजारी करमा भका पाइ पडैमे मोने जे दैल छैक । नाहिनि छि कऽ भाकि
 गलहुँ । कब टा प्रलोभन कऽ कऽ भाकि लेलीह जे, श्रीन पुता भनकऽ नीक जका पद
 नर । बन्नु कोनो ईश्वर रोम झुल गेल करऽ । बुदा अथ ललका जर्जर जर्जर छैक
 नीयो फेर गडि जेन जे जखम काटिह लै । जेन जेन बेट । खानी छपी-कोवारिम वैश
 वेम रमल । पाटी आटा कि मेरबा-पे उलो ई मे पोखरिम पति गटवैम जेत मोन
 भगैत छैक । पदाइक नामपर अम्ही माँग पडि पडि जाइत छैक देख पर ।

[illegible][illegible][illegible]

नमः कोनो चिदही नै निखलऽ। कोनो छैक क्षीया-पूना सभ ? बीभानि-नोके
सुनसिखिन जे बह हजजोर भऽ गेल छकि जखनो सभ छै गेल । न ओनऽ न सुन
हेनऽ, सभकेँ नीक जकाँ देखाकऽ छैक सँ दवाई कराबक खादी ।

अतः नो मोडो सुनना न वानाच उदेख भु. न दसरा भु. न देवाक भाई. न म. न क. अन्तःप्राप्तिक नहि नाह । इमेरा नाकाने दह नो भु. न भिव । ईह नो सुनि पावने नो परिवार भित्ति नाह ने ' न' अन्तःप्राप्तिक नहि कोनो नीक हावटाने अलि कलकल नवाह वाह

कल्पश्रवणार्थो आर्य रहस्य छंदः । तत्र कल्पश्रवणं नष्ट कस्य नम आश्रितव्यम् ।
 नै सुखं हास्य हर्षं नै कस्य नै च नित्यं पूजा धरि तं अग्रज्यं तत्र कस्य आर्य जाह
 नहि । श्रीमान्पूजासम नित्यं पूजा इत्यतः । कश्चिद्वा कश्चिद्वा ई कश्चिद्वा नमो नमो
 सत्यनिष्ठं नै श्रितश्रवणं तत्र नमो कश्चिद्वा रहस्यं श्रीमान्पूजासम नित्यं पूजा
 धरि अग्रज्य इत्यर्थं रहस्यं इत्यर्थं नमो नमो ।

जिम्मा नहि करिहइ । कहिया धरि अरु ब्रजबड, से लिखि विहइ गहिने । कोय
बिरह । लिखवानि । एक एक जानम हूइत छह, नहि जानि । एक-एक दिन धरि
लोकक कुशल-धेम नहि जानि भुजना । पर लोकक कहेक जिम्मा होइत छैक से सुप्रचार
कारिय । ते ।”

ई पक्ष हमारा गाममें हमारे छोटका भैयाक अछि ।

मने हृषीकेश अस्ति । एका वर छलय । मां छत्रि, पिता छलाह । मे वर द्या
आज समान अस्ति । अर्थात् अने तद्दिने अस्ति । राम ही अस्ति । मोन सहो मोहीस
अर्थात् अस्ति । आज लागन बाळ जका जतना दूर असे बंदीक तास जाहत छेक,
पोलीसिने दरे-दरे पायलो जस कस अतना मोन बंधा करत छी ते बंदीस आर गंधावन
जाहन छी, कारण, बंदीक छोट भूत नीक जगां भीडपर गाडिबे कस बसो अलगिहात
कलहु शेष अस्ति... ई निजिबाद छेक जे हां आमात या हमरा छीमिकस अतर कस
सेत... ई ते भेस मिमांसे । मुदा निजिबादी लोकक निपति नहि । अहिक ओ कथिता
जे अस्ति... निपतिक ई धुरी... ई छे

ओ मुँहकार मणि मटेए आब कतहु । आब ओ परिस्थिति नहि भेटैए कमहु ।
पठिना बेर भयस गरक अयोरा पर बैस्यो । भौजी वस तीक जका राख कयनहा
पाइए, पात्र पकाए, ताब पर अल व हाथपर मरकाउ दइ त । छाथ बैस्यो । दुइ-
कउ तै खाने हाथस कि चैंतीसै बसो बरख तीतैए-चारिक एक ठा गोर-भार रोगो
सत्त भेल कुचक १२६ टाम सारन र हा पाहरन, हाइरो आकर १२ हुनकीत त्रैक
सपकस जायकउ कलम ओनकी नग ठाई भऽ मेव । हम भौजीके पुछनिपमि, ककर
सकल छैक ई ? ओ उबियायन माग्यो ओकर जे परिचय बनति से जेना करेब बरकि
तइ नई त जवा आकर सुदर टिप्पक । तहिना कोओक अंगरे-भोज पुमिक । "तु मरे
छैक " ककर हाथ बुझिनासयन सा मरमाहव एकलम गुगलानम पडैक हेतु नयना
रन कइब चउटा कयने गइएक अ ५६२ भिउस जैक बिछु । तहि पडसक । जठ भाइ

मनः शब्दो मन्त्रः सदा न धीरिति ज्ञानार्थक आत्मनः चेतना भावने प्रसक्तो जातः
स्वाभावः'। किञ्च कृष्णाय

[illegible]

सुर अही कहू भाइ, भंगल ६३ कऽ जीवन का समाज बदलल जा
लकल ? कहियो ? एलेक व्यापक 'वास्तव' केहन स्वस्थ युवा-समाजक प्रविष्टि बिनि
लकल ? आद तँ एत जे आद सवि मेले हीमतीक आकर बपल । यान बेकारीमे बिबाध
भाइ बीबीक छैक आ मजदुरिय सभ सङे 'साम सुधार कमिटी' बनलए । कलरापर
मनवे' विसंग, काला - सदस्य आकर अकारण डंड डाला जात छैक तँ एत समाजक
आसन बसल । युवा समाजक जे समाज आद तँ मजदुरिय मजदुरिक अरथ सब
बिगडी कहल'...

बहुत नीजकाम भक्ति । मरण-भयन वड कीर्तन करैयूँ । कछनो अति-मार्ग
न तोड़बाक जाहो सहि पर सभा करैयूँ । कछनो पण्डिताहु कथा कहि वड सकलापर
अन्यथाक दरबाजापर नै धरकैँ चूरा भनै जाइयूँ ।

गौड़, ताममें अर्द्ध गान बनी बहुत रास बेरोखवार अछि । बेसी वाद में छेक
नकरा । छेक म लाय ५२० म मि। १० म गहराई में बेसक बस गइल । छिपलक
गोदकान्ति करै छल, बिधानल लड़ आचार-विचार सभस ।

[illegible]

मृदा, अहाँ गाममे सुनसीन्हें के आबे प्राय ई सभ सुभीता अउ गेल अछि एवको सङ्क, विजयी...

[illegible]

नय दल प्रसार हाका भेटलेक मजकुर सगळ्यांतक लेल । एक-दु ठाम खाला भरपयो कयले। एके मादयेने फेर हाटपर छोट-छोट डवरा कापल । मोकळे कहि वेल वेलक एतले अनुदान भेटम रहैक ।

ते गाम एक ठा समतकटी भाव-बोध जकां गर्वने भाकने रहैत अछि । होइत जे भाव नाम भलि "फेर कहियो तहि"।

एहनेमे गामने छोटका भैयाक चिट्ठी हमरा, कि छोटकी श्रीमतीक चिट्ठी हमरा स्वर्णि आदि पाइल । एतनेमे विरसुं चिट्ठी विरस वन कयने छ । विरामे छी, श्रीवा-पूजा कोमा छैक ते ।

आ, हुमर काम-बोध, पूजा-कानक-बडका वावरक संशोल्चार जकां भिन्नत भऽ पाइल आछि आ गामने ककाय दुवायड जकां बडका माय, काकी छोटका काकी गामकी काकी आ हमरा जे दुवायड जकां आभारक जे भूमनक मुमधर्म ध्याएन आगन-भरि टोल ।

मा कहिय—'हम भाइछी पाड मुनऽ । घरने विजिर बडा देनिये । मूख लागह ते ककि कऽ का निहऽ ।'

एहने मुनवीहे वातत काका मेहो इमाम सवाह छि । बड फाटमे, अरीरे, गोने, नम तरहे ।

जाति नहि, हमरा गामके की का भेलीए ? हमरे त भऽ गामने ?

मेकी गाम कएक चुलाइत रहैए

भाइ, ई एमा चुलाइत रहैत की छैक ?

अहाँ भएना गामपर कोना कविता-एक त सम्पूर्ण कविता सोचि रहैत छी ? फेर कयनोका हम ईहा मोचन छिनेक ते तह यदि कयाकार रहिगई ते एहि वध विरामके कोना चित्तिविह ?

हँ भाइ, एक ठा कायक भार । ई चिट्ठी प्रभावके भेज तहने । अहाँ गामने अचये हावसगला मजक वाह कोकाय का फेजर रोडक कोरिमे वेसिने होएत किछु अथ कऽ

विद प्रभाव,

बीचमे एक बेर दु दिनक लागे घटना भेल रही । ती अपन विनाक दरजीमे गाम गेल रहै । आज न कय काय भेलक । हमरो नानूक बरबी एहने किछु मास पूर भेलगई । तारा त बुझन छोक रहम नहि बा सकनहुँ । नहि किछु गेलहुँ, वकर कोमो वाक-साक बारजा नहि बुझम अछि । मुदा, तहि भेलहुँ । छोटका भैया हट भेलहुँ समातमे । छोट गाम हमरपर आगारका बलन हावनाइ वरधु मुनवहुँ ज

हुन पाड आगार-अपना घर अमोहरर वेम भव्य आशय भोज कयने । एक भाइ १९५३ ते । पाड कावसार ते होइ छी । मजकुर हमर स्वर्णीय विनाक-वटि पावन हाइकि वेडा लोकनिक ई भव्य-भोज । एहन मेहो आ अकायमे एतबा सागमिर्त आवाजित ई भाज हुनका नीक लागले होइनि । कऽ लकए अपन छोटका वेडा अर्जान हमरा पर चिन्ता भन होइनि—'बुझि पईए, ओहिना अभाव आ कष्टमे अछि' । माफी दने हाकि, नहि कह्यो ।

मुदा हमरा ते ओहना गाम जवनाक कोना प्रश्ने नहि छम । तारा जकां न गेल । माहल आगार तहने स्वर्णीय । ते कयमा अछि । न । तहने गामने कयनोका कऽ कऽ बरबी कऽ अर्थ छै पियाक । नहि जानि आन आमवनीय ते कि 'बर्ती-बर्ती' कऽ कऽ । तहनेक सम्भावना ते कोना हमरा कयमे मुमाइत अछि । ते छै ।

हमर त एहन भाव-भातमे ते आस्था अछि ते अहि । वकर कारखो छैक । तहने गामने रहनि । नवनेमे जाकरी भवन ररा छोटका भैया कह्योए । आज मे विराम केमायमे अर्थ तहने हाडक हग पाका रजो-रजिमे ते अवस्था, मुदा भाज तह नहि । हमरा भारी पावसक वर्षा ई-खाली धाएन भोजन । साक्षणी केहन ते मजकुर परत काटामे स्वर्ण कय-कय वरक मे भव्य पाडर मानर भाव धयल रहैत छै । ते जय विराम रहैतमे तहनेक उपलब्धमे तहनेक छवि तहनेक मुदा भाज-भानमे नहि । आ हम अपन विचारो विखने रहियनि ते कोना खर्च हो । ई विचार एतना गामक भाकके अरथस केहन कठिन छैक, ते ते हुमने छीक । किछु न-हाय हमरा, 'नै बुझैत छविन', 'नेना छविन', ते 'ई छवि' 'ओ छवि' कहल गेल । 'अर्थोविक्रम' वात-विचारक बाधित कयल गेल । हमर पिता कजलविन—'कै, छीक' । तहनेक नकर, आ यदि आन कयनोका एहिना कऽ चाहैत छि ते आपसि की । छोटका भैयाके आशय भेलनि—'विचलवुन जोछि, महनुकुने व्यवस्था कऽ रहत ।

मारी मुपत विचारक प्रभाविलोय विनाक आदमे अजन अजन भायक कर्तकार । तहने ते विराममे नहि रही एकरा ते अ- । तेह भाइ । तहने अधिकार टाकाक व्यवस्था कयनगि, लव-लव भर्तक । पांच घाटे एकर गाली, (एहनि छत्राह आ फोकनि पिनी, भान मय, ओहि प्रसंग एक ।) आदिक स्वर्णम निचय भवामे तहने हमरा बुन छोट मादने ई वजन यऽ लेन गेल छर जे एहन भावमे टाका नहि अछि, मुदा टाकाक व्यवस्था कऽ कऽ एक तेहाइ अपना-अपना हिस्ताक टाका वेठ जमके छुट देवनि ।

विचल हमरा अदमे ते एतने ई आड-काड । मुदा, पिताक लोक आ गामने विचारक विचार अंगरि आ दशक कानावरग विविध हाइत छैक ।

[illegible][illegible]

श्रीमन्महाराज परिवारक कुलीन-मण्डल इतिहासमें एक ठा भयव्रतहु कवचक बकरी भुक्तकै । एक ठा विशिष्ट स्थिति ई लम्बे के लट्ठमें हमरा गाभक समरजक कोनो अति नोच नख गण्ड धरि के एक ठा कोनो व्यक्तिबोक किछु हानि नहि भेलक । तथापि कवचक गहि बुझारि के हमर स्वर्णम पित्रक मयावाक क्षमता प्रतिकूल खेलनि । कुलीन परिवार-धरकारामे कवचक । एहि सुगमे, एहि 73-77 ई० में पर्याप्त हुनक स्थान मिलनि भीषारोक मीथनस्य आ एकम्ब आकता । मभव छैक ? जतऽ मात्र पाइ मभ । कऽ पछल छैक आ करा पछल छैक ? मनुष्य, पाइ, जर्मन आ चीकान भऽ देख अछि ? गाबरन मभ पछ । पुनः समरम सदाचारक छैन । हमर गैर शाकाहारक मभ गैर गृहमनि आ गृहमोय नहि पछल ने अछि । ते कवचक डाकाक अवाधनीमे हमर मेधाक नाम जवन । इत्यमाम् मभान । १८६४ क पछल मभ । आ जमान क मभान । गैर अधमानक आ भवराधमनि भयक बोध होइत जे मेल कइल नै कथमक । ते किछक नहि कवचक ?

जो पाठक आ आशीर्षक वर्गों एही नामक नामन्नी संस्कार आ सामाजिक
प्रामाण्य आधुनिकताक संकेत । ई कृपाशिलिनीक रूपमे स्वीकृत हूँ ते हमरा ज्ञाति भक्त
किशक आगत्य के अपन परिवार साथ जो संस्कार परिस्थिति लोग मुक्तियो ।

एतिहास कोनो कथा कहवाक हमरा जेब तु जाइगो नहि अछि । कारण ते
हमरा तँ स्वयं एकर पाव जनः पढ़त ! अलम्भय ।

श्रीवा हजारा नास्ते बहून कयने छवि जेता एकटा जेठ भाइ अपन छोट भाइ
लिख भऽ गरीब भऽछि । एक बेर भगवती नऽ गेबा रह्यऽ ४८-५९ ई. क एघर खिचक
भरि-भरि शक्ति सिद्धामे जागल बैसल रहबि, मोने भऽछि ।

आइ मैसाक "मेट्रो" १२ आवाज अति-उच्च विद्युत परिवर्तक यन्त्रवा
संयोजी लघु-मेट्रो वाहन श्रृंखला में अति-उच्च मोटरों द्वारा चलाय गन्तु आरम्भक

एहि चिट्ठीक मतमय हय कुसँ छिएक — “कर्मक अन्तर्भावमे हुनका जे हम
 भय बने छियनि, तकर रजिस्ट्री नहि बन छैक । उमरा मऽ रहल छथि । तानि
 भय निश्चयन मेरेन मीन भयन छल त तानि मरमे छैत छल मऽ जाइक मत
 हय लिखि दिथनि । नहि हुकर मोन बदलि गेल आ उमीन पर दवा कऽ छियनि ।”
 पैर ब्यवस्था चाहियनि । हमहूँ साँचै छिएक, स्वर्गिय माँ, पिताक, भैया सबहक आ
 अपन सम्बन्ध, नसबक इबाद आ जीवनक सब-सब समस्या सब सन्तुष्ट होथ । कुतः
 रात रात अनमन जाबि मेरीक के लोक आदरपूर्णक स्वीकारने आ रहल अछि । ई
 कसजो, किएक अमरक अछि एहन असुरक्षा या अविश्वास ?

द्वितीय सूत्र मन्त्रा वैद् 'सप्तम्य' अति परस्पर सम्बन्धक विनिष्ट भाषायां
मातृनाम स्वर विनिष्ट ११११ ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥ ३० ॥
अत्राति भेद नास्ति अति ?

तोरा मैं तुमसे छोड़ गिनाऊं मेलाफ बाइ मभ किछक मुराफह छौकलमग
 परमे । दू टाप कहिह । दू टापान, बैसगिहारे सोकनि दू । बीच आहूनम हः
 अहम भोगिन अपमान बुचबहत छैह ? आ सोक दूकरा मगर वसनेरे ० म ० १
 मैं भइ अयनैक अति, बेगारीमे बँटवारा, एकदर ज्ञानमे बयो दुःख करव

हमारे कुल के शिरोधार्य वंशवाह । मुदा कि मर्यादही समाप्त ? वा, यदि वंश न
 भी मूल्य पर ? इत्यादि आश्रयित दुआएं ? ई कुल एतदा वंशक, जे लोकक समस्त
 मंगल वाचक एतदा वंशक ।

अथ नरः पतिं तव अस्मिन् पश्यति । तदा काला रज्ज्वा नै चक्रे ।
 तेषां राम दा रज्ज्वा बन्ध करणर सायस कृत्ति, ते नै युष्माकम् जच्छि मदा काल
 अभय वा काटमे मे महि युष्माकम् जच्छि । हम् जर्मन छी, एक दिन छानि, मू
 गमस्का छानि आ दरमाका कम भेटनि । अन्ताव रहनि । मुदा अहः ? तस्मिन् ? मान
 आरौ मारु आरौ ?

भैयांक तार-बद्धो-गार् अङ्किते रहिष भृष्टि । जहिपासै घर-परातंग बँटभारा
मेनप ई धटना साधारण लौक । फेर आपन भ्रष्टि । एहि बेर स्वयं नहि निवर्त्त
२ व 'विद्या' प्रेत छत्र अपन अन्तस्थता पर आ हमरा का अधिकारी किछु करि
जे दयाद होयति ।

एक तो बिडकी लूट बेरो को भेदना अछि । दिहारी जय गन रानी जेना दुखित रहैत छथि, बिश्वास भेल । पाद से त-काल पडा सबद'क प्रभावित नहि होत । पैद'सँ प्रभाव होइ त न कोना नौगल मुदखोरन टाका लेबै पडए । एतए त गहो म'भर अछि ।

फर ईहा हृदि अर्द्ध मोलम वे हीयाक अभावसे भवार्थ दवाइ टकम हायतनि ?
भगवत् मान फर ईहा धनकारिण गयर सत्त्वज अ भेदी मात्र रीप नव विवर्ध
मिह, अन्न वे मातीक कवच रहि दवाइत' सकरा विविध द्विधाचलत पारिधर्मा
हेक, सन्ध्याय शेष सान्निध वाचक दवाइ आ पकडसत यदोत्र कुल अर्थात्
अचलसत भूतय आ संबन्धमाक दूध परिलग'। बड भिन्न संक। संया एक टा
सामान्यी द्वारा फेर कथह समाज दणभिह

[illegible]

मौल पईए बलरिया राति । बाबूक लघाई के कटर कटर। एक हाथमे लुई
माल जायते, दातर हाथमे छुट्टे। रात आ रात कइत वर्सा कि वर्सा संभावना
के बाबू छैन, मइ गइ मगन । बड़ कलार आ रम्य छुई पहिवा का निगबद
र नम बाबूक छूना पछाई दिम अछि । जेन मल रम्य पर गइतारी कलम अपन।
कोश्लीधै बड़का भातिम पूछथि— छिट गइबइ अछि कि बाबू काका ?

“नहि। किन्तु सरसु जकी देवक । तखन ते जावत एक बेर भवेह नहि
इय भासवण कदत्रैत छपणे । अदि भोजन परदेस रह्याह । बुद्धाचर्या मे हारदा
जावक मे हारदा ते उतर । जावन छिक, सेहन छलनि । अपन बेटा एका हरदम ते

आह नै बाबू कोना भयनाह ? भांगनमे एह भागल छमि । बँटकाराम कन

[illegible]

मुद्रा, ईहो नै भरि सक सारा मुक्त होवतीक । भरि मिथिला तँ सम्बन्ध सम्बन्ध । मुकादम की छीक आस ?

[illegible]

अब नामक धर्म की ना बर्दाश्त नै अछि हमरा नेन । हमरा बेर-बेर होइए मे
नेर हानक भय होअये सकै जना-सकै य ऊ देखैगो कौन उबर । तैत गृहक ओ मरुटा
अद्वैत-द्वैत एक्के अस्तित्वक मुक्त-मुक्त, बर्तमान अधिपत बनी मगीत रहैछ ।

गुदा कहाँ ? गाभ तँ गाभ नहि आब । ते पिताक छड़ाउक छहर-छहर मे मौक दयाक उमाखौं । जाइ तँ पीच टा पक्का कीठनीक बाहरसँ एक मकान (पीतरमे स्थिरक फोक)।

हमरा महि बुझाइत अछि जे मोरद ऐतक राम ई लख मिलबाक आग्रार-
रामा काँच भुन विभर्मे भायक नारी जन्मी कथः यव प्रब विपन्न महि दिस्य रजः
छी ? दिति, सोहन-

पुनः॥

फेर एकटा पत्र पत्ता लिखवाहा पत्राणि । बुझसि नरकान आबि गेल । जेबास
बिहटा । चिटठा पत्रवासे भय सका भय जाइत अछि । एहि बीचमे जेबास बिहटा
भट्ठाक सप्तम्ये रसियाक लगेदा बा जनीनक रहिगई । भेल जे रात्रि दिऐक । मुदा
नरकाक संध्याक कालेक काल गहि पड़ब । पड़ी ।

अनर्देशित खोलः प्राविष्टक अस्ति न अन्यास्य युक्ति गेने । निम्नलिखित छेक--

मन्त्राचार्यः

नाहर परीक्षा-कल ईस्वी का १८८८ हुये अलग । एहिना जीवनमें प्रथम कवि-
नाह से आलोचन । —तोहर भंडा ।

हम अकबका सेनहूँ । मै तँ हम कौनो परांजा दास कयनीहूँ एहि बाँव, मे
भाग कालो प्रगति । दोसर ओ ई पत्र श्रैयाक अस कोना छईए ? पूरा पत्र देखिनाम
बलि । पत्र 28 दिसम्बर 67 तँक छैक । पत्र भैदक छैक ।

क्या कह सकते हैं कि 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' को धोखा देना मुश्किल है? नहीं, बल्कि यह बहुत ही आसान है।

अंतर वा नै मान छी मुनिक नुनक नदि नै प्रवाह छी नै बलाघरण
जगत अगस्त्यक ई भाइ दासक एकटा पुनक शिशु + एते पतिव्रत वास करैत
धर्म्य कर्तव्य ।

—बेसी कहिलो भै छट्टि। बेकार समय बेधबि कहै करैत छी ? जाउ जाउ, धर्मिण नवव्रतार पर गये मरुत कथर उतिग क समा न गिये ता'रमि बह'रि भैउ ।

- अर्थ भी, लकर घनस्थ हमदा अहाँ लुकर काननहूँ । अहाँक ई सपरानिधि ?
भँपू मा कोछिन भेसाह ।

‘आहा हा, कुकुर कहाँ कहाँ ?’

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

—किसक ? बहदुरके ते सौदग लेक माझकि ?

अथर्व कृद् भावे कर्तृप्रथित - ईत्तं कुरुते

[illegible]

तख्त केर ई निगारफन छै फक्की बीबड़ी परक धार्काइ तर, के बोझान खोवओ

सूर तौ बूँह एकटा गम आ गाढ़ि गमक ओहि सवुक कथा कहै छी ।
 'बमो' बेह पहरक घटना ।

[illegible]

आकाश ब्रह्माय ब्रह्माणि वेदिकानि संहार्या नीचो भोगो भवति संपूर्णं उग्रम् वदन्ति मुदा
मान भवति होष ।

नेहने एकमदि छाईं ध्रुव सकसैन रीहनि जा रहनि छनि मे भूहागद बाधू
द्वेषधित : ओ पच्छिम बिस कूद जोरम दौडल ज रहनि छनि ।

बहुत आशीर्वाद देकर कहते रहते हैं—'बोर्ड ने
 शिक्षा का दर्जा तोड़ने का काम करवा दिया है।' (१)

श्री श्री श्री विनाय विस्त्रोके वक्ष्यामि जाह्नव ग्रीक मानव एकटा आर खुब ऊँच
स्तर सुनयनेक— “सुनरा जाली करै रे हेऽऽऽ। दोहरक ओ दुर्गास्थानक बाद, बचवाहि
अत ठगहि राख्य ठोक बहुतरास छैक हेऽऽ। दोई। नै सँ कोय हुनयि मेनी रे...।”

गहि आह्वान पर एकटा छीड़ा मुगगा धरिया जामैत पचिया सङ्गित पढायल
नैक लागि कऽ अही छीड़िक पाछा पाछा ।

तकर बाद जेना आरी बहुत छीड़ा छीड़ी के एहि सोर करवाक भवैत हुआ-
तेम होइक और एक पमिवासीमें मभ ओही विषयमे होउन जेना बीइभाक प्रतियोगिता
हो । महानन्द बाबूके अदात सतसमि जेना कहित बंसबाई नद किछु बड़ा बड़ल
छैक । किएक तँ बाइ-ताईमे कहियो काल क्षरण, जकरा जेना लोकनि 'रिस्का' कहैत
छथिन ते घाँटल जाइत होइक । जेनी गंभीर नहि होइत ओ माथ एतने सौजन्यिन
के अपना हाथ के तँ एम० ए० ए० मातेव बाइबिलस फेन धोपित' तहि कथा
नकल ह सत्यत त, 'जगत' मुदा हनक दुःखधानते जिवि नः तँ तउ कनकाक
मेव सैखबाक छनि तँ ओ तेग अङ्कारनहि भडि गेलाह ।

हृदका मध्य भाग में छोड़ा-छोड़ी छोड़ित आगों कावत रहनामि । एकपदिताने
 उत्तरिमा कइ सेवों के धड़ित ओ मध्य दीर-अतिवर्धिताने लागत रहत ।

जाह्न-आहुत महामय कावूके वृक्षपल्लि से भरिबक ई मेला मम मेला देखऽ
दुर्गाभाने ओ रह्य अछि । ओ बषम मेलाह दुसरे कछ ओ पुरबाक कसमे जगत
दुर्गाभानक अनोरम नीची समनाह ल रह्य बत न कैस्टा लाउ करीबन, सोच
बाधन दुर्गाभानसँ अछि दोन जे रह्य छैक । दूनका एकन धरं नहि भवसनि ।
एक अग रह्य अनुमान जाह्ननि मुवा नहि भरकर सकनि ।

दीर्घत एक डा लोकरके चिन्हन रोक्नदिन—'किन्तुमा की बात छैक हो ? एना किएक दीर्घत जाइ छै मम भरी ?'

—'भारि सगरि गणैए, सैहें वाह छिए ?' ओ कहलकनि ।

—‘धारि ? कनऽ हूँ ?’

— 'वैह संसवादि नमः' १

इसका नाम भी बदलने लगे। किन्तु इसका मुख्य-कार्य 'महा-देवक' ही रहने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

महा-देव ही मुख्य-कार्य ही रहने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

यही टोका-कानि ।

—'मैने । हमार कहे के मतलब अछि जे गोबरक बासो कहीं नफाह हो ? हमारा नाम बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

मुश्चियाजी एक धातु गुप्त रहत केर बासो कयल्लह—'मे ई बड़ा चित्ताक बात । ईच समस्या । एकर समाधान मुश्चि हएन करी ।

—'बिस्कुष मुश्चियाजी । बड़ आवश्यक ।' एकटा दोसर मांय मरुणक उदघार छुटल ।

—'हमरा बनेत एकर एकाद टा समझल होइल छैक ।' मुश्चियाजी कयल्लह ।

—'ते की ?' एकटा दोसर भोपू साक दिनअ जिज्ञासा ।

इ, जे आइसे एहि मरुका सड़कक इलाकामे सतक भामाजाल गोबर करम लकरा एक ठाम जमा कयल जाय आ ओकर कोनी नेहम उपयोग कयल जाय जे एकरा समझक कयल्लह कयल्लह ता मरुणक । बाइसे मेह । उदघार कयल्लह नहि ते रोज गोबर वासो बर्जनी देखत । ई ते ठीक नहि । ते आन ई नामक जायत आधिकार मरुणक भेल ।

—'मुश्चियाजी, बड़ ठोस कहलिये । हमरानो कोना कहिन नहि । रामजी एकरा एकाद टा समझल होइल छैक । बाइसे मेह । उदघार कयल्लह नहि ते रोज गोबर वासो बर्जनी देखत । ई ते ठीक नहि । ते आन ई नामक जायत आधिकार मरुणक भेल ।

इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

—'मे ते एकर भेल ते । मुदा भइ । लोकनिके बुझने होयत जे सरकार नाम-विक्रममे लेम । एकरा मरुणक । बाइसे मेह । उदघार कयल्लह नहि ते रोज गोबर वासो बर्जनी देखत । ई ते ठीक नहि । ते आन ई नामक जायत आधिकार मरुणक भेल ।

हमरा बिचारमे ई गोबर संपद कान्ति जाकऽ ग्रामीण गोबर गैर योजना जे नही बड़ समझल करत । ते आइसे होइत निश्चय भेल जे सड़क इलाकाक सभ ठा गोबर रामजी मरुणक ब्रह्म करवीत । ई मरुणक नाम-विक्रमक उदघारमे नायत ।

मुश्चियाजी नाम । मुख्य-कार्य ही रहने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था। इसका नाम भी बदलने लगा। यह भी एक प्रकार का 'महा-देव' ही था।

हमर कान्तिबीक गोबर की ओ देख ।

—'मरुणक । हमरो छोट गोबर जमा कयल्लह ओकर किएक नहि ?'

विचलन बाबो देखके ।

—'ककर बाक दिन छिये मे...

—'हो हो, गरमिसे काब करे जात । छि; छि; । एना जूनि लई जात ।

मुश्चिया जी बुझोत्तम ।

—'कोना है लड़क मुश्चियाजी ? मुश्चि के हमर गोबर, उदघार कयल्लह नहि ते रोज गोबर वासो बर्जनी देखत । ई ते ठीक नहि । ते आन ई नामक जायत आधिकार मरुणक भेल ।

—'बेज ते एकटा कक ।' मुश्चियाजी निश्चय कयल्लह—'आमा-भाभा गोबर बुलू गोदम बाटि लियत । समझा जायक कक

—'मे कित्तो जी ? आमा-भाभा बियेक बंटावल । गोबर हमर छी आ हम एक मरुणक नहि ते रोज गोबर वासो बर्जनी देखत । ई ते ठीक नहि । ते आन ई नामक जायत आधिकार मरुणक भेल ।

—'बड़ मरु नहि मरु । जान बड़ देता । बुझ महिजन । केहेन दिव ते

महानन्द बाबू के नाम से जाना जाता है। मुन्निबाबू का नाम भी इसका ही है।

आकर लाली हाथ में लेता जाता था। महानन्द बाबू ने बहुत दिनों से निवचन मुखियाजी को नोक छवि आकर विप कऽ निमाहके हाँकने जपते। निवचनके नाम से जपते। ओ सुनना एक सन अपन कर्त्तव्य सोचने रहता। महानन्द मुखियाजी पुछलिन—'की महानन्द बाबू? बेजान कहाँसे?' महानन्द बाबूके फीस आँच गेली।

—'बैजान? बेजान इतना कबलिन अहाँ नोकनि। इनके ओकर बेटी ओकर बेटीके मारलकी, मोहर छीन कऽ छोट केनके आ बाप अगने आकर कपार पीढ़ केनके, मकर लाली अहाँ आँचके निवचन के इनाम वऽ रहल छिएक ओ खुब कमलऽ। ई सँ अद्भुत म्याय भेल मुन्निबाबू। नाम के तँ अहाँ नोकनि मुन्निबाबू अहाँ समझ करा कऽ ...

—'महानन्द बाबू। नद फालिहिन नति जानू। घमक एनअ। मुन्निबाबूके एनन कप कहल एकदुर्गम सेकावा तँ अहाँ एकटा ओपू ला कऽकय महानन्द बाबू दिस। मुन्नि बाँ म्भिर रहलाह।

—'अहाँके मुन्निबाबू भवमान छवि चामोजी—जी हजुरम एह घर साफ अहाँ मूर्तमे आ पानने टाँड रगत रहने। महानन्द बाबू अहाँ के भवमान कऽ नोकनि छवि

ई एहने अन्त्या कयनिहारक कयो किछु कहि लकीए...बीचमे मोपू ला मोन्निबाबू जाकारन दऽकय रीम ... महानन्द बाबूके सार के जलपट्टि इनका कपार पर मोहाइ लाठा कपार आ ओ अपहरि कटैठ बेति रहलछ डामहि।

मकर बाद तँ ओपू चामोजी लाठी चलऽ लामल आ मयवह बुझ उपस्थित भऽल। स्वाभाविक छीक तँ ओपू मुखियाबादी आ मुखिया विरोधी दू प्रकार नाम-लाक छन तँ खुब जमि कऽ नाडी बरिसल आ पढ़हि लामि गल।

प्रात भवे महानन्द बाबू आ ओहि हरिजन पर कारट कटि गलेक। मुखियाजी ई ध्यान देलखिन जे महानन्द बाबू वंगा करधोननि। समाज विरोधी कपके रूपमे नामक जानि-अवस्थाके मन्द करत छवि आ बैक-बाह करिवाक पालिठक करत छवि, हुनका जेहलसे बाहर रहल समाज आ देणक लेम 'हादिकारक।'

मुन्नि हरिजन जे बेधाव लेलकी नाहिमे ओ कल्लकीक जे मुखियाके बेसी तँ मोहरक आता ... नाहरि डामानदार दू करहा मय उगाव हाऽ। तँ ओकरा मकर एकदिक छवि देणक लाठा पानि दयने जयने। जे तँ महानन्द बाबू पर हाथ डालेक चपलबा। प्रात अन्त्या नद तँ ओपू अंगन धारक बान रहलिय...

महानन्द बाबूक एकरा नद का पानेन से मलि शोक लेनो दयने रहलनि किछे तँ हुनका बेर-बेर ई घर होत रहनि जे महानन्द बाबू मुखियाक लेन उम्मीदवार हवे करताह।

मुन्नि परिस्थितिमे एहने कोना गामक मिम्सक तात्कालिक अंग की अऽ सकैत छीक जे अनुमान कयल जा सकैत। ओना पात्रा दिनमे निश्चिन शमनो राबतक दिया पुता लाठी लकऽ मइका इलाहाक मोहर जमा करबा मे नैलात रहैत छविन ना मइका ... मोहरा मय ... मय ... मय ... मय ... मय ... मय ... मय ... मय ... मुखिया जिवितमे मारचारक मोहर तँ मयवह कयल जपतेक आ गामक मजदूरीन विनाम कयल जपतेक।

ओपू गाममे एकटा अफवाह एमरन छीक खूब जोर तँ अकरा लोक हरिजनक ब्यातन मोडिक उठोसके जे 'जह बाँहि ओपू ला' मयक बह मरी छनि। धातक दूटा रीम छनि आ तँ मुखियाजीके बेचारके बेजी बाबू अमकरे निवचन रहैत छनि। प्रात मा मय लाठीक डरे मनमुकाल तने छवि।

आ मुखियाजी महानन्द बाबू अंगमे मुनिमके बराबर मजि कऽ रहल छवि। □

अवसरक लोक

महान् प्रसार आ वैमल-वैमल शिव केर बनाओल जाय जेकरे दाहिरी सोमि रहल रहिष नखत ओहका समाचार होयत रहेक । एकाएक खैलापल मन ठहकि मेलाजि, किएक नै आकाशवाणीमें सभ टा मनानार बंजा आ वसुना नवोक बाहिरि प्रलोपक छवैक आ नागभय एहि नदी-नटपर बसनिहार नभ टा भयर हऽ समाचारमें कहल गेल छैक जे फनो डाढ बंजा भवराक निगानसँ धुँक बाँट ऊपर चलि रहल अछि नै समझा धुँक ।

महज प्रसाद आक बहुत रास सम्बन्धी सभ रहित एहि कथ अहममे श्रीक
हाम जनिका विषयमे समाचार ई एहि त्रे अवस्थित सगरा जमल एहि आ कथ हाम सँ
आपनिकके पतावनी द. देल गेल रहैत एकर कोरक, सुरक्षित स्थानपर सभ तय
बाक लेल ।

मक समाचार प्रमुखतः वार्षिक प्रकोप आ लकने जमराक धरमे रहैक । जेस
प्रमुखक अपनो पहरमे सता खतराक निमातमे बहुत जार क' रहस रहनि मुदा
अपना दू निजिमान रहसि किअक नै हुनकर घर गभाक काजमे बहुत जैवर रहनि
आ हुनक घर धरि संग कैं अवजामे करीब-करीब दू टा खतराक निधान पार करऽ
अवजामे नै अपना द. निश्चय, मुदा जेता दि गोक प्रपक पादुपरा सम्बन्धी सम्बन्ध
विषयमे काजमे विभिन्न रहसि । जेद किन टा क. गोक छत्राह किअक नै अविश्वस्य
रेम-गोक वन भऽ गेस छैनैक आ दस किपामोटर पहुँचामे पचोम कीर्मीमोटर लप
करऽ भडि रहल छैनैक लोकके ।

[illegible]

सुधारण, नें लोक-जगत् अन्तर्गत आ अन्तर्गत रहल । सत्य-मान 'उपवर्तमान' सभस
आ नजरीत आ समर्थित रहल । यन्त्र-ज्ञान सभसक वृद्धि आर नाशिकता (आना)
आवर सभसक निरी कियनिक सभ बेस आकर 'कोर' आ 'कोर' सभसक सभस
समय पर सभसक अथवा, बार्तमे समय पर रहलक हुनका 'सोफिस्टिक' सभसक
आरी नहि लयेत रहल । मंत्रीजी सभसक आ अहसासादी लोक, नें अन्तर्गत
हकाद कियनिकार कर्तव्यार्थ सगाइत सभसक अरि सभ एक प्रकारक निश्चिन्ताक
सगावइसमे जीवैत अपन अन्तर्गत सभसक सभस ।

आना वाहि वाहि जयसापर मेवा कि कय टा भूतल संस्था सभ भुरकुरा कऽ
 ठहै पहिँ आ 'शहत कारे' मे जूमि जाइत अछि, कय टा बिच जन्मल नवाजमेकी
 मऽ। सभ जेनि कऽ पुरान नराहुनकाक सज्जाम जूमा पैत ओक जा सपै ११५
 भगिन अछि मे सभ जालू भूत मल रोका। एकल-कालि सभक श्राव पराउत सभ मेरो
 सखारी प्रेरणा आ आदिसँ सोचय कऽ मय दैत आ दोल-मोड़ला मे राखी। 'नवका,
 दू व पुरान कपडा। सभ मीठि कऽ मकहटा फाँट आ जखन प्रभारी जालाक दशरथमे
 तकर बितरण समारोह' सनाबन- 'वाहिसल क्षेत्रमे जा-वा कऽ।

एम्हर रैडियो पर, अखबार सभसे सही बरामद स्यासीय बड़ जादसी सभक अगिन भउर सभ बस सभक अउर वी अहोसोचक सभनना आ सतिना समस्त सविता लोकालिक वसतक सभ वताउन प्रकाशन प्रसंगत भउ रहन अविन भवानार एह रास सभ प्रसारित हाउन रहन लोक आहम सतिन्य सभ लोक सभक सही रहत छनैक आ मुखिया प्रचण्ड पदाधिकारी वा एही प्रभुति सभक सभके जान-बुझा 'दिन राति राजन सभस भौट चरन करत सबाक जे बाहुल्यिन' सगत मूख मुखिया गृहपालीय वा रहवाक अवरि सभ सवातर प्रसारित भउ रहन छनैक वा मुनखला वुरम्ह सभक सभके मनके आवा आ विण्कास जगेंग छनैक जे कार्य भउ रहन छैक ।

रेडियो वा अक्षरकारक समाचार नभक्त सब गामक बाइर्स पेशवा रह्याक बात
नवन छविक आ काउन्सिल प्रमुख प्राप्ति भेल । ओ समयत तिन दिन इतरता कारकी
नि छनैक इतिक सभक उचित व्यवस्थाक मेल सरकार नै अधिष्ठे बहुत रास मित्री
प्रधान मन गहो सक्रिय भलि । ओ लोक सबको उपयुक्त स्थानपर लऽ व्यवसाय
बाल्य, एतंक नाब नै एक ई-ओ जोकर व्यवस्था भऽ गेल छैक । बाली-कल्लो देगक
कठका-बहुका, औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा मेरो वस हजार पाँच हजार रहल सहायत।
बापक हेतु बेन ऐल शाणिक इन्क स्वर चर्चा होएत छनैक जा माँक मुनैत छल, कयो-
कथा नै खुब आश्चर्य जगुमन करैत छल कयो-कयो मुनिक डिरकल होइन छल ।
आश्चर्य होईनमा लोकक कहल छलनि जे समझा देख्यारी छैक या एकरा दाल्द
अने केड मर्कत छैक सरकार से बनल छैक ।

आपका शत्रु बड़का रत्न मंजरी राखी । स्वास्वयं मेरी प्रिय हीनताक छवि । अनाद
स्वास्वयं मैं छेक आदमीर । मैं एक अनादमीर त पदार्थ छवि । मैं एक छेक आदमीर
वृद्धि तथा समस्त रत्न रत्नको जगत् में सब प्रसन्न छवि आ मीनत प्रजापति नाम
रत्न मे आदमीर आदमीर । स्वयं प्रजापति रत्न रत्न छवि । आदमीर प्रजापति
धनवेदके ठाढ़ी करती है ।

[illegible]

अधिकांश लोग । मृदा कचमिहारा लोकिक लेल किछु करबो कानो मु जायसो
नहि ।

—'श्री काम की भेलैक' महान् प्रसाद पञ्जिका ।

[illegible]

48 □ गंगेश तृष्ण

साम्प्रदायिक प्रथा जोषक मान कलम एवं छत्रनि कोनों टांग जाति पर कलम सामान तांत्रिक, योरी-यो दम व्यवस्था प्रदत्त । ता'र ३३ श्री कलमधिन ज वाही जीष है, योनों साधुर ह । अभी तो एक घंटा बैठ करना पड़ेगा' एक घंटा में टांगकोन कर लीजिये ।' भाई माध हो जायदी तो हम क्या करें ? सरकार साधन देनी है नहीं सब हो वो जोन से इनका बड़ा बाढ़ग्रस्त क्षेत्र संपालना .. । भाई हम कोई है इसमें मनमंज नहीं .. राहुन कार्यलय से चीन रहे हैं ।' बांगा राखि दलधिन । बडा किचिक हकि जायन कोत्र श्री विरगन-ने वेना प्राथ घोट व लमन । मुदा हम न सेन रही राहुन कार्यमें किछु लम्बक मकिज भाई करन । आंगवड ही दण कोनैक । वास्तु अधिकारी व्यक्ति सनभू पान विरगन देहुनरर पामक वेस पैष वसोडा मेहो राखन छत्रनि, ओ अधिकारि नर जवव देनिहार व्यवस्थाके प्रमोदात्मक भाषाई कहलजिन — अथवा कहू । साधन सब वसोडार यही किछे दूजे हैं । अरे इतनी मया करन हो बाढ़ने हो गो एक ठो 'बीर' का इत्यनाम नहीं कर न सकते ? किसी से न स ज पा । पान ही है । भूखरा' जोर मिल जगते है ना । राहुन कार्य कर जाते हैं । भेद्व सोम । और वहां सरकार की हालत । यह कि माय बो-यो बाही माय दो जौन डगने बड़े क्षेत्र के लिये...

—“मैं दूसरी जीव गई हूँ कहाँ ? क्योंकि पहली जानों को सबीर तरल गई है
दूसरी ?”

—'सर, जबे बरा बाल धाने भेडा हे : रीख नहीं रहे हैं मूख गये हैं सब ।
भरायशी के पास भेडा हे ।' भाता तो क्षीणा इत्यादि मैंने बहुत बर बाद देखि कोण
करते कहा हे ।

एक मध्मरक चम्पन, माहेबके रिसावत कल्लानि आ फेर हाहे करड लगलाह । गहव प्रभल जेवनिम आ नून जोरम गुहक पान चिबवड खनवाह । हमरा तें जेगा, पाणिनक भोंटे बीकवड रहि नाय पडल । बयौ ओतड हमरा कुन गोटेक उपमिभिके महोव नाह देवड बाहि रहल खम । जो भम अपम ह्रीं-उठठामे मरल खम । हादि कड हम ओकरा भोडणीमे पोत मोलल । एहि लगनं आं सभ जेना बीकड ।

कां मात सँ हौ ? एक नोटा पृष्ठनक ।

—हम यदि भीष्म साहित्य नाम के किन्तु कट चाहें छी । हम 'साहेब के' कहिये, या आदम तबक मुताबिक उकड़त नैहूँ । —हमरा काम दिखत ।

श्री मन्त्र कविधन विनय शोभा प्रसन्न—'आप किस संस्था के हैं ?'

— श्री मै । कोनो सम्पत्ति नाहि छी हम । हम कहलियेक मै जेना हमर
 ई गण भोकरा तभके बड़ अनोल बस्ययै, अमसाहीन ।

[illegible]

१। एकादश महा विराजित आ शङ्करस्य विष्णोस रहस्य १५३ गङ्गात लङ्केश्वर वाजस्य -
१७०। श्रीमती लतात मेदिता विन्हाती कार्य की कर्मसे रहस्यत सेहो लुनियो ।

—'की ?' महेश प्रसाद पृष्ठपश्चिम ।

जे रांटी ओ स्कुल समर्थ बना कइल अनेक छथिहू आहिमे बहुत रास
 छी जे बहुत गजब अभिन कइल रहैत । एकरा प मनेत छी की ए जाम-
 डसि अनेक छथिहू नकरा ओ काटि ठीक अनेक छथिहू । एकरा नकरा सर्वाओ अभिन
 छी । एकरा मनेत छी एहि नकरा छथिहू । एकरा मनेत छी एहि नकरा कएल्ले जे एकरा
 कइते छथिहू नकरा रेकर्ड कइल्ले एकरा मनेत छी । आदिष्टक नाटक स हांजन रहैत छैक जे
 नाटक समर्थर ।'

—आप छह, मे कय पत्र लिख रहे ?

तब मैं की ? योंग छर्लक जे भोही स्कूलक एक हा जागृक बुवा शिक्षक
के ई शायकारी भेटि जेब रहूक । ओ रावा-रानी एहि खुबतारें प्रभावित कयबक
आ भोहे श्रीमती समार नेत्रिकाक कहल। मया कऽ मऽ आय जेब जईया रहनिहै ।
ओ तैयार छल । आ हथि देनकनि । देवाहकनि ।

भला मोक्ष क्यों ? ई शून्य-कारण किछु मोक्ष व्यवसाय नहीं है भार की ?
औ अर्थ होता बाजल ।

—ई नाम सर्वोभे सत्य सैक वि. व्यवसगत इय्या-देवर्षे क तहि ?' सनेन प्रभाव
संका उल्लेखयित ।

अविनाशक ईश्वर ही नहीं। टीके लौक। सुनेछ छी में जे कि समाज में विनाशक ओहि संस्थाक अन्वेषणा सेहो कोनो बड़ पैघ मर्यादाकारीक स्त्री अछिनि आ जातीय राजनीतिमे सब संश्रय भिन्नकर बरहहस्त छनि ।' भुवनेश्वरजी ।

[illegible]

—ई क्षति भीमती लघाज केतिका । अत्र कामिह ॥ कृतिवस्तु सभक सेवा कउ
रतन न जा वृती न। रतन नमि पाठक । नी नामनिक प्रोचन। आ नानल निर
रतिन प्रोती । अन्तः ३ गीत । मरत जगद सा रतन रतिन प्रोचन । मृदुल मरतो
रतन । आन नरप्रतर मेहो ।

कुन जीव, तन देनाक बाद शिकार कर "बन्नीको" लड कर मर्ति बढाउ गीरैत
देग चरु ब्रह्मि मर्ली काठकमरु, मरु हमराय प।। सम्मानार्थी आदर होइबाक आ-
क्रम ॥ ३३ ॥ एउटा बन्नी मरु गीर गनरुमरु बादनी कठिवा नै किरु, बाघर
प्रकारक जसगीर।

नाम प्रक्रमसे महाजीव कुल आदिने विनिष्ट वनत । पादो-पादो धूप बरेन ।
 लोको मम साधारणतः सम्पन्न वनो । नभः अङ्गुलिपर कुल मिलातः एकदो दन्तुष्ट
 नभः । लोको अङ्गुलि कन्तु नहि । जगदीशो सम्पन्नतः नभः सन्तानो भरण-पुत्र ।
 बाजा-बाजा मेरो । पक्षि मे कुतः सम्पन्नतः बाह्य सुकृष्ट मरुकर दशक । नभः
 बाजा-बाजा मेरो । पक्षि मे कुतः सम्पन्नतः बाह्य सुकृष्ट मरुकर दशक । नभः
 बाजा-बाजा मेरो । पक्षि मे कुतः सम्पन्नतः बाह्य सुकृष्ट मरुकर दशक । नभः

[illegible][illegible]

अंग्रेजि जवनें सडकमे मिलिने एकाएक घड़ीघण्ट टमटनाय समर्थक आ बैठ
बाकी मेहो आसनाथ धरि आनाय बरुनऽ लमर्थक ।

कठपुतल तबदाक ओरा बर्का लटकने एकटा मुंशीजी-प्रकारक लोक अपन
जगह तऽ बाँटि लोरी में एक करीब। पूरा बर्का बाँटि लिखिक, भटकपर छोटि
इनकी भाँटा धीरे धीरे लटकपर गइल भए लगेई बरिजा नव-पुत्री बर्बाद करवाक
हक्का मुक्का लटक पर समेन-सईस ओहि पर झगटल भा पाद लुटलक। अपना सुरक
काटा में भाँटि गइल कलक केर बर्कावा मग आग। रीत मग में इमेने जे
अगिला बेर मुंशीजी पाद लुटलक तेँ ओकरे हाक लगमक पाद।

[illegible]

जबकि फेर भुशीजी मोरीम हाच वेवबीक आ क्षम जेला लोस दीकि कड नंतर
कड नेम । सभक जेणे सगल जाहक आ सभिकक हाचमे शेटीके वेवळत सुद्धा सभा
सभक आशि भुशीजीक हाच पर लागल रईक ।

56 ■ मयिज गुञ्जन

मजीजी कर सुनने सुननेक आ मज सुन मज मजके मज मजके । ओकरा
आ धकपेन, आ मज आ मजके मज मजके मज मजके मज मजके मज मजके ।

अभयसे पाई नाम माह रहैक। एकद्वे मे संभलन। मुंछोत्री दू बारि ही नमका
कुम्हवाही मुटकेक आ भरि मुट्टी मूर आ जावा।

[illegible][illegible]

आदिम ई. पूर्व आ कोनसे आनाक, अशीचटक एव दुस्साभुल्या कुर हात
जान गेल. शरीर असायम जाति कपार ~~जान~~ जोडाक विम जमन रदत तेकर
ठहाम धर। जगान कुबेक कने छिनायल। पूर्वक आ कपार भूट गेल हायसे नुठबाहा
दुपडाही लेक।

गृहि श्रीक लेखर शब्दाणा वेव्यापन । धनमे एक लणक लेख चित्ता भेज, मान
 १५५५ लणकवृ कौता मन्नामारी रे त्वि रे त्वे रे । लणक वीत कष्ट दिव एवं रे
 इहेर मन्ना १५५५ लणक वीत त्वि लणक दिव मन्ना लणक लणक लणक
 लणकान्न क्तिके ? आशिर ओज्ज की मड लणक लणक एककर ?

अभ्यन्तरीय शक्ति का प्रयोग करने के लिए हमें अपने मन को नियंत्रित करना पड़ेगा। यदि हम अपने मन को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, तो हम अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते हैं।

अहिंसा चरित्र कल्याण पर सो रहय, से बुराटा करीब करीब गंगा हाथपाई जा
हयस रानी रंग से बर बरानर बरानर बरानर बरानर । यम बरानर बरानर बरानर बरानर ।
पाछे भाषी एकटा कल्याण बराने भाषा बरानर भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने
रपर, बराने बराने बराने बराने बराने । भाषा बराने भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने
मुराक भाषाभाषी बराने बराने । बराने बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने
रहेन । भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने भा बराने भाषा बराने

મુર્દા મૃત્યુક ખાગલ □ ૬૧

मिथुन बंसाए तीज चलि रह्य छल एह रात्रिमे कुस छो गोटे । पारिदा कन्हा देविहार
ना । एकटा कलमहार, एकटा सुनयना देविहार बस ।

पूरना जीवकाभा म्हा'र' इतु मय'र उचार म्हा' । करण' वस' लजीस' विद्या भव
मंजक ।

कौ करीक द्विविधाम एक सव का रहिऊ फेर हम सकयर दिख गेसुते ।
 १२०३ नन स्वयंवाक हकम । भावन न ह । करिविन दिव मति गेसुते ।

सूत्रन आशयः रिता एक यज्ञ वेत् । तथैव सज्जन छर्चक बारह एक मठाक
मदस्ता नयेन साधनाम् नयेन अव । एतानि निष्कास्य इत्यादि वाक्यानि
अथवा आशयः सद्यः सज्जन एक वेत् ।

[illegible]

हमारा वार्षिक साहस्य १०२ नव वर्ष। मन का मोक्षन विरागत्त धरु लायम् ।
ते सुनयसि शङ्करं ते विमान ना दृष्टव्य किन्तु मह्य शक्तिर तं म वृद्धं सखी
बेदा दिग्ग ।

गन्तुं त गता आसम् ते जनि करनिह्वार वासदरनी साहस्य कन्दु सेत छयित ।
 विपदि दुःखं धरि भटत वाचारे धूरः पश्य आ पुन डाक धर दिस विशा
 भलह

असमयान्तक होता है बहुरंग सड़क भ्रमों का कवर दिए हैं ये सड़कान्तर्गत
कमरे दिए गए कवरों की माहक तरंगें पकड़ें, कलमों का टाउन वरुण आर्तनयक वरुणा
उत्तर-वर्तने कृतमात्र दिए का राखल जो आकरा अकल घगन अदृग रास तबका
माइराज पकल दल्लापल जयानत र-मेनिहार अर्द्ध शिशु धुवी पर पाइ फेकते
रहक

राखल मित्र-मुद्रादि टांग राखल एकटा बूढ़-एकमात्र नाक बँसल, के बनेउ,
नै बनेत। माथ बैसल नुपचाप।

58 गणेश पुराण

ब) नूर अंकि जिगू मुर्दाक । वता मेहा भः सकं छर्नक पीप भाइ, जिती क्यों ?

[illegible][illegible]

उपर्युक्त प्रतीति के अन्तर्गत अथवा अन्य कदाचित् विभागों विचार, लक्ष्य-विस्तार करके प्रत्यक्ष प्रयोग में लाया जाय। अथवा अन्य कदाचित् विभागों विचार, लक्ष्य-विस्तार करके प्रयोग में लाया जाय। अथवा अन्य कदाचित् विभागों विचार, लक्ष्य-विस्तार करके प्रयोग में लाया जाय।

[illegible][illegible]

एहण साधारणिक बीमारोगेन आवेता ये प्रकराएल मत मनिष्क लेन हम काहि
 छठ वने धरिक कम अपमानन अनुभव करैत थिय भनहुँ । आठ वांन पीय दसक
 देखीले रहितनियैक नः एता महि ठ पुरविय । पछाति कावी डाक्टर अमानान मे
 आठ वने नाहि बँधन । कहे रैव हमरा कहि देखक आऽ बज अथे भन किन्तु हम

મુર્દા મુર્દાક ગ્રામ્ય □ 59

जमीन की जे आ आदि समय पर कयनवि न रहत । का वरक भटुभय कह्ये । गमी भन टोहि-टोहि करैत रहत आबटा बाबुक कोनो पता नहि ।

हम हारत, चिल्लित डेके भीखके डेगक आभी जमीन पर बाट पर लहरने अलगायक हतास विकसल मचली तऽ लहियो चाहत मैदानमे धुरा बना लोक दिख गजरि नेव । तुमरा मने जे भी लोक रीत री उठिकऽ जाव कनहु छाहरि मे खल गेल हेत । मुदा आधरवे भेन जे गूलत रहत आ ओही मुझमे लिखिल, ओहिना थिल ।

भगन मे एकटा दमदम ठाढ़ रहेक आ पीस्टमार्टम होयबला अस्पतालक कोठलीक देवानक छाहरिमे पांच-छऽ टा दमदम रिक्सा बला जकां लोक सभ बीडो धुकेन चिल्लित ठाड रहेक । ध्यान गेल ओ सभ मध्य करैत रहेक—मानव नै, पयसी अथवा डाक्टर बाबू जाव कछती एकदऽ योगमातम करी । भेलऽ । आबकऽ पूरा बित एहने चल गेलऽ । को कोटा के भिखारी आब को घरऽ मे जाइकऽ उर खाइ सभ ?" अथनिहार चिल्लित आ चुकी छल ।

कछने वेत-बरीक जे एक-दू टा डाक्टरनुमा लोक आ एकटा पुबिन सगे पुबिन-बुम्बेबटरनुमा लोक हलहमायन निकलनेक नै ओकरा पाछा ओ पांचो सभो ठाड लोक सभो अगनेक

ओ सभ लोक मैदान दिख आयल । आ ओहि चिनग पड़ल मुलत लोकके मेरिङऽ ठाड कऽ लेनेक ।

हमरा बेसी नेवत्राक धैर्य नहि छल । अन्दी-मै-बल्दी अस्पतालक हतास भिखारि मचलहु नै जेना पकने नहि बडल । तथारि अस्पतालक हतास गजर भेगहु आ सडक पर अगनी ताबत गजरि गेल किछु आदी कामा दिम ओहि समठगर बडक ताछक नीचा बस हुल-हाल धरि एकटा अगल दाही-मोछ आ गूलत बला गोलयो डैवेत छल । ओकर भूरा लोकक भागक मख बाबू काई कोनवे उठा-उठाकऽ ओकरा धीक हथमे घऽ देन छैनेक । ओ लोकक मायक पाँचल छल । तखन ओ अथन कनाह ओम्पी तरमे पड़ेबा दऽ कऽ ओम्पी कऽ राखन जीमाक बसबा मे री कोतो-ने-बानी एहीन मुलबी भूकेक मिराज लोक के । बक्सस निकालिकऽ दैम छैनेक आ भाँकमे दात-दखिना लैत छैनेक । दोर ओहीठाम उज्जर बिदिपी कपडा से गोलत आहि बन्धा मुकीक बगल मे भूद-काप जाल्ल बैसल लोक—बन्धा-मुकीक अथन-बगल अथनिहार-मोतिहार लोकक केकनाहा पैसा सबके समेटि कऽ बनि रहल छल ।

बाप-बेटा

बिबिलाक एक टा गाय । बाबमे कामो स्कूल गहि । जे हाकपर नै पकती सता । पर गपुडि मडा दूतरत । गान गारा क मख मोरिम म डर पल । अउ गमी वा भदवारि मे नै आभोर समस्या नै जाइक । कमलाक बाकि तनक धरैक जे भरि मौआ के पडाइत बाट नहि मूलेक । खेतमे लागन कखिन सभ बहा जाइक । दरबन्जे-दरबन्जे बाकि पानि हुतकी देव रहेक । जाइनि री खे क कोनहुं टा सीधा सपुन बाहर री अन्व पराअन । लोक के अन्त अर्थात् उतास परब क पर सपना नै य जाइक ।

अरि बाबक बिद्याथी के भरि-भरि डाढ़ पानि हैलैत कोस भरि कोल कऽ मछवनी स्कूलमे पड़ऽ जाव पड़ैक । बिद्याथी सभ एक भीद जे स्कूल जाव से बखल हास-वा मख कऽ जाइक गेलन पुनि कऽ मख बाब । पर आब कऽ जे स्कूल मे क नैहा मुकुर छाव आ ह नीर हुकी छैनेक । आ बापि य पयन लागन दिबियाक कस्तहि म मिगल ओ पछा बाव । पोपी पतरा ओहीना बखले रहि जाइक । बाकमि एतबो धैर्य माहि रहेक जे पामी सब के सधिया क राख नी तखन पुन एहो बिबिला दमक मेरऽ उथल पारबला नहि । असाधार आ आगतम पहिया वा बक्सल कोछाअल ताहिपर भतोवन्ति बिद्याथी हाकी छाईत वा मुलत ।

रमानाथ सहा बाबक आने बिद्याथी सब जकां मधुबनी आ कऽ बाटअन मधुबन पड़ल । आकशमे छाट दू भाव नहिन एक टा बहिन एक टा भाव । स दुन एहन स्कूल मे नहि रहैक । पछारि रहिन बाबकी दाद कयवेर अथन बाब सभ जिवर टाना जे हबहु पड़ल गऽ । मुदा बांगक दूर आ क बेटीक जागक पड़ल संभन नहि रहल । य तऽ जानो स्कूल छैनेक कहा ?

एक दिन रमानाथ पोपी जोपेन, हाकी पर हाकी छोड़ैत पाँचानर ओम्हि मेन छल आओर बिबिलाक कल्लतमोक अरिपर अकाशमे पड़िनी जाइत रह्य । बाब भावनाक आरिआआनमे रहेक । बीन-बीनमे चुनिये तरसे जोर से कहैत जे सुति गहि गेहेने बीन । भावत लगाचला गेली । जे सपने मे ठगरावै । मुदा रमानाथ के ओहि दिन बड चकती बूझाइक ओ भावक नात मुनिवहुं मूख जकां भागल । त बनहिमे ओपर बाबू बांगन अर्थात् दुष्टावनि — जाइ बूमि पड़ल अछि जे रमानाथ बेसी पागल अछि । सोनि रहनि ओपय मागल । बेसी कडा भेनेक अछि आइ की ?

बाबू, जानकी किस्म नहि पढ़ेक ?' अकाब से रमानाच हाह दूधलक पिता नै ।

—'कोना पढ़ाओ ? माममे नै कोसी स्कूल छैक नहि ।' ओ कहलथिन ।

—'तँ ओ हथरा सग मधुवनी नाहि ना सकैत अछि ?'

—'कतहु होइ से । लोक की कहल बेटी जति के मधुवनी थपलस तऽ ?' ओ लाचारी देखीथिन ।

पढ़ाओ कोनो अछाहा प्रान छैक बाबू ?' ओ कहलथिन ।

ते नै नहि छैक छी । परजव बेटीक विषयमे ओएह बुझबाक चाही एहि समाज मे ।

मुदा रमानाचके अपन पिताक बातसँ समीप नहि भेलक । ओ सुन-सुन रहल ।

तबत पिता रोजनीपरसँ योगमे पानि डारि, अतोरासँ भोजनी दिह पयर कऽ घासऽ खयलाह । तखन रमानाचक छटिघास भनि एक कानन बेसैत अगोछर नै हाथ पयर पोछऽ लगलाह ।

—'बाबू जी, आइ हमरा विज्ञान मास्टर साहब केँपर छल कऽ देलनि ।' रमानाच किछु दूखी स्वरें बाजल ।

—'किएक, जेँ पर कियेक छल कयलखुन ?' ओ पुछलथिन ।

—'किताब मे नहि कीउन मेलए एखन धरि ।' ओ कनी रोयमे बाजल । फेर पुछलथिन — 'किताब कियेक नहि कीउन मेलथ ?'

—'हाथपर लैया नहि आयल से' । आबऽ रैह हाथ मे तँ किन बेजल ओ थरोस दिथिन ।

—'अहँक हाथयें कयँया किएक नहि अछि बाबू ?' पुछलथिन ।

—'बाबू ई सब की पुछैत छल तँ ?' ओ कहलथिन ।

—'बाबू जी, सहाँ मधुवनीमे घर नै कीनि सकैत छी ?' ओ पुछलथिन ।

—'से किएक ?'

—'मधुवनी कतेक दूर छैक । हमरो एकटा घर नहि अना बऽ सकैत छी अहाँ ? मधुवनी राखि कऽ नहि बसा सकैत छी अहँ हमरा ?'

—'कत' सँ बीआ ? मधुवनी बेरा राखल कहूँ नभय होयत हमरा खुते ?'

—'से किएक ? आ रमेसक बाबू बुने कोना होइत छनि ?' ओ पुछलथिन ।

—'ओ सब धनीक छनि ।' कहलथिन ।

—'आ हमरा लोकनि ।' रमानाच पुछलथिन ।

—'गरीब ।' पिता जवाब देलथिन ।

अपना सब गरीब किस्म छल बाबू ? आ प्रश्न कयलथिन ।

—'जेनी सारी नहि अछि, उपजा सारी नहि अछि ते, ते बाहरे कोनो कसोआ अछि ते । कहना कऽ गुरुर चमैए । कहना कऽ पढ़ा रहल 'छय

'रमेसक बाबू के बेटी पछारी छनि ?' ओ पुछलथिन ।

—'अबस्ते किमे । ओ नै जरीम्बाह अछि, दु मण बीस सेतक जोतदार, गामक सबसँ धनिक लोक । हुनका धनक कोन कमी ?' कहलथिन पिता ।

—'हुनका एकेक सेन आ छन कतऽ सँ अछि देलनि ?' ओ विज्ञान कयलथिन ।

—'बहुतरास उपजा सारी होइत छनि । बीसोक साछ बिनाइ छनि । बरका बडका बैसवाइ छनि, खरहोडि छनि मे सब बिकाइत छनि । बडका बडका पोखरि छनि नकर मयाम मौछ हजार हजार टाकामे बिकाइत छनि... ।

'मुदा ई सब अहाँ के किएक नहि अछि, बाबू ?' ओ बीबाहि मे टोकलथिन ।

—'सब के नहि ने रहैत छैक एकेक रास बाबू ।' कहलथिन ।

गब के किएक नहि रहैत छैक सब किछु ?'

—'एहि दुमारे मे मात्र किछुए गोठस अपन धनक वणे, अपना जमा पूरक तारासि सँ अलकर बस्तु जात के बचन कऽ लैत छैक । नै बहुत भोकक हिसाक बस्तु मात्र किछुए गोठक कबजामे नहि अवैत छैक । आमक धन बिल पर बाज्जा कऽ मेनिहार अक्षित छनिक बनि जाइत अछि आभोर खर धन बिच आमक कबजामे जनि जाइत छैक से लोक भऽ आइत अछि गरीब ।' पिता न्यून गामत बऽ कऽ आँकरा बुलजोलथिन ।

—'धनिक केँ सब लोक बड मानैत छैक से ?' ओ पुछलथिन ।

—'हँ से किएक ?' ओ पुछलथिन ।

—'रमेसो नै हमरे बगैमे पईत अछि । ओ अपन काष्ट पोधी हेराय लेलक जेँ । मास्टर साहब ओकरा बेच पर छल नहि बँसै छथिन, कहिया नहि ओ देवदल डेगपर डेरा लगैत अछि । रहनि कऽ सज्जन कनि अहाँ स्कूल । हमरा नै पयर बड दगाड़न रहैत । आ बैबाबेच पर ठाँक हाइस पढ़थ ओ कृषी अऽ कऽ बाजल । पिताक आवृत्ति ओघ आ नानारीसँ उवाह कऽ गेलनि ।

—'ओकरा किछु कहबिन से हर भर नहि छनि ? छनिकहा सँ सब डेराइत अछि ।' पिता किछु धुनक स्वरमे कहलथिन ।

कभी खेप डेर-डेर छेन नाक प्रानकहा में । ओ पुछलकनि ।

—'बुला देबह काहि । भाइ मन नउ बाकल बुलाइत अछि । कनी एक रती पकड़ दैह ।' कहैत पिता भाईो डाम कानम पड़ि रहलनि ।

—'अपना सब कहिया भनिक हायब ?' ओ जिज्ञासम पुछलकनि ।

ते किएक ?

—'सकलमे हमरा बहक गार में भुख लागि जाइत अछि ।

—'आ कऽ ज जाइ छऽ नइको ? ओ पुछलकनि ।

'मे सँ मधुबनी गुमरीए गय पचि जाइत अछि । हमरा पाइ कहा रहैत अछि । अहो कहाँ रैत छी पाइ ? काए टा विद्यार्थी त जाना मयम कमखे अनेए । खुब खाइत रहैए । नहि म जेकीमे पाइ रहने रहैए । कीनि कीनि कऽ चिन्ता नइको कि बिस्फुट भइत रहैत अछि । हमरो बब मोन होइत रहैत अछि, बड़ ओ । बैटाक ई बात सुनि कऽ बड़ कचोट भेलनि हुनका । मुदा ओ किछु बज्जल नहि ।

—'बाबू ओ अपना सब सब दिन एहिना गरीब रहब ?' बैटा मनचोकाहि पुछलकनि । हुनकर ध्यान टूटलनि ।

—'नैन । सब दिन कतहु एहिना गरीब रही । ओ बुझओभाबिनि ।

—'कहिया भरि रहै ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमरो नाकनि सब दिन गरिब नहि रहब । हमरो सबहुक दिन फिरत ।' ओ बुझओभाबिनि ।

—'अपना सबहुक दिन कहिया फिरत ?' ओ पुछलकनि ।

—'फिरबे करनैक दिन । सबहुक मे ओ कानी छोड़ाइत कहलनि ।

—'काना दुई धिय म भए ?' ओ पुछलकनि ।

—'हुकर बाप कहल छलाह । ओ तान्त्र स्मरे कहलनि ।

—'की कहने रहल ?' ओ पुछलकनि ।

—'कहने रहल मे दुवस दिन कीनि जाइत छैक तँ मुसक दिन बनेत छैक ।' ओ कहलनि ।

—'कहिया ?' रमाबाब पुछलकनि ।

—'जखनी ?' कहलनि ।

'कहिया ?' रमाबाबकेँ पितरक उतरमें संशय नहि ।

—'कहिया नाँ खुब नीक भए पड़ि-निधि कऽ रीस भऽ जयबह । खुब बुलबुल जानी भऽ जयबह लखन ।' ओ बुझओभाबिनि । मंदि संग मास भरि लोक सबमे सेम भऽ जयनैक लगने ।

—'भरि गोभीमे मल बाता कऽ नऽ सकनैक बाबू ओ एक सगडा-पाँटी होइत रहैत छैक ते ?' ओ चिन्तित होइत पुछलकनि ।

—'तखन जवई ने छुनैक जयनामे । जखन सब लोक पड़ि-निधि जयनैक सब मोटम बात के वृत्त लगनैक, सब के ई अस्विकार भावि जयनैक ने जगडा केना तँ की लाभ, बनि एकमे रहलामें लाभ छैक, तखन सभटा संजटि सतम भऽ जयनैक ने । सबबा-फवाब नै बरतुए भऽ कऽ होइत छैक ने हुओ ? ते जखन सबके जाहि बस्तुक बेगना छैक ते भेटऽ तबनैक, ककरो ई बस्तु जवबंसी छीनब नहि जयनैक, हड्डाल नहि जयनैक तँ अपनामे सबडा रत कियेक हेनैक ?

—'ते मोना हुनैक बाबू ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना भरि टोलमे इनार तँ एकहि टा छैक । सब ओहीमेंसे पासि भरैए अथवा भरि । कहाँ ककरो सँ जगडा होइत छैक ? एकहि इनार सँ अपना बहरति भरि सब पासि भरि गैत अछि । सोनराकेँ बघलाह कहाँ सनेत छैक ?' ओ बुझओभाबिनि ।

'तखन लोक किएक मे बूझैत छैक बाबू ?'

—'भइत तँ एहि दुबारे ने होइत छैक जे गायमे कु-भारि पोऽ केँ बचारी भवारी भान राखल रहैत छैक, ओहिमे सुडा नगैत रहैत छैक वा सोसर बिम पापक बेसी लोकक घिया पूरा जपास पर्यंत पडैत रहैत छैक एको मोरी धान मजि देत छैक । तखन तपास पडैत लोककेँ नकनैक होइत छैक वा तामस उठैत छैक । तामस उठैत छैक वा तामस भान म लडाइक भावना होइत छैक । ई सब विषय पडला गुनवा पर बूझ मे अवैत छैक ।

—'पड़ि-निधि केसामें जगडा सब लागत भऽ जाइत छैक ?'

—'अबन्धे किने । जिला भरैत छैक तँ मनुष्यना ओखि सुनि जाइत छैक मयमे बिबेक अवय छैक तखन ओ सभटा बात वा परिस्थितिकें लोक जकाँ वृत्त लगैत छैक । आ जखन मनुष्य जयना बीचक बात आ सकसपकेँ डीकर्म बुझि गेल तँ संजटि किएक ठाढ़ हुनैक ?' ओ बुझओभाबिनि ।

—'छैक तँ लोक के मोना वृत्त अवैत छैक ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना बनी दुपित बडन । डाक्टर बजाभास नेलाह । बाबा लगाक जाँक कमलनि । रोगक लक्षण पता लगा कऽ ओहि रोगकेँ छोटपचाक औषध वेतनि । रोगी औषध खयनक आ रोग छुटि जाइत छैक कि नहि ? आबरी गिराव भऽ जाइत छैक कि नहि ?

- ਸਰਦਾਰ ਸਾਹਿਬਾਂ ਦੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਕੀਤਾ ?

— प्रथि रीणी : रीण की रीण में बसलक ? गरीबी, अज्ञानता और अपना
स्वार्थ के कारण ही कि अज्ञानता के कारण ही ।

—'त एकद जेन सताइ ? ओ दृष्टिकरि ।

—जानी बनद । चिया पवद । समारक हरिनाम के । लाक-नीकक विभद के ।
 सोना केर । जपन के । मुन अर मुनाताप करक के । बिहि रहि न । पन टा नयना-नीआके ।
 मूख मुनीनाक मेहो डयात राखि कऽ । जीवन भापन करवाक स्वभाव बनोलात ।
 दुमलहक बानके । पुछैत चिया आदी बज्रनयिन ने । बिखार सब किछु मुझा-मुझा
 रेत छैक मनुष्य के । कारी समस्याक जहि कऽ छैक आ की छैक ते बूझा दै छैक ।
 नीक जहा पवदऽ लिखबऽ त भवमे बसि बधवहक । तोहं मन सगाकऽ पर्वन रहऽ ।

गवत भानस अ नेल रहसि । स्त्री ओलहिम सौर कयलायिज तें माप बेटा
दुन गोटेय जडि कः क्षाय मेक मेलाह । लव जडतहि जेता माकां कालो मंथ पैनि
पीरैक । रमाभाय बुलनकैक । आगाम कटोलेक जाउरक मंथ सोडैत भात रहैक ।
भात पर सेतारीक दासि । कौतहुता अरु सानि कः दू-जोन कर पीरैत, घट घट
पाणि पीरैत आ बेसल रहल । भाकमे गरम भानक भभकेत प्राय नगेत रहैक । दुस्र
भात आ सेतारीक पणिगोह दासि । जो घेनन होइत उठल जः हाथ धोअः सभल ।
साथ कनबी कलमथिन खाद्य आ नहि बैसल । ओकर मांस फेर देग रहैक ।

ओ अमरानन्द का सुन; भाग्य । कलक कान धरि बध्ना कयलक । निन
रति लोक ।

[illegible]

रमान'भक्त मोनने संद वासिका गणकक ह्मनि पैसि गेल रहिक आ भूख से
आकर भासि ऐठल जा रहल छलैक । भिन्ने भइल रहल छलैक । काहू आन-
आन बात मोनने नइक । यमसैक अपना आँखि आ हृदयमे लखन आकरा अपना आ
गमक । एत आर दू आर वडय जगलक रसमन मरहल-पला । एत गेना कवन
सेवा आ मखर रहलै छैक ? जखन कि ओकरा अपना एकहि हा पैद-हाक मठ पर

66 □ पण्डित मंजु

काज कर्मज ठैक । पकरमे जुता धरैत नहि ठैक । ओकर छोट बगोह आ माथ निममेर
गुलम रहैक । ओकरहु मोरुतिनो कहुँ ठैक मोक कपडा-ललत । ओकरा भोन पदलक
मे बाङ्के मेरा नै पडने छिटल बरज आ मायक बेह पर तँ भो कहियो जग छरि
वद नका देखनहि नहि ठैक ।

ई बात श्रीकरा वह कदाव समनेक। एतए नहि प्रथम कि रमनाथ अन्ता
वरन करक रचना सकारक धिया पुता हउ सोचनक न हनकी सोचनिक ओणह हाप।
तखन परशुराम साहिक परिवार हउ सोचनक, अयोधस पंडितजीक परिवार हउ
सोचनक, सखा सा मेरणा हउ सोचनक सबहक सचना डिम्ही पहिरने क्या शकरो
चरनन नउर करन कता न की। एतए न प्रतियोगी करन कोवन होए, एतए प्रथम
एक भाषक। एतए हा सोझा सचनक मुओ नहि देखने कोयत। एतए ध्वनिक्षीक
कोन करन होए, एतए प्रथम नउर करन होए, एतए प्रथम नउर करन होए, एतए प्रथम

“कर उनका, माता भूमि माता विष्णु कर छैक ते केवल सुखी रहैत अति
 से उकलत होत छैक ते जाहल दीवैत मताई अछैत। जार कलाला मांसे सौअ
 ते कलाला कऽ भिमिदोर कटैत।

गल' किङ्क श्रुत ? एवम् नामक साक समसं वेदी तरीके साक किङ्क ?
सा वृषारिण्ड सा मोक प्रतीक फौता थड जाश्म श्रुत एहि वजन धर सो'ध-मात्रिक क
जाकर उणि पश्चिम्क थोर-गोर हांअड जालेक ।

रमैक वाचु भरि बिम फल जवर्न वक्तरीन, कयाने जहाज पसारने तंभी
मजाने सुब कयु भरीन द्रिध छति ? धुधर बाग प्रीमेक भोले सँ खटै-खटैक प्रण देवे
शैल छथि सैदा हुनका कइ प्रकृत न सुखी गोटो । सँसक-सँस शरीर खान-पान
जातर आकत । भात जे भेटबो कयन तँ ओतहु कटानहु खाहरका भभय भव ।

को रमानाथको आग्रह मान पति बैलक रामन अङ्गनक सहायको। प्राण दावि
सीमम नरकागी, हेरायक वृष्ट। एक दिन सममे पसरम भोजनक ई सुगन्धि अ होमर
मिर नन्द एउटा आ रहम अन।

श्री कराल वर करोट भद्रमय रह्य । रामि जना श्रोत बाधने हुंके । आश्रम
नहा गेय जा वेद परब्रह्म नृदगही गरी के श्रोति क पौर मृतबाक सेटा करइ जायस ।
व आकरा बुझाइन रह्यैक जना लखिमयास छैक, जे गरी से भार भयैत् । कथन
कर्म, भास ?

रखवारी

[illegible]

शाय तँ पक्ष लोकनिक को हाथल रह्यन नहि । जखने ने । अधुन पक्षेताम भूँइ
 दाँके स-वा परमान जने तँ निसाक-न-डावान आ जवने पक्षी नहि भरले
 को पक्षी, की कोट कचहरी ? पहिने पक्ष लोकनिक एना ताइ करथि । जखने । लोक
 पक्ष-न-रह्यो न-एल । आबुक पक्षेताक हासनि गएह । गरीब लोक जेना कए
 रह्यो

एक तरफ़े श्रमण करैत निबनन्तन चौधरा अपन नान्हूट, दधानक आपा
मूठेक स्यामपर साथे धारोक बेल्ह सन बनोक, आइसि कहिरन रहल। मूठ छलन्ह
आ कहियो जा रहल छलन्ह ।

इहेन मामक बालावरण आहमो हांड छेक, कबिया झुल्लपर गान नइकाय काइत-
 ५२५ खुब पोरि इतकी — कान बाँध भवत साका (कब कछु भेल) (क) गानम
 —ने तो की ! हय मताह 'ब' गेबाहे' रे ? गान में की पूछ छै, जे किछु भेलै ।
 या ५३ 'छेबा'इ होय (क) दोस गान गे'त नू गानगानि गान रहत छै की (क) ओ
 उल्लापन ।

—उत्तो। कारिहू क्षत्तं भाव्यं बहू टनके छल ॥ १॥ दन बल-मोने पडि रहल छलहुँ । श्रवो की करिहूँ, ई भट्ठा राटी करिवाबी बंशक इच्छा, इच्छा कोय ? ओ भावक जा जए सः॥॥

—से श्री कृष्ण '। प्रथम तं वृत्त' मे. यमस्य गानस्य सप्तमं वृत्तमिव चरकं जिनसी
 तथा रहस्यं, इष्टं कश्चिन्ना मनः, मन्त्र आ ।

वह मुना करे सदा मुने सब कमला पाँक भाटिपर महगरमं धान उपजाके

[illegible]

‘ਮੈਂ ! ਆਪ ਕਾਕਾ ਮੇਲਰੀ ਆਪਣਾ ਬਾਟ ਏ ।’ ਭੀ ਬਾਘਲ ।

25/11/2012

→ रघुनाथक पूरा धरिपार नका गाम छे 'इक' कसगदक मेय पंजाब बनि
चाठ । ओ बरगल ।

— मे 'छत्रकटोलीक येहो कलेको पगिबार ने सभि सेने मिनीपुडी, जलराइ-
मुडी, जाषाम िं काका जोइमनि ।

—भूदा ने कश्मिरी काका, मधुआ रोटी खादपोक' जवन मर्हया आ एहि
मात्रिक' पार्श्वक तेव क. मानि मै करै छै । चणि ने कान्ना होक नाम छल'कि' अनेक
सूत्र चणि जगद्वज सम रं अर्ज दनव देव कोम रंन मधुसूतियो ज'रि साद छी तै मान
दंगल दही । ' भो काजय ।

—ये भी करवतक ? केओ कि वन्द्ये मान छोटिक' काह सै ?'

—की क्या ? माममे सैन्यमे खोज है शक्ति एवं अत्याचार रोड़ी पड़े लगे कन्नो
जाहिमे सब दहा जाय । अखिल भारत नवा दुखमे मरल लगे हैं मनुष्य की क्या ?
मरवानों नीक हैं हैं से कन्हू बलि जाए । आत हैं बचत । हो आत छै हैं जहात छै ।
शिवमदन काका धनवाह । जात हैं शत्रुकोसे शोक' पढ़न । जो बचकोटा निमाय
मोदलान ।

—तुम तो साक्षात् मैं जैसे । आते सिद्ध होव । पाप छोड़िक' जैसे ?

—कठिया छरि नं जेबे । कोहीक मज्जा पहिण सधनी नाही दिन सोच' पडनी । गामने भीडाक आन होमो उपवास ? कोही पुरमा रेट पर मजुरी । काज सेहो नहि । लखन ? जिवनार्थम पुछलकी ।

—कोन उपाय ? जी चप रहि गेण । सरकार मजदूरी बढेनहीं । के पाछि मरी भुधि मे जाय रहिते मे भुधि के हमेशा आग काज रहि अछि । जाब भिज काय ? उपाये की ?

—मैं ही' पशुन ने दु-बारा दस सांकक बाज ही - ई गास । हुसके रहल । आब एहि दुसरे जवन तम मीचि रहल ही जे कतल भिकरि पली एहि गामसँ लखन नौ' में पशुन कुजल छल । साधार कर्जा आ पनियाह छऽ । समय अर्द्धन नै बिगुन' छै जे मे ए' रहल । आब ए' रहल । निबनदक बगाम'पर अकर बहुत अकर जकि 'जे पट दिवक ।

... ..

अरे, पट्टर उवाचा सब ठेकर ई छै काका । मूख नगीर न ठोक अछि ।
 ओ अछि ओ विवज्जनाम सुमापनन मायनाम जाग गल आयू ।

मायनाम पट्टर ई छै काका । तेन दिन जेहन अचरसै । विवज्जनाम
 काका विवज्जनाम सुमापनन मायनाम जाग गल आयू ओ काका रानिह नववर्षी टाक

गल कर खुका जागन छै जे कछु पाव सौभर कारण गाम अछिह जाहने छै ।
 ई साधिका जे आनिहान मूख नाक मजुरी भएल नै लोक जाग नैक दूरी छान
 गहरन । जाही साधिका कहि सकै ममा ।

—सेही की अघवार छै ? रे आछि जे खूब मुखसै, आनिह गीध नै जाहने,
 जगन आकर माता गिछु लफ आराम आ मूख आनिह जे खल छै । हुनकर बहु-
 बेदा लोक पहिरन-आदिन छानि न इनम जावक सभक भुछा हाहने छैक जे हूँहूँ सभ
 नै जाहना रहि सकै छै, अपन-परिवारक संग । आ एहि बातम जस सँ कछु वाद
 मुझन छै लोक आहिपर चानि पडैत अछि, जाहि गाम छोड़िह गहर वा परदम । ई स'
 एकदम स्वाभाविक बात छै । लफ नै आछि ई, एकरा टाकन नहि का सकै छै । राकस
 जेबाकी नै चाहिकै । ए पर प्रभुका गुण रहै गेल छल । कनक कानक बाद बाबल
 छल—कहे न' छह संधहा आना सने काका । भुवा सैबो हवय नहि मानैए गाम
 छोडबाक थल । ओना नो' न बुझिह छह जे बेहो फजह कछु कल ठाकुर बाबु बटाह

 ओ अपन आवाह करीध भेहा नहि ।
 परतो पडस रहि गेलनि । सुवा जमसल छै । पनोत ' आ खुआ छल

ई सब एहन भार चलैत छल । कास न' आर पत्रोसै साधिका बुलबाक
 बकरति आब गल छै । गिरन-थल बाबु ई सब सगलते जा रहल छलह कि अछिहरे
 लोभ आगत आ बहुत कास आ निव म बाबु नादल- इ जसु के आछ, बहकर
 जाति राही अछि । ई स काकी आकरा सभक सब रहित नै आछ आकरा सभक सभ
 एक आरो-बाहो मे खेबाह जाहय आ एरम एक पड्यन करत रहैए । ओ त' अ नुक-
 बादन सभस दिमल अछि आ बे-कुण-मजुरक सभस छेदाज करैए । ओ स एहन बनीत
 न नैल आछ जे मात्र आकरा सभक जोड़ो मे उठल बेगीत नाहू अछि आकरा सभक
 मारी म भोजन करत, लायल नै ग ।

... ..

नै पहिले निखल्लो से गाहुर बाग लोक छह जिआ न बहन बहरी छै
 जीवन आ लोक समाजक दृष्टि । हुनकर धर्मवचन दृष्टि स्वा संक्षिप्त अछ भेबा नै की
 जने 'आह' नवपुर अछि गामक सभदूरी क क लोभ पनैए पावा गिआह क
 क न नैही नै, आ बीकर सभ सगो मेरा बजदूरी छ क जीवन मिचैछै ।
 एहन नै माक काकर कुनक परिस्थिति एक छै, काजम दूक जे कियो एक छै ।
 गो-बागह-का जसि । ते काले जिआक ने बूते छह नो' सभ ' पुनज बहरी छह ।
 रविनर बेहो मने आगो की— पट्टा लिपटाक की भज्जर भज्जे बाओ नै
 रविनाह पुर्हिनाहमे काना रहने गुजर करै छलजिन । नोम नै छह, नवाइय जिआ न
 धीर गवा गहो नाचै । मभ भवै छै । कैवा एक दानम नातिक विचार ? एहि मुलमे ।

नो सभ एहन गप करै छह— एक दानम-मुही । ई देसिक अने नगीर । आ
 अपन कलक-काहिरि दर्शन बजलाह बसि गहरा

बाह छै नारे मुझ, कथा नै स-सगल छै । ओ ओर उएह एक सवाल
 नैपर ।

इहो कुनक छह नाहर । हम कलकलामे 25 लाख आबन बिगोले छै । कलका
 समानमे नैक तरहक लोकक लोक धूम-परब छै । जीन बाब एतब सचो नै होइ
 छै । ओह भाव लोक सभमे प्रसन्नता जनाय एन छै, नै कमस कम जास के न
 क आनिहान बाओ सभापर कि जगह-जगह अरिमके देखइहक नै अगला सभ के
 स' छै छै ।

—मान

—इहो कि जना—कल-कारखाना मे मजदूर काज करैत अछि, आकरा
 सभक हिनमे ज बाव छै, नकरा तेम सब मजदूर, मजदम बलाक आ एक स' क लक्ष
 अछि आ जीवन अछि । अपन अधिकार न क' छोड़ैत अछि । किनक न छहिन सम्पूर्ण
 मजदूर सगो आबाद समाजक अरिसा काज करैत रहैत अछि । ओह सभक साम-
 गानिक आ सरकारके जूए पडैत छैक । जखन कि आहि मजदूरक मजदूरमे काना
 एकत्रि जातिक नाक रहैत छै ? मुदा अत आहि मजदूरमे हुनक अपन अरिस कानो
 जानि नै होइछ नै सभक उहेव एक रसहि भेमे सबक स्वायेंक जाहि हाहल अछि ।
 भा ई बात बुझक जाहो । किनक नै नाममे रहैत हमरा आब कलक सभमे गेल हमरा
 आव ई बात साफ-साफ नैल अछि जे गरीब सभ आ-वा-हार सभक जिन्दगी मे नै आगो
 बडलै कि एक न' आहुर एजनीति ओकरा सभकी घटका क छोड़ि देने छै । कयना
 जातिक सामथर मज्जा देल जाइ छै । त' कयना धर्म कि कयना भाव-बोधाक नामपर ।

प्रत्युत 'क' इ मभ। मभमय। चनोरी अति। समाजक किछु स्वर्गी शीक मभमय।
मभमय। शीक मभमय। मभमय।

—કનૌઠી માને ?

ही 'माया' का धर्म बाह्यके मनुष्य जीवन रहि नहीं छै ? जीवात्मा सेन
मात्रिकेक दाना-शमी । नकार पने नै ।'

नवीनक चेहरासो मने सारी रेना ई तकी ओकरा मनके स्वीकार मै 'क' रहल छैने ओ फनक मजबूत मजबूत दम सादेन पुन वि। म जनि नान आत्मक मुक्त स्वामी घर विम ?

[illegible][illegible]

एक शेष ब्रह्म महोत्सव अभिनव भवन न' बंधू जान उपरि क' होकर सेवा
कल्याणक। जन्म न' धर्म तोमर भावक बाध धर्म हरिवर भाव बाधि-काधि क' भवन

[illegible]

मार्क्सवादी भाषिकों के मंडो जहाँ मुसलमानी हैं। आ ओकर मोनमे स्वार्थ धरि गेली। ओ कोनो मंडो मंडीस पोसिया छोड़ा सेवाक मोजत करल जागसाज बाजिम मंडीस पोसिया छोड़ाकए अपन दरबजेपर आनि लेलि। मार्क्स अपन पछमे जखम खादे छै। त' नकर अनेक रक्ता छोड़ छै। तै किछु कुनै न' इगह भारी मपाक' कि कुछ सेवामे आ मंडरीन नैत अछि इहना- करेन अछि के मार्क्सवादी हिमायत ५. क' आ छोट है सर्वस। खादे हमरा अपने दूध कीन' पईए। तै मार्क्सवादी छोड़ा सेवाक। ई बात मुनि क' आकर बाजल जन मंडीस रहि गेल तै डेर ओ मोजत तै दुध तै गाई अमा करल त्वाँरमे एक बार मंडीस कीनल। छोड़ मन मंडीसक घर बनायत आ ओकर नाम के फूटि-पीसिक' तै गुनार कर' पईत छैक, बाबूके बेराम जखनो घर स्वाम क' क' तै घर-घर गुनार पडै करल जाय पडैत छनि त्वाँर मचय पडै अछि इतनि भया ई त' दोसरे घर मोती आनि गेली। ओ भेटै करए गेल मंडीसक भाषिकसँ नै कबा गुन' परवै देखबाम छोड़ा छै आ हमरमे मानाक। गुन अइमना करे छै' मार्क्स ओकरा हपटमक

—ज्ञानधि भावती । साधिक एक वृत्तक रह्यानी मे करी छी । अहाँ अपने
दृष्टा जेन करु अपन पारमे । जेध मेधनिधौ करी साज्य ।

—किन्तु मैं ! हमारा आँखें दूध दुग्धाव' पवन झड़ितान। ई मैं हूँ तो हमारा कौन साटे कर्मिक अन्त वरुण दूध हाथ ठी मरान = उपाय उपाय स्वरा ताणि क धी है। इन्तस आँख हम अपनहि राखव। इन्तस भ' जेनी मोहर।

ओ फेर किछु कहूँ बाइसक त' मानिक उपरि देखिनि आ कहलनि—
 पुरजिनजकेँ बरिहइत जेट करनइ मयम । कहिअ महम हम जतन तेन पर न
 जनिइ । बा'सिक उठि क' हवैसाक भीतर बसि जेलाइ । ओ छौड़ा लमभय कनिने अपन
 घर पहुँचल ठीतर किछु कहियो नै सकल साता-ब'पकेँ । गृहा ऐ चोरक दाद ओहि
 दिनमें आ बइत' लागल

श्री ज्ञानिक ध्याननिसि गीतपर श्रीम. श्रीमिक आठ अरमान्ने पमर वराक योगन
गिन वनाक मज म म पदसानी क क न वराग्ने टोनि वर वर आ रामम विग्ने म
पद मारमिहव न वराक न मर म मयय क मर टो म मयय नुग आ ममो

... कि ...
... कि ...
... कि ...

आर, पाव-गोम न हम केवी । ...
... कि ...
... कि ...

एही बीन जवन अनुकटावीक एकट्टु ...
... कि ...
... कि ...

बाहर शिन महाम दरबार-दर आधि मर्ने । ...
... कि ...
... कि ...

ई बिचिष छे ने कावु बाग्यनक महोस पोसु तं ओ बागिक ...
... कि ...
... कि ...

समाक्षम रहू क मन पड़े छे वेडा । ...
... कि ...
... कि ...

- मुका मे मरहे हम बीच बाता हामर ? हम न पहिल मरि जायब बावु ।
- एता भइ बने छ ? एहन हमर पुरजिनाइ मे अछि । निना भयस देखिनि ।
- मुका अहो वृद्धिनि छी । कहिया छरि मीधम ? नकर बाद ।

पुरजिनाइक एक एक बाल बड़मेत मे जवन पिय अटाक म्हा एक सामर्थी ...
... कि ...
... कि ...

... कि ...
... कि ...
... कि ...

ई नम कथा दिवसमन इमेन छ'य : ...
... कि ...
... कि ...

भारतकानि नि मे साकर मवकी विवाह ...
... कि ...
... कि ...

रहस्यी बात बेबातके ल के गायम मगडा ...
... कि ...
... कि ...

आ भविष्यक जुताब सुरक्षित जगैस छनि । ...
... कि ...
... कि ...

सबु जरि मानक वि ...
... कि ...
... कि ...

जहाँ न मानो त्रायुतन या गीत प्रसन्न जहाँ न हो व भी वाक्य वाक्यविषय स्थिति अ
अपन मोन बुझा सकए ।

[illegible]

दोसर दिम अपमहि नासक ओहि छाहण भित्तनपके देवईम अछि ते काह-
अछाह मव विहल म म आ देवक मव आसल अछि । छाहण ओमर्म रंक मुमर
टोम धरि भीक मैमन अछि आ कमाण न ई अछि ते अधिक माका आ अपमत्व ओकरा
ओही टोम यममे भेटन छैक । अछाह कि अपम काहण टोममे बेसी लोक बुनकारिना
नैत छैक ।

ओ बाह्य अति शीघ्रता। ओ की अति ? ई गव तुम्ह राजीमिनी। ये तीन सात पाँच सात धरि देशवर राज्य करता मे' शरीर अति आ जवन मरी शिखर। (गम रे।, नमन तनने मे' अति मर्यादा राजीमिनी। शिखरवत मेले मति तनने नीक जहाँ जाति मेले छति।

जी बहसबाद छवि लकीनक सब मोन पावि क' जा फेर रहलस भरीन छवि
 ओही बेसीनीमे । मुवा एकर आनका जसका जसप रहैत अछि ते ई ज्ञान लखे भदि
 अछि । धाम एकाएक निछु अधिक जाम्ना आ नंधीर जाम' जामन अछि, आ एहन
 प्रसन्न पाग' भावन अछि त' निछु ते किछु भेलै । मे किछु कहन बेगिए अछलहु
 भरीए । हुनक आजकामे अनुभवक एक परिपक्व अवस्था लुलनि । मे भीर होइत होइत
 अज्ञान जामि गेलनि । किछु कोच बाध धिरामे भागन-भागन एलल आ कोनो तरई
 एम सैन जगन्नाहः 'बह अरस ध' जेन । हु लहरावरी भदि जेनके । 'अछु लुलमके,
 लीनक—दू धहरक ? ओहि मरीच बाह्य लोके' माछि डेलै ? के ? कोना ?

तस्मै नमः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः ।
तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः ।
तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः । तस्मात्पुनः पुनः ।

76 □ **संमेलन संग्रह**

यो 'हस्तक' गीत प्रत्यक्ष रति प्रदर्शित ।

३। श्री बहर्गन ।

—सुदा शिवाय ? व धुनै श्री मय

—कहावनि मुधियाजी अपने हँसरीक कागु-कागु छमाह, आ माथनिहार के
हकुग छएह धुवावन हँगराक', केचारा बुद्धजन विचरि रजन छटारह रजन उ
14 ए मा' ले' एकरा ' हुमर क'न आरथ अरि' का रजरा के-री' नुह अरजन
केओ अहेन रजन इ मानन बाधि न पावा। अ'इ उद न उही न माउ उही ए'।
आय : आ इएह मेनै : केचारा सभ मेही मारक लेख ।

—की समु ? ले कौना ? एक गेटे जगह पर भीकत पूछलक ।

—देख रहूँ भीकरा सभके मुँहपर । पता नहने तँ जोड़ल-झीन गेल । कहूँ
नए झगडा करै छ । दुष्टहरणके निष्क भयान आयल छिहूँ । तँहीपर हमरा
नहनेकें तकरो मात्र १ । जानमारे क मरनि रहए आयल अछि
अँ एक मात्र बातक— हँक फट छलियो । अँ इ मार गइल एक दिनकेँ हमरा
अँ तबान हँक री छल । बीनरय अछि पक्क । जानिकियाँ कइर अछि ।
कामस छल । हम तँ कहूँ छलियो ।'

शम्भु मोक्ष मुदा बिना उत्तरिद भवे मुसेयक—हे भाद! नात न सुलक तो
 मव । बिबिधम तरह, ना गय, या मव जकरा मार चुन भुई मकरा काना ताहि
 रतल मुह । इ गराय क। विगाइलकया ना। गमन । मरुत मरुत अद्विग अद्वि
 ई कानो नरपद नै रहैय बचारा । अपन जेन कोहि नर ।

—ई हमरा जातिकें गरिब पढ़लक । एक मुहक साहसः जात नीरवें बालक

—ई मने क लक्ष्मी । एकरा भाव छरि के जाः रि पड़ैत ते सुनयन कियौ । तारा
मदह भेयोए मै जो पारि ते पड़ैत हयो ।' गंधु आर्यावर्षासक सब नेहोरा करैत सुनाइ
गहलह ।

द्वि पञ्चमः । आ ह्यस्य मातुः वारि वहुनकं । नमस्य एकदा नै छोडूँ ।
आ गहि मातुः ।

स एक दिन दु बहुधियार लोक-बुखहरण वा मभू दोसर बिस माडी-करसा।
 यस नम मभू माफ मादि लोप गन । असमाप नरवरा, बुखहरणक पन्नास धर्म
 पदार्थक कामम ।

ए घटनासँ पूरा हुआ मर्ण गलें। आ उत्तेजनामे ओ सतेंक जागृत-दिनाक उत्तेजनाक सभ त' लेखक कि भाषा अतिवृत्तक हेतु ई फैसले क' मेव इतिवृत्त हए मे गये हुनकर अछि कि हमरा सभक। रहु कि भूख सके। सभ धितक एकसकस ई तीक अछि जे तय क' लेख जाय। अरु हु जागृत सभाम पछि अहुर जकी संगठना-प्रक निर्णयक

पहले पढ़ने की लक्षणा अगले पढ़ने की लक्षणा से अधिक है। अतः वही है।
इति उत्तरः ।

[illegible]

इन्द्रधनुष जेष्ठन पुष्पक दान गति मे द मर्कत छम । जो बहुत तराते वृद्धावस्था
 कति क वरुन । अमर ग गहन जेनी । कने रंग उ मर्कते । देना देनी मानक कहिये
 कने रंग वरुन । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 एकद मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 माया म कने मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 अमर दान कने मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 अमर दान कने मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 अमर दान कने मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म
 अमर दान कने मर्कत । जो वृद्धावस्था माया म कने मर्कत कहिये । अमर दान कने म

मुद्रा केना कि आलोक छने हांकरा मुहुर नै नै परोरमे बुझिदावाकनि
एतए प्रारम्भ इ य ए मदि द न भित्त कयन विज्ञान पण निवृत्त । ओ
एम गे। एमः नै अछि । आ कवन शिक्ष करबामे मन्त्र भ वेलाह मित्र्य
अनी जोकरा सारन आय । ताते से होइ

[illegible]

इस शिक्षणनवन कक्षा मंडूआ उठलात ते नै सोल मंडोल सध भय । अही केवळ
किया छी । साक्षरमाह ७७ '१' मे पर जो अभिले सेहो जसभा उठल वराम किये
हुम मे जसभास नै एक जाहे छी ।

सिध्दतत्त्वम क्वां सोष्य माग्राह, आहिर एहि पटभाक जई की छै ? हुन
ओ केन-दा नै गी बुझल जाइत अछि सामने । ओकरा संग एहन अत्यास माग
पाबि गनैत दिमाग 'सिद्धि-साधक' फिरीसान भ जेसैम । तखन एकाएक हुनका मोन

78□ **मयेरु नुमन**[illegible]

१ सप्तम बाण शिवनाम्नक मायामे एकलक धर्मि तत्त्वम् * श्री बुद्धद्वय श्री

[illegible]

मखने हल्ला धरि ते जंघु मरण भलि । ओकर प्राण बचनि छै । ओ बचि सकत
छै । मुखिय तें ता अन्ध किरा नै च
पहनाक कोनो आवरि एकस घरि नै छैक ।

शिवशक्ति का वहालीपाने नवकि इटमाह के मुख्यता सत् । न शक्ति सत् ।
 जो नव शक्ति वंदनमाक लगाय कर । अस्वभाव सत् जाही । आम भासुक उमरक नव कि,
 नामक उमर जोरन छी वही जो ।

एहि घटनाका पञ्चान शिवकश्यप कका सेहो अपन भर्त्सना आनित्राही थापिन क' रेल मेलाह ।

[illegible]

द्वयम विषय मातृका अथ एतत्तु प्रोक्तं रहस्य । एतत्तु नान्यथा विद्यमानं विषयमात्रं । एतत्तु
आह्वय गारुडारुह्यं अथ अथि रहस्य । अथ अथि रहस्य अथ अथि रहस्य । अथ अथि रहस्य
अथ अथि रहस्य अथ अथि रहस्य । अथ अथि रहस्य अथ अथि रहस्य । अथ अथि रहस्य

पल्लवरक जीवविद्यालय पटन बाबू रोड दिगमर्ष एन्सि आरक्षणकारीक नान
हाम्बर १०० लेख गम्भार जानि म डि कड चो जुके आ भारुम लेख । काहरा प्रमर्ग
एकरा वचनान तन साइ रोन छेने सको कोलेजक भरा नाक स्थर्म प्रभा छेने आ
छेने क एकदम जीवलार रह्यार ३५ बी छेने तयार बाद हाफ छेने नि बकात
आ नक्षिर नक्षिक गच्छा लेखक नक्षिकीक धीरे ।

आत किछु नहि । मे पानुक कोकानपर, मे कपडा कोकम पर । ओहि दुन
मगाने नहि मगन मरि रिखिअवला मरु बरिहि पानकर दानेन उठि गएन परिअवला
नुरहियक कोकमको कोना कोन बरह मगाने नहि मगन मरि रिखिअवला मरु बरिहि पानकर दानेन उठि गएन परिअवला

[illegible]

मार्ग स हाउ रीट्टदाय कसीट बुवा . न प्रति कदगर कंग सोयव । 'पुनवृ
पलेनार् भीजक कथार । एक रत्ती सकमतायव बिहो हो प्रा कथापर राखन गभध ।
मदन गचामक एक ही

—“की बात होनी?” ओ खूब सिनेह भा चित्तार्त पृथ्वीकी। मरी गरी मुका
कस नेता भयन सनताइ राखलाक नाश कथनक उदाह किछु सति हेमसक।

‘बाप की होनी ? बताने की ? आदि गंगा में न जाने कितनी
पुष्पों की । सभी नृप गुरु ।

शब्द मातापिता का शब्द । गुल्लि छिपी जे हाँस, हाँ की ।

—‘‘होशियारी भर धनुषबाणी की कड़ सव नेत। रससुखा ने। एकेहं हकी
फे नै मिलेन के रूप आरर खर कवधभूँ हलन।

—पुत्रभिर्नै । कूटं वेत्ति । अत्र हस्वजना लोपः । 'तां गृध्रं संघोष्य' ।
 अत्र ह्रस्वः ॥ १३ ॥ अत्र ह्रस्वः ।

—“साहब को क्या बदली होइ कइ अपनइ होतै आइ की ? सेकित ता
अबनी मर एतदो बेकइ छः आवे एतता दिन हाथ भेइहो दोकान पर बैठन, अभी
एक बी लीं अगलें एतना बरी कइ रहै छः हे ? भूइस कोलो नै छी ?” भा युवक अभी
कीमत जका प्रत्येक ।

—'कोरी ? तमी टा नें बाजलियं जे हमार बच्चा भुबधे मरी जयतः ।
एहका सराब भारी बेतकड खच्चक ने जे'

—'बारी ?' युवक कोरीय वकी पुछलकी ।

जे अचछन-बुन । अचना नें माय-बाहिर छे नें हाकिमके । आर मो...

—'कमली माय तेना कोर आ विवणतारें अनुरोध करैत बाजलि मा चुप
भऽ बलि ।

—'हम्म की ?' युवक पुछनके ।

—'माय हिम तें बेसीहें बेसी दू बने छली तोरा माय ते भारी मे । काहू को
हुआही । अचछ नें करह । अचना रहानिय तें हम एतना नें ना । आ काहऽ
मायलि गहि बेर ।

—'वस बेटी कऽ लगली कमल । औरत जान बऽ नहि जान । अरे कातनाम
जियन चले छे । लगली बान । औरत जान । तें जहना कातनी रहने भावत ओर
कलैती लागऽ ।'

—'हम्म औरत जान'

—'बूको मरऽ । औरत जान । की होरी । हाब कोर नें छी ? कोर-कान नें
छे । औरत जान । ताका सिनी जमम तर एहना भागव कऽ ई छिरी ।' ओ बीचहिमे
बहसके तमसा भऽ ।

—'की करतिये हम्म ? कोरा ते आना छली' काहू तें कही कीतिहेऽ ।

कहा दीपचर । फल भला । काम अष्ट बज । ए. टा लगली निनी मेरे
चम्पा लगतः । ए. कऽ उ चुनने यऽ तरतः । बपहरी भाय अम्पान, जेत मडिल । कहीं-
कहा नें । ए. गेने दरो भूष भुव लऽ दने । सच-पयै हिनर लाय लो ।' आ
एकवच चुप रहि कऽ जेना बहसोष करऽ लागल ।

—'आर हम्म का जानऽ गेलियं जे है सच कह हाने । चरनऽ अदरिया ।
ककरी बापके मोकर की ?'

—'हमरे करमऽ के लिखतऽ । आर की ?'

आकर एहि बातपर युवक चुप भऽ गेलक । ताबत इवाक एफटा रोज होक
छली आ रिक्ता भुवकऽ लगली । युवक चौकि कऽ गेल रिक्ताक अकसे ससारिबऽ
रसो कसलक, एक कत कऽ छाऽ कऽ कऽ आ फेर बुरिकऽ बलि आरल ।

—'तमऽ ?'

—'हम्म की कहूनी ?'

—'आबऽ लुगना नें सगीबही की ?'

—'कहीं तें ?' सरधुवा हाकिम के सत्यानास करी देणकऽ । ओकरो बिनकर
दिनाजारी सत्यानास करये करी । एक छी अवसर के जेतना सजावै छे ?'

—'बिनकर दिनाजारी के फरम नें छे कमनी माय जे ब्रुमि मोर काहने
हाकिम के १७ करन । बेकली ने जयनो नें एकर नम करनो ।'

—'बड़ा मोकिम । नें हम्म औरत जान की करऽ पारिये ?'

—'कानः । की करऽ पारिये ?' ओ कोझिल रजेक । फेर जान होइ कमनी
जे ईरीय अचछनके । 'तमऽ की जयनो छे ।'

जोय की जान नें कऽ उचने नें छे । जालिये-पुमी कऽ मुगय बेने छिये ।
जाली रहने तें कुछ लाग नें बाजने करने

—'मोरऽ बड़वा ? बाप ?'

—'जेना बाबू मे नें छी' । देखे मरी बाई छऽ । कहिया नें चलऽ गेली हमरा
कोरी कऽ अचना बेटी गव कमल । हमर कऽ छे जहने है दलियाम ?' काहू लऽ छिरी कऽ
बाजलि आ उदास भऽ कऽ चुप भऽ गेलि । ताबतहि बूब औरत एक टा टुक हऽ
देनकेक म ममली रूठि लेकेक ।

युवक के चुमन छैक सब किछु । ओ चोटहि बडल आ बिडा भऽ गेल । गले
भुबधे छैक तें पुछनके की ? जिन-जिनके मन ?

मिनट पाँच के बाद की सलीखनात वाली सबक कागक जहने भुबधक सोझीक
छोकरा होइत छे नें मोरे बुरही कचड़ी कोरन । जेना मेने । हँसन आ छोड़ी के देव
नहनकेक । जे छोड़ी आघापन रहेक । हम्म कऽ गेल बिट्टीक आ लाय लागलि ।

—'तो' केहे ने काय छऽ ?' ओ कमली माय के पुछनकेक ।

—'हम्म की खरबऽ ? हमरऽ भूष मरी गेलऽ'

—'भुत ! भूष मरी गेलऽ । जागी । जेना बेटी मरी गेलऽ होय ।' युवक बजलै ।
बाजलन जम आ बाजलारी कऽ लागल ।

—'छिया, एहका सराब कहने बोले छऽ ?' ओ तमसाइत बजलैक ।

—'तो' ? ताइत पुछनकेक ।

छाने छियो । आइ तें बिचित्र होयऽ । भार-भार लखना ने मना जिह ठानी
देवकऽ त चर हंसा बिबुद आर बार मिवात परदेसर कले बा सीई पवनऽ । बडा
केजना छे लखना । मायके मे करनी ।' कमली माय लाइत रजलि ।

—'आबऽ ती करवै हम्मऽ'—ओ पुछनके ।

—'मे की ? जे करे छलहे, मे करमे ।'

—'बैठे देतऽ बैग तों सपू नें के ?'

आकर बात । 'तुमकें बहुतैक' पत्नी कहत एक नया मधाइ दिनिहु
नानैयें यानहें मनायें खर जाय दो । पेंक सँ मर करै नै नापण ।'

—'आइ पुत्री ?'

नै घर बुक बुप भ' लेनैक । छोड़ी जमनामे मन्त्र छनि । बापन मऽ मनेक तँ
अन्तरन माइ तँ डीठ म' एक काम करुकराइन जय पर नाम आ भितुर-नीतुर पति
दीनक । पर बोवत न'क अय न' । आइ ममछ'न' ह'य - उ'य'न'क' न'क' आ । भविन
रहण एम्हुर ओम्हुर तर्कन जेना समझान लय पासमे खसल कु'री रहैक जे नकना
पर भेटि जयनैक । अनचासहि बरम आ कहनकैक ककना माय बनऽ । जमो हमरा
साय नर ।

—'माय नै ? कहा ? मोरा साथे हुम्मे कहाँ जयवी ?' ओ डेरपलि पुछनकैक ।

तेना डेरपलदे जेना बाय छिकी हुम्मऽ । हरना की छै एकदम ?' ओ
पुछनकैक ।

—'बाय बोहू रह्ये तो ? आइ हरना छै नै ? हुम्मऽ मोरऽ के ? मोरा साथे
अथवहो, मोरें की कहती ?' ओ डेरपलि कम सबायसि बेसी छनैक ।

—'मोरो । बड़ी डर । की कहती ? आइ कहने कहने ? हमरऽ देवरा पर आखिर
अजामी सवारो वेट छै कि नै ? माइ दे विहुस तो ।'

—'जमानी सवारो आइ हुमरा मे कोय फरक नै छै की ?' ओ बजस । बुक
संभोर भऽ गेल । करक तँ छै । ओकरा बाय एक लय बुन चुप रहल ।

—'कहाँ नै जयतिहो हमरा ?' ओ जना मोलामस हाथ पुछनकै ।

—'माय तऽ ओकरऽ बात की ? कहाँ कामे वास्त ती, वीर करावय बसा तँ
हुम्मे के मोरऽ ? हुम्मे की कमली के बाय छिकी ?' ओ बुछी छनैक ।

—'मोरा बराय भागी यम्हो । मया माय किरिया हुम्मे से बोहू कहने छनिवे ?
तो तँ मल्लो सोलताय मेहू । हुमरऽ लकरीरे छै फुटलऽ ।'

—'लेक वैहै तकवीर । बकनाही भाव ई तकवीर को जी मजब बास छै । करती
ई काय भला काम नै सकत आवयो अयमऽ दावान दोगा काम छिया छी । क' रटत
रह्यऽ । तकवीर' ।'

—'आइ की ? तकवीर नै तँ की ? हमरऽ की कपूर ? कमली बाय अरसी कोय
साम नै लानी बऽ मही पन्ना देलकऽ । पटम हे अमलीनया के धरें देलकऽ आइ सनक
सयाय क' छोड़ो देलकऽ । पत्नी कहत 'पत्नी बह' पहुर काय कहाँ अयमऽ नै
जात-जहान नै । जानना बाय हुमरऽ का कहुर छल ? कहाँ अन्ध तँ हुम्मे गायमे
मालिके कम सोका-यजन करि क' पुकारो करै छली बड़ा हुमरऽ म' कहाँ पनाय कऽ
इही लानी कऽ समुहमे छोड़ो देलकऽ । हमरऽ कपूर की । काय कहाँ नै । अकरी । जीरत

86 □ गोज मुज

जाय । उ'य'न'क' । ज'म'र' । अयमऽ रटनकरी = क'य'न'क' । ज'म'र' । ज'म'र' । ज'म'र' ।
अहमिया गंगमे । हमरऽ की कपूर ?' ओ कनन ।

—'तकवीर नै नै आइ की ?'

—'बुक के सपने खिमा बुक नै जँत करि धुलल छैक । जयन-जयन ई मोगो
तकलीक मे गीम छैक नै कानो साथे खिमा दोहलल । ज'म'र' । ज'म'र' ।
छैक । ओकरा मतक नायनि बड़ै लेम इसो बेर मुमल खिमा फेर-फेर मुनै छैक ।
मरु भटलो सवारो छोकि कऽ । मुवा जकरतपर जेनबैन मेहो छैक । एम्हो नैह
मनेक ।

—'ऊ सब मानतिहो' । मेकिम कमली माय, ई बतऽ के जमी नक तो जि-
छऽ, बेटो भौ कल जगि के होय गेलतो' ई सब केना होनी ? बतऽ तऽ ?'

—'घन नो, मोरऽ उपकार हुम्मे' । ओ कतऽ मजनेक ।

—'छि: छि: । हुमरऽ ई कहना नै छेलऽ । हुम नै ई कहतिहो जे आदमी अपमा
नामदेय आन म'त' न'क' गाना क बाय न' । न'क' ज'म'र' । ज'म'र' । ज'म'र' ।
आय बसा तँ डेरपलदे जेना बाय छिकी हुम्मऽ । हरना की छै एकदम ?' ओ
पुछनकैक ।

—'कहिणो नै ?'

—'नो बेटलो । जकरत होनी तँ । बराय की छै । ओकर के म'र' विमान या
मिनी के जकरा कोय घर नै ओकरा सबके भिनाय आइ अयमऽ ब'त' न'क' ज'म'र' ।
एकराई ब'त' आइ की बात छै ? ई बात तऽ नो' ब'ह' करी रह्यो' तऽ नो' कतलो बाय
करी लय छो' नारऽ ।

कमली माय बुन छलीक-छिछु उपकारन, छिछु बिताय ।

—'बाय तँ मेहो जासय अयम ।' ओ हुमासति बायनि ।

—'केहू ? केकरऽ की बाय के लनेलऽ छै ई धंटापरके मोराहु ।'

—'सब उजारी-मुजारी देलकें तँ बाय की ।'

—'कैक बनी जयती सब कुल । माक कुल अन्धे हालत होनी ।' जेना किछ मोन
पादेन जो कहलकें—'माय छी' कमली माय, जयहू इहे छेक, नेकिन नो एकदम
मुमल घामन वैहै छुमो मय जेक । ज'म'र' । ज'म'र' । ज'म'र' ।
अनुरक तकन दिय एम्हो आ थपकि जना उछलैक । सन ई बाय ओ काना बिगार
मेहो छल जे एकरा बारी एहिना भय रहैक आ तकरा ब'र ओ छ होयम जगह प'नि
गेल छनि ।

—'छेके छै । एक पू विम आइ एहने जयती । केन' ।'

—'लेकरऽ बाय ।'

रस्ताक खिमा □ 87

इतिहास होना चाहिये। जबरी कुछ अच्छा सज्जद आदमि अछे इतिहास होना चाहिये।

—'ही करवही ? आरु तोरा अछरए की लंका कर के । तो एउ होकरा करे ने छः रिषस बला के की बिना ?'

—'की बिना ? हमरः रसोई घर उवाही लेनः कोन म दमने बैठल रहबै ? हे राम दास म चार पाच विष्कुट बांकास । हे शिनीने रिषसायला देखावला मजस के रसाई घर । हे हमरा मनी के रसाईये ने रहने नंखपवै बाकी ? बिबला छोडबै सावजपुरा म बास । उर मजस बासाइ । ओकरा बरस कोन म मयला जकां गरम बुझाइन छीक । एउ अछ ठरि कः आ फेर बजवैक — जभी मयके हमरा शिनी मय के ई बास मयमे ने छै कयसी माय ।'

की ?'

हमरा मयक रसोई घर उवाही बैठल छै । मायस होने नं राव एक जूट होने । एक जूट होने नं जेन दोबान छाने से विवेक हावे । नं विषय हीक गहीन छी । कही भी विषय । तेन केना नं ? आखिर हमरा मजदूर गरीब मरस नं गुजारा कर के कुछ जगह चाहिये की नं ? हमरः की देखः के मोन ने ? हमरो शिनी के लं रागह चाहिये ।' ओ मयतमायल छवैक ।

—'तबः जगह छिन्ने केहें करै छै हाकिम सब ?'

—'बदमानी करै छै । ई बदमानी ओकरः ऐसी बाने चली जाइ छै ज हमरा शिनी मिति धुनि कः ने रहै छियै । अपनाके अवका करी ने छियै ।'

—'केना रहने मिति धुनि कः ? सब नं अपनः हिमाल नगरमे लागल छै । हमरा देखत करै छै हाकिम ने सब खैनी जमाय के ई छै ओकरा मनी के हाथ पर ।'

—'ने छै अकिल बमली माः बुझने जानने । बल्ल बुझा चाहिये । आप-बिचार के बाद पारा पानी देनल । काह ओकरो जमानी बढी क विषय भई छै ।'

—'केना । बुझने सब ने ?'

—'बुझै । बुझबै सब जानने, सबके एकट्ठा होवने जानब । एकजुट । एक जुट होवामे ईना ई नं हमरा । शिनी यदि तेथो कही काजोर पडबै कि होमरा मोहमल आरु बलाका के हमरे एमनः लोक सब हमरा साथे आसी कः हमरा बाते नरने । लेकिन कोय भी लखनी नं एकः के वास्त मे कामली माय । अपना एहनः सधायक के पहिने सायममे एक जूट होय के सागती लक्षमिमे है हाकिम भी तोरा पर जुनम अद करनी ।

ने नं एहने चजस रहयो । आइ मोर पर भास हमरा पर परम् लपना पर सब पर ।'

—'लेकिन हाकिम तँ लटो भोजी-भाजि कः बराय समकाव छै शरी गदेछै ओकरा कोय बर नै छै ?'

—'बर नै छै केहने कि ओकरा ई बात बालूम छै जे हमरा शिनीमे जागरी एहन । ने छै जमरा मनी ने उवाह लेनः काजुन क बान ताते पाना राय न छै । जमनी हमरा शिनी एकदोन क मतिनः सब कुछ खाडी मला मनी ने छिने । उ मय जाने छै जे हमरा सब जानः कुछ नं बिगाड गकै छिये कहने कि मय जागरी ने रह छिये । ईहे बात ।'

—'तो ई सब केना जानै छली ? के बतावै छी ?'

—'कोय-कोय पमिअरे सब । हम तँ बेबना भी होई छी आरु बुझवः पडलः निबलः पमिअर छः तँ ओकरा तँ कुछ-कुछ छुडि कः पीछे भी छिये ।'

मायमे एउ छी मने कृपा-साती पारा मजदूर धुवन के पार जमलक देवपक छि चाहिये ताक मः मनेक प्रमाण बुझलक आ दोबान आकरे बिम । कर छिछु रूप मेने । बुझक धुन कः समी माय नरा कायल आ बहलक । 'मय बीम मितः मे आबै छिये । पामे मे हिलका पहुँचाव करी कः । छिन्ने हमरः गुजरी कयसी माय । ओ कय जाहि प्रमाण करै ई जागरी देखलक । अमायस नदनीयो मायन मय होइ । मेनेक अमनः से आ सज्जन प्रणाम कयलिन । पुनः छटकारि कः गेल । ओकरा ओकरि रहै मय कहि कः हुनका आदरपुनः रिषसा पर बैसलक आ खूब उमाइ तँ पायलिन बलीनक । बटेकन दोन पर बहि गेल ।

करीब घंटा धरि मे ओ धुरि जवनी । का बानी अपन बुझी कः मय करैन रहलक जे ओ कहैन छियेन निरन बन एकजुट होइ जो । बान बुझनीक अभाव ने महे । देखलक, दुनिया बजलली गुजरी के कयो नं बान मे कयना । मकरा बरना ओकरे । अरि मगरक मजदूरक परिचार आकरे । ओ तेना गुनः चला करै-करै विभोर मः गेल । कनेक कालक बाद बाबल 'गुडभा' मैने बोले छै । अपना मे मिति के प्रमन माय ले नं जिना अधिक रो कन जो, नं मुने छो म पमिअर कन जो । ओहा मै मुने लौ नं एउीमड' बोलाह उन परिचार के परिचार बैठे जो । छिन्ने ने । मनी नं कट्टी, बल्लु अः छि भिजिनम म भी इने ने । कहै कि हमरः केना रहिये ? हमरः परिचार कय रहलः बहै । तँ इतिहास करः हमरे काम करै बाने नेवार छली । हमरा सब देवार छी । हमरः इतिहास बराबः ।'

[illegible]

—'अद्वैत' ? जी शरायणि । 'केम् ?'

माझी एकठा सोडर बधा के सोडरस के चुतकमे एकरस रिक्ता के रिम जाणि
गर्न आरु जरा-सा दान लागी गेली । एतने नान पर ।'

—आमर । आकरा नेल में बंद रहे थे होती ? के खान ले देरी बोकरा
कम्पनी पाव जेना दुवक रिजवाबिया व... आन बटा कमरी। बान छटभटा पति
हो ।

—‘हमरा मर देखाप देवहे तौ, तहाँ कन्हे छै ?’ कर्मसो नाव विभती कदमक ।

‘विलास नी । अणिह । पाण नजे मे । एकठो दुठो टाका भी दं मे हूतो
बह।

- 'मिस्स मे इत नो ?'

ਭੀ ਭਾਈਆਂ ਨਰਾਜ਼ ਕਰਵਾਏ। ਸੋ ਤਾਂ ਨੂੰ ਲੋਧਾ ਕਰ ਅਯੁੱਧਿਆ ਚਿਕਿਤਸਾ ਮ ਕਰਨੇ ।
ਭੀ ਸਾਨਿਕਤ ਖੋਲੀ ਕਰਾ-ਕਰਾ ਭੀੜ ਆਇ ।

कमती माय के एक-एक छम असध छसक । हवर-हवर पानि देखके ।
सबठमक ना सगलवला के धोके काल बाकाल देखः कति तन नमनैक ।

बड़ शाहूँ कऽ जखन घाणा सेल त बड़ जोवाड़ सगर कऽ ओकरा भट कऽ सेलकै
हूँकरा सब रग गर्म तँ बकागे ने पुरतै कऽनऽ लगतै । जमनियाँ कऽनऽ लगतै ।

—‘कैम्ब्रिज जाने एस. १ है सभ एहने सादर मनाक छै । सब ठीक होब नयत । चिन्ता के बात बिलकुल नै ।’ ओ निहोस रहल छलैक ।

— चिन्ता के बात नै ? तुम्हें मरी रहम की भावना तोरा ।

- विभिन्न बात कथली माप । आय लोग कुछ नै बहुगो जता भी खोजेत
पुस्तकें ।

—‘हमरा तो पैहू कह्य बास्ते बाबा भाबी गेली छः। जाइ दिन भी त हमें बाही सय बहन खसियां,’ ओ कटाक्ष में चिढ़ति रहल छलैक। कतक चुप रहि कऽ मुठ्ठकै—‘जाइ हमसँ छोरि केँ’ ओकरा अन्ध रूप खूट खातिन ओ मोहन टाका ओकरा दिह बडरेत कहलैक—‘ई राखऽ, नागऽ साँकी छनो त हमरा काय। ई ते अयली छी ओ मूँको भिड़ोँ कऽ कानअ ताँकि रहल छनि। आ लज्जन छनि मुन। मिहरीति कहलैक—‘बाबु की हीत ?’

—'हृदय है।' ओ निष्क्रिय इंसान ! सर्वथा के हृदयमें रह ओ सज्जन—
'असल दोस्त क काम करने छ, तो कमसी भाव अभाव । बस धैर्य बाणी तै ईत'ना
बुझयो आ हृदय बाहर आनी जयना ।'

१२॥ वसिष्ठ मुनि

उक्त के ब्यापक अंकल एहिन बिधि छपिन्ह । कुत-घुन में लागने छन एहने मे एवाम
बखन ओकरा लग उरखिन भऽ कज्जलिन्ह । “की राख छ यौआ । हमरा तऽ मने नहि
लागीह । एहबख कतऽ छी ? आ कबो ओकरे खनटा भऽ मन बहुदारी ।”

सीताजी हृदयका मेल, ओकरा ठीक से ध्यान नहि छै जे एतदम कसस रहब छै । ओकरा मझा जोरिया कऽ राखने रहब छै । ओ नाकऽ जागल-ताब पर रैत पर, अठेनी पेटी खमटा साकलस, मुव कती नभ भेदकय । एतये मे अंकल सुखतखिअ—
 “बोधा कोनो नबका कैसत कऽ रैव एनी ? नहि मझ स कती बएह कैसत तगा मे ।
 मम बह बेचैन भलि । सुतऽ कहैत छी ।”

वण्डू कैंसेट माने बेसम जलहर के धूनी, फेर रेसमा के 'हाम रज्जा' दिख नहीं सके। पूरा यथार्थजन जगत् नराम्य है। श्री दोहरा नहरा कड भिसे भुल, भगवाह। ई हुनकर धुराव स्वभाव । फेर नीके के प्रीति बीतसाह—' की बोअ। एनकरम एखन तक तहि बेटसी

खोजि रहन छी अफस ।" कहैत ओ माणसारी खोलनक । देखय मै समी
 जान करि क' यानि मे तुक' यद' अफस रहन' ओ' छ' ओकरा निक'य ओ अफस क
 के पनक भा अदरन मे हुनका से करि भरि दिहल' काजोनाद पुन-पुन ओ हथरी भाव
 न' न' ओ स्वयं । सम'ह हुनकर आदेन त ओ आब पड़' म' परीक्षा छ' गहर ।
 छन मन समाक' पड़'क' आहो ।'

इसमें अंकल जाव-विधौर भइ सोका पर वेधि तन्मयतापूर्वक एतन्मय आधारिक
फारस मध्य जागृत अंगहर मीन की वे मन पदार्थ पर से उभर्या रनेक आ अंकल
सह अविच्छिन्न स्थिति करत वास्तविक । इहाम् एता म अखिल दृश्ये अंकल साका पर
चित्त तन्मय पदार्थ अन्वय के आधारित शास्त्री पर शास्त्र के सृति गल छवि हुनका एत
अन्वय में मोरक दृष्टा रहन ईह न आव मुखा गेल छीन । स्थिति देखि आकरा बड
वस्तुमय भेल न आ साधन लागन परन्तु ओकरा कानो हाह मई नयनैक ।
आ अंकल के छीन पर से एतन्मय शास्त्राचारिक प्रवर्तारी में नाथि देखक मन्मो-
पत्ता के आयुष्य पे देरी भइ रहन छैक । ओ मुखक प्रभाव करत लागल । रुपा एतन्म
अंकल के ई अजीब दृश से सृति रहन स्थिति आ भावि से बहन नारक दृष्टार आकर
मनोवामा के लक्ष्मीरि देखैक । ओ बेलत गरीर भइ गेल ।

घर में अद्वितीय प्रखर दूध, गोदय श्याम के वनसहि नद दूध के मुँह से एक लंब
 धननेके 'इ' काष्ठ एतैय ' ' सीमासी किछु जवाब दय चाहि हो पुर्वदि मम्मो

96 □ ଅପେକ୍ଷା ମୂଲ୍ୟମାନ

अकालक कथन श्रुति-कथन प्रसक्त है कहीं बाहर तऽ नैव शक्ति गोलंते बाहिर एतेक
जन्ती भूति रहस्यक प्रकाशन की है धनु गाथय अकालक शिवश म साव-वधार करः
लगलाह ऐ भुतधन ने रहने करेण ज भाजन लेस हुनका शक्ति-वैष्ट की नाहि लगे से
मंगलका बाँते उदधि कथन हुनका कथन चित्त से भुतजह पै नम, एन बाँते
बाकि रहस्य सक्ति-कथन कथन स तऽ नैव दः हमादस श्रुति-वैष्ट है ।”

[illegible]

'ई भोरे-बोरे समय देखोगाय तोरा की कुरेनो?'

— 'तो वहाँ ने मर्मा । ई कितकर फोटो छिये ?'

"सोडर दम पोलीस...किये?"...पूछत मम्मी गंभीर ऋष गेलसिम्ह ।

— 'हम कहिया रह्यास्यै नय ! एखत कतऽ राख मै ?'

—भां भांरे गंधधुग्ध येटी ।" कहैक नगभग काजऽ खण्डसिन्धु वरसी ।

—^१ कहिया मरि नैस ?

—“तोहर जगमो लो पहिले ।”—एहि बेर तऽ हिवृक्षी बह्मर मऽ जलमय मम्मी के । जीमामो एहि पर बिनु ध्यान बेने प्रश्न करै रहल ।

—“सोनी सोरा बूमल छो क्या अंकक एहेम किने छपिन्ह ?” —मम्मीक मुँह पर तेना धूब भरिगर ताया लागल हा। ओ हि सकि निबूख के हरो बकार मान, कलखिह। सोनीओ एकटा मूड रहस्य मे इति एवाम प्रत्येक उदियार खनव के जेपुबाक प्रयास करल मननि । क्या अंकक की एहेम होनाह ई जखः लगलि । आखिर बिनु कहने कस मेस होताह अंकक ?” —सोनीओ प्रान केसक तऽ अन्धकार पहुँच पाय चुप रहि गननिन्ह, मम्मी सँहा नीर । अन्धकार अन्धकार कबखत कफपुगनी मे मम्मी के कहैत बापा के दसुका मध्य मन पड़ल । संहराउन्ह अखि पड़ल । ओ अन्धकार बापा जम बाएल मा दुनका से पुछलक—“बापा ! अन्धकार जे मन —बापा लोक उल्लसिह मा अबधर के नेनी से पड़ल प्रयास

આપણે એક સુદેશન કિશોર છાત્રી ૭૭

मन्त्रेण वाक् ज्ञानमभ्यस्य कृत्वा समक ई उल्लासं वेदमन्त्रि तौ मन्त्रेण यौजि
मेवमह । हृतकर मनन एहि प्रतिक्रिया क वक्त्र मूत्रम मक्षण हृतक जौधर-कोनम उमरि
मन्त्रि उमरा मन्त्रे पार्थसा ब्रूहि सेवाधन आ लग मण हृतक बाहि एकदि बज्रमह —
'अहा एता रिपका नः गच्छतु । कोन उचरत छन मूत्रम मणवाक । हाथमे पाद
अद्विक न मन्त्रण जयनैक, वता एतक 'इन नहि न' मन्त्रु दिन आरा नहि धुमिहू तौ
की भऽ जननैक । ओहवा एकर पुनः परीक्षा होननैक ।

‘को सन्तक अन्तर्गत पुति नी ले’ भन्ना कट्ट वनक दिनमै कहने छिाक आ एकटा ई छोटा-छिटा क यक्षम साह बना एकजुट । रम एहिँ नहरमे अपन सक्तापीडा सान्भै पेट करी नहि लऽ आ मर्यादाक । बचना सब आशिर स नैम होयनेक व एहिँ धरवै नसवी । कहनु पूनी-सुना से नहर बह जकरी कुसायल खर ग हाभय । अह एकटा सभकेँ लऽ कऽ नहरयमेक अवस्थ ।’

'कल-जयन्ती से तैं निम्नच होयबाक बाहो ।' पतिक मध्यस्थीय काकमिक भूष
निही । रती नाम न भउ कर पुठ अथिन । एहिवर रति कर न मरयला । काना खास
स्थानक नाम कहि कहि सकसाथिय ।

[illegible]

कोवी एहि परिस्थिति सभकेँ तीक बर्का जनेत छलैक तेँ आसक्ति न भेलैक ज
 केँ अन्तर्गत नै आसक्ति नै भेलैक ज अन्तर्गत नै भेलैक ज अन्तर्गत नै भेलैक ज
 परिश्रम ई बढाव जे आब जख छोट केर कहिहो सभय ।

[illegible]

‘को मेड 7’ तोरा सब असी तैवारी बिगुल नहि बस टहल छह मसक मई
मूल तसार नयै कर ज्यो मे मन दीपार नयन मागि गन। मसकी हिर नयन सदासा
हवा नयनक, सीरी बिगुल नयनमजसमे रहि तोलि तोर बुझौन की—‘को हरी 7 कोह

[illegible]

ये सब सुनी तो परि चपड़ा बस कसूखी हूँ मैं सुनि बो 'फेर खोजू हूँ।
 जे नदन नदन पैर । खोजी रही भवन नदन नदन नदन । दोरी नदन
 इन भेरीभरै — दूध नदन नदन किछु छोर नदन । निदना गीतनि नदन । दूध
 पदों ए भवना नदन छै । मैं की नदन क नदन । नदन नदन नदन
 नदन । नदन क नदन नदन नदन । नदन नदन नदन । नदन नदन नदन,
 नदन की नदन छै । नदन नदन नदन नदन नदन नदन नदन नदन नदन
 नदन छै ।

सीरी बरसक हिसाबसे किछु अधिकें मंजीर आ होमरसयन भाषामे सोझरा मुनर वृत्त रस छलैक अरु मुनरीक दुगुहाइय देवलयमें पाक । नान रस छलैक जे जाब ओ जनमें जयवा लेस तैयार भइ रहल अछि । साबन, एकटा बुझल मिठा कमरे दोसर मन्त्रमें छानव मुनरा रोहि क दोरीन सीरी जेहि दुनयक । इस एव आह्वी नहि जयवेक सीरी ?— के कहलौक भइ जयवेक ? सो तैयार भेने ? वेर सँ जेन नान पाकमें एवहि क जा तैयार भइ क जायकेन । सब जा सीरी सब जयवा रस रसयन बरसवा से बरसक भनि रहल अरु सभे विवेक भाषा रस रस भानक सभने दमि सयक मन प्रसन्न होइवक सवना भनि रहल अछि । ई मुनक अछि कहि देलकनि । बरही बेटी आधि पढ़ब जाहि सेल सँक ।

साथ सोज पहिरऽ कथा साङ्गीमेँ भीक बिहचामे कहिलसक अनुभव करैत छलीह । बरकी बेटी नाकिकेँ कहलसक—'एतए पहिर सकैत छीँ मी' आर कोनो दोसर न जत, हि छै ।' भाव किता किछु सोचने साङ्गी एखने भेलक जा पहिरऽ ब्यापक । बेटी दूकामेँ ललित रहि मिलीसक ।

[illegible]

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

भी तहि भैया एहन हुनरा सभ धलिह छी । एकर बाबल छनी । बच्चा
 सभकेँ लेहो कहुन दिहल कहुने रहियैक लेकिन मौका नहि भेटैत छल । जाइ मौका
 भेटल स चुनऽ रस निकल्यो ।

—एकर धापी तँ केर आदक कहियो । ओ कहलाह ।

गलेन बाबू प्रभाव कयनिधन । बच्चा सभ जिन मोने प्रभाव कयलक । अहतामे
 बहुत नम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

मथने गलेन बाबू कानमे आवाज पड़लनि मुनेम बीदीसँ पुछि रहल छलैक—

हयनाम मान केँ हारन छिह दोआ । 'मादी टाँर' दिकन निर रहि
 बजलौह ।

बाबू न बीदी पानीय पाने को कह्य छै । 'ओ दोआ' पुछलौह ।
 गलेन माने एकर पर बधा काबरी ।

दस आठम पाने
 रोज । 'बीदी' कह्यौह । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

—अम्हने बोरे कायदे बस हँसवर पुरेन जायक । ओतप पीछि लेन ।

—'बड प्यस लागल अछि ।

—'बस, भाबि मेमहूँ ।

ओ गलेन बच्चा सभ धलिह छी । एकर बाबल छनी । बच्चा
 सभकेँ लेहो कहुन दिहल कहुने रहियैक लेकिन मौका नहि भेटैत छल । जाइ मौका
 भेटल स चुनऽ रस निकल्यो ।

एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

—अह'के' अहताह लागल ओकर जा कऽ मे ? पावेनी पुछलनि ।

—स्वाभाविक अछि । थिकट अधमा छैक । आने आहलमे बर्तीमनि । हम
 को तनेन छपहुँ मे एहने भाइह आ इमर एहने भाइ । ओ धूय भऽ कऽ बजलौह ।

—जाय दिनेक । हुनरामे आ हुनकामे भाइक सम्बन्ध भोजो नाह सकैछ । हु
 अहम माने मोमअन । गलेन माने एकर पर बधा काबरी ।

—हँ अकसर छपि । अकसर 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

असमय में बँट पड़ कर नीचे आया था। तब से मैं भी उसी तरह हो गई हूँ।
 जो दिन 'मकान' के बेधक कहि गेनाह। 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 अशम तम । 'माहि परम' एतेक लोक मम आबि मेक बलि
 कऽ बँटिनी ।

कौलवेल पर आंगुर देलनि । इनीन प्रयागक बाव केदार छोलि का बि धरिनि बाहर भेलाह ते स्वयं हुनक भातीये छलाह ।

—'अरे अहाँ कबका ?' ओ कहननि ।

—हे, हम सब गोठम छी । आइ भूमि निकलतहु । बहुत दिनसँ हिनका समके एक प्रकारे परतारि रहल छलनि । ओ बजलाह ।

—'आइ के ?' ओ सामान्य बजसँ स्वागत करैत अपकाक आपन कदमनि ।

ओ मोकनि छीरे-छीरे केदार सब पहुँचलाह । आ भीतर जे हुनकी देलनि ते ओतय छले रहि गेलाह । ओछीरी कसमकस भरल छलैक । ओछीरी स्त्री-वस्त्रा विसल ।

—'टी० बी० पर लिनेषा छति रहल छैक ने ! ते लोक जमल अछि, आज ककरा भना करिदैं ?' जाचारी ओ तारसम्य के देखैत, जेना संकोष तँ बजलाह ।

अबैत बाबू आ हुनक स्त्री जेना आच्छिष्टे निःश्वस कयलनि । बच्चा सब एतहु ओछीना ओछे काल अमरंजसक विधिति छल रहल ओर अमल-वगल चलाय किश आगल । भागिज बेचारे धरि संकोष रहि गेलाह । की करनि ? बजलाह—'बिष्णु । एतेक दिनक बाद अहाँ ओछीरी अपनो केसहुँ तँओ देवा सफ नहि सकलहुँ ।' ओ क्षमा प्रार्थी सब लगैत छलाह ।

—'मह-मह कोनो गप नहि । हम सबकेर कहियो आरि जायन । एतन जलैत छी ।' गजेल बाबू जेना भागिजके संकोष उबारलनि ।

बच्चा समेत ओ नलय लयलाह तँ जाचारी ओछी छरि छोड़्य अयलनि ।

परजब पुनहुँ पुनहुँ अनुसन्धित छलनि । पार्वतीके एहि लयक प्रकाश कयलनि । ओ वरैत किछु नहि छनीह परनु जीतरसँ जानि रहल छलीह । की परिस्थिति छैक । दिनकर पैठ भागिज ! आइ हिनका लग टी० बी० वा दुभिपक आज कोनो लोक उपयोगी साधन की उपलब्ध नहि छनि ? कयन ? ओकरीयोतँ ई पैठ बजा करैत छनि । मुदा एतेक जेना एतेक साधन कतयसँ भऽ नेलनि ।

ओ लोकनि सड़कक काने काल बनि रहल छलाह आ चुप छलाह । बच्चा सब ओछाछुत निश्चिन्त भऽ बनि रहल छल । जकरा देखि कऽ बति-बसी जाग के आर अपर छी आ दुधी अनुभव कऽ रहल रहल ।

एतेक दिनक बाद तँ बच्चा सबकेँ घुमपयाक अवसर भेटल छल । जेरी मे पाइ नहि छल तेओ ई सोचि लिखलहुँ जे बहुतो दिनसँ बच्चा सबके लोचरंजोद गेल परसँ बाहर नालहु नहि कऽ आ सकलियैक अछि । एकरा सबकेँ कलहुँसँ घुमा-हिरा अनशाक चाही । आ अपनहुँ तँ पैठ सब भऽ रहल अछि । की विविध संयोग छैक ।

—आइ अपन सब कसय जायन बाबूजी ?' मुन्नी गूछलनि तँ पिताकेँ व्यंग्य सब लयलनि । ओ ओकर मुँह देखलनि ओर ओ अपन पत्नीक मुँह देखलनि आ पुछलनि—आइ !

—'हम की कहूँ !' पत्नी कहलनि ।

केर बोहो सोचि कऽ पैठ बजलाह—'ओ हवाई टहलिन कऽ पहुँचय योग तँ दूरी छैक । समसक घर पर चलैत छी । ओकरी तँ बहुत विचरि भेट नहि भेल अछि । बेचारीक पति कतेको माससँ मगपेठ छलनि । भेटो कऽ नेलनि ।'

बच्चा सब छवि चुकल छल । मुदा जयबाक समैक तेँ ओ सब ओछी-बस नाम लगलह । बच्चा सब बाकि गेल छल । कयनो-कयनो पति बानी ओकरा सबक उल्लाहकेँ बजवैत आनू बजल जा रहल रहल ।

ओतब जखन पहुँचलाह तँ कसबावरन मे कोनो कस नहि छलैक । ओतहुँ सब टी० बी० घेरने छल मुदा ओछी पारसीकेँ ओकरे प्रकारक किछु आर विविध लगलनि । हिनका लग एतेक पाइ कतयसँ अयलनि ! कस ई समसक छलाह ! ओर जे होइक । पहुँचलाह तँ कसबा बैसोलनि अपने नयने आ अपन पति आ बच्चा सबहुँ सङ्ग टी० बी० मे व्यस्त भऽ गेलाह । कुलभ सेओ नहि पुछलनि जे कोना छी ! कोना बयलहुँ एभर ! बच्चा सब कोना अछि !

ओ सब बैसलाह ओई काल । बच्चा सब तँ बाव कऽ लछमल करऽ लागल । अगुता गेल छल ।

—'माँ बच मे जाली । कस मे माँ एतऽ तँ । आ तयन सब छति कऽ बसल गयलाह । एक विधास पागिआ सक संन नहि पुछल गेलनि । ओ सब चोटा गेलाह । विहाललाह तँ बच्चा सबकेँ ओर प्यार लागि गेल छलैक ।

छीरे-छीरे साँझ भऽ रहल छलैक । भूमि बला मूढ बच्चा सबक भिला बेन छलैक । तेओ अंतिम कसतँ गरीब बाबूके अपन एकटा अभिनय स्मरण बयलनि । ओकरा ओ बहुत स्नेह करैत छलनि । आइ काल्हि सविशालय मे कोनो विभाग मे किरानी अछि । भेट भेना कतेक वर्ष भऽ गेल । एकाहि नगर मे रहिओ कऽ... ओकरी देखि लेल जाय । मुदा किछु सोचि कऽ जनता देखलनि ।

सम्पन्धी-पानाक ई अनुभव बड़ विविध छल हुनका सबक मेस । ओ मोकनि पयरे सड़क पर चलय लगलाह । साँझ होयबाक बरन सड़क किछु व्यस्तता तँ भरल लागि रहल छलैक । बच्चा सबकेँ संग मे लऽकऽ चलथामे गये जेमी छतक भऽ कऽ चलय पड़ि रहल छलनि । पार्वती आ गजेल भीतरसँ बनि गेल रहमि आनूक एहि यात्राक अनुभव तँ ।

बच्चा सब भुखलो छल बकलो छल, मुदा बाबि नहि रहल छल किछु । पति-पत्नी सोचल रहल जे ई केहन घुमनाइ भेलैक । एहिने एकरा समके की सजा भेटल होयलैक । मनोरंजनक नाम पर घुमबहु अवलियैक तँ बेचारा सबकेँ भुखले पेटे पयरे-पयरे सड़क नाक नहि रहल छैक । ओ आरम गलासँ भरि गेलाह । कोना परतारियैक ?

—'तुम साधन-ए साथ जी ।' मुकेश बोलत ।

—'हमरो नामले बाबू जी ।' मुन्नी बोलति ।

दुनूके आवाजमे ईत कहलखिन 'एखने किछु फीत दैत छी, मनेक सङ्ग । आ फेर चलत लगलाह । ओ जैत छलाह जे जेबोमे कलका पाइ अछि । सबक भिला कऽ बसक बिराही टा नहि निकलि सकत । मुदा किछु ने किछु बारहि पड़त । यच्चा सम भुखायल अछि । पत्नी के देखलनि तँ ओ बसैत-बसैत मुन्नी भुका देखलिन । भरिसक मनेसन कानि रहल छलीह ।

—'एहन सगैत अछि पावैती, जेना एहि पूरा नहरमे जवना सब बसैती आबती छी । एतय जेना बसो नहि अपन । हमरा सब कतय जायब आज भला अहाँ सोच ।' ओ बकलाह तँ हार कोनि रहल छलनि । पत्तिक भव जेना पार्सीके आब मनेसन पैयार कऽ बेने होअथ । बससीह—

'यदि एखने मोटाको सम्बन्धीक मामल जाय तँ ठीके जवन बेसी नहि अछि । सेकिस ई कोना भऽ सकैत अछि । बहुतो होयताह अपन । हमरा बसो हमर, परिस्थितिमे हमरे सम भिलैत मुदैत सावारीमे जे जीवन बिता रहल होयताह ओ हमर अपन अछि । बहुतो अछि एहन ।' जेना मुन्नीबोलिन ।

—'हम सम्बन्धीक पत्र करैत छलहुँ । आज तँ ककरो घर जायब कठिन अछि एहि टी० बी०क द्वारे ।' पति, जेना हुताब भऽ कहलखिन ।

—'एतेक पाइ पर्यन्त नहि अछि जे एकरा सभकेँ किछु छुआ सकैयक । सिनेमा देखबाक तँ सबनो नहि देखल जा सकैत अछि ।' पति अपन आर्थिक विपन्नता में दुखी होइत बजलाह ।

—'नहि, सिनेमा नहि । आगा लोकनि एकरा सभकेँ कतहुँ तेहन मनलभू टाम भऽ नदरैत ।' पत्नी कहलखिन । पतिकेँ ई किनार नीरु नमजनि आ बलि पड़लाह । आमा कात बला सङ्क पर । ओ लोकनि खलज आ रहल रहलनि ।

बच्चा सम आकलन आ हवाला छड । बसैत-बसैत पत्नीक चप्पलक जोठा बला समझा टुटि कऽ खसि पड़ल ओ पदरकेँ चिचिआ-धिधिया कऽ चलत लगलाह । ओ प्रकाश करैत छलीह जे पतिकेँ पता नहि चलनि । ओ गुनगुन चलि रहल छलीह । मनेसक भोजमे अपलनि जे किछु नहि खरीद पाकैथे चलि कऽ थोड़ेक काल बेसी बच्चा सभक संग । ई विचार एकाएक मोनमे अपलनि ।

—'एतेक पैस नहरमे हमरा सगैत छल जे हार अपन बहुत मोर अछि । आज एतय टुटि गेल । आइतमे हमर अपन बसो नहि अछि । सब दोसर सम थोहरा लोक । हम तँ अलग छी ।' पति फेर बजलाह दुखमें ।

—'फेर बँटू छम । सोचवैक तँ बहुत मोर अछि अपन । हम भलहि जरूरा

अपन बुझैत छलैक ओ अपन भवि भेलाह, ने धन, ने पद, ने प्रतिष्ठा-थोतीमे नहि । तँ हारे हुनका सम्बन्धीक मामलासँ पैस चुर्बटा आर की होयत ।'

—'ई टी० बी० समटा सम्बन्धकेँ छप्प बखर कऽ राखि देतैक बगिला पाँच-सात बरखमे । देखैत रहब अहाँ ।' ओ बजलाह ।

—टी० बी० किछु ! आबती अजमे एना कऽ रहल अछि । सम्बन्ध खतम होय बाक यदि टी० बी० कही छैक । ओ तँ अछि सम्बन्धीक, विचार ओकर विषय जे ओकर आर्थिक आवाजिक सुरक्षा आ मुखिया उपलब्ध करैत अछि जाहिमे बहुतो लोक ओकर इच्छा-छात्राक परिचय बाहर रहि जाइत अछि । सम्बन्धकेँ आव एहि प्रकारेँ बुझा रहल नहि तँ तफसीक आर बड़न । हम आर कष्ट काटन, हमर बच्चा हमरोमे बेसी कष्ट काटन ।'

ओ लोकनि काकोमे पहुँचि गेल नहि । ओतुका दुख देखि कऽ पति धरनी, हृदय विचित्र उल्लासमें भरि बैसनि । ओतय बहुतो रास हुनकेँ मनक मध्य-भाग अपन बच्चा छलक संग मध्य सभ कऽ रहल छल । मने कुर्बेले कपडा बला विपन्न बच्चा सब निश्चिन्त भावमें जेना रहल छल, सब खुशी छल ।

मुन्नी आ मुकेश अपने दुरक बच्चा सभक संग सेनाभ सामन । एतुका फूलक गाछ सभकेँ देखि कऽ मुख-म्यात समटा बिसरि गेल छल । दोरीकेँ बुझारमें छिड़ि-आइत कह्य लागल—'दीदी ओम्हर ओहि दिश चल ने, देख केहन गुम्हर-गुम्हर पूस छै ओम्हर ।' दीदी ओकरा सभकेँ नऽ कऽ सोहि दिश चल गेल ।

बच्चा सभकेँ एहि तरहें मुख देखि पति-पत्नी एकटा भाइ तुलिक अनुभव कयलनि एहि पार्कमे । बच्चा सभ अनुभव भऽ दीदि रहल छल, जेना रहल छल ।

ओ लोकनि बाक दिस भाँचि दोहीलनि । ओतय उपस्थित ओकर कपडा-लला देखि कऽ मोनमे एहन विश्वास होइत छलनि जे ओ समटा दिनकेँ सन परिवारक लोक अछि । एहन लोक, जे बलि नहि पहुँच छल जे अपन नहि छी । एतय सगैत छल जेना एक्केँ नामे टाक नहि भगुन बराबरिक स्थिति बला आबती अछि सम । एहि अनुभवसँ हुनका सभकेँ बड़ आश्रित भेटलनि । आज दुनु गोटे एक फात जूधिर आ मोलाभम हूनि पर सोझो-सोझो बैसल रहलनि ।

—हमरा तँ सबैत अछि पारवती जेना एखन अपन सब आहि दुनियाँमे रहैत, ओ, जाहि नहरमे रहैत ओ जाहिमे भरिसक हु दुनियाँक लोक अछि । एकटा दुनियाँक लोग बहुतो-बहुता भय घरमे अछि आ एहि दुनियाँक लोक, अपने घरमे बँध भऽ टी० बी० देखि रहल अछि आ दोसर दुनियाँमे अछि जवना सम सन लोक जे एतय पार्कमे वा एही प्रकारक, कतहुँ जाली जेबो, भारी मन लेने बाहर गयो-राग कऽ रहल अछि अपन आकलन बाक-बच्चा संग । आ एहि दुनु दुनियाँक विमोक्षण मनेक सङ्क-साक देखाइत छैक । नहि ?'

अपन कलाज्ञ 111

हमरा सम तबनसें ओहि दुनियांमे भटकि रहल छलहुं जे हमर अछिए नहि ।
हमर दुनियां तें ई अछि — हमर लोक ई लोकनि छथि आ हमर बच्चाक संगी ई
बच्चा सब छैक जेकरा सब ओ सेवा रजल अछि ।

बच्चा सब जेताइत खोलर दिस निकलि गेल छल । गंधेय अपन स्त्रीके
आनेगने देखलनि आ दुमिपर राखल हुनकर हाथपर अपन अहिना हाथ रखैत
पुछलनि, — 'की सोचि रहल छी पार्वती ?

सोम बेसी भय गेल छल । एक-दू कऽ लोक सब पार्क सँ जा रहल छल ।
गन्धेयो बच्चा सबकेँ छोर पारलनि । ओ सम दोहैत आयल आ बड़ कुपी छल ।

ओ जेबोसँ हँसोधि कऽ निकाललनि तँ ओहिमेसँ पबहत्तरि टा पाइ महसुस-
लनि । सोमो वऽ कऽ 'नना जोर गरम' बला जा रहल छल । छोर कमलधिन । पत्नी
टोकलनि 'जे पाइ अछि तँ रखने रह । जेरो एहि मे किएक खर्च करैत छी ?'

— 'बाहू, इहो भाइ तँ हमरे एहि दुनियाक अंग छथि । हमर पाहमे हिनको
हिस्सा होइत छनि । हमरा एकरा बाँटि कऽ जयबाक चाहो । पत्नी बिहुँसलीह
जेना गंधेयक ओखि अम्हारीमे देखल आ सकैत अछि ।

— 'बच्चा सब भुखसँ अछि पार्वती ।' गन्धेय बज्जनाह नना जोर गरम बला
सब आयल आ फकड़ पड़ैत पुडिया बलबल लागल ।

जाव दुनिया बदलैत भैया

सबहुक धरे धर खँदा,

भूखले बढो ने आव रहबँदा,

पढ़ैत कुतब लेइत पढ़ैमा,

लेइने सहिर भरल छै हमर ननाबूर गरम ।

परिमल जाँरि-जाँरि दालाकेँ सभहुक हिस्सामे अदाम पड़ल होइतनि । सब
पार्कमे पानि कीजम लागल ।

औसयसँ दू किनोयोहर पयरे चलबामे बच्चा सब माकल नहि, घुणीसँ दोइल
बलल जा रहल छल आगुर-आगुर ।

मुन्नी अपन दीदीकेँ कहि रहल छल — 'आय अयना रात एतय सब छुट्टीमे
जायल करब दीदी ? आयब ने ? एतऽ हमरा दू तीम टा दोस्तो बनि गेल आइ । बाबू
आयब ने ? भौ आ पिता सभटा मुनि रहल छथियस आ आनन्द आबि रहल छलनि ।

□

इत्यादि



लेखक

□ वृत्तांत नहि

हमरा हृदयक पूरा ओजस
 हमर अपसृष्टि गर्दन पर लटकि गेल-ए ।
 हमेह ओही बिनक सँ गप्प बिक
 अस्पताल प्लास्टर कऽ देल-ए ।
 हमर जुमान छोट भाव
 भक्त कुनू मोनइत संजा-हाथ केँ
 पेट पर रखने
 हमरा सोझाँ से जाकि का ठग भऽ गेल-ए ।
 हमर मायक भार हमरा गर्दन पर
 अटकि गेल-ए ।
 हमर बेटा मोर्खत अपना शायक केन/
 जाकि सँ चिमरी उगलैत
 पड़िते-पड़िते पोछी केँ एक कान फेकि
 बिलसौका जकाँ चमकि कऽ
 भकरबात ठग भऽ गेल-ए । □